कलम रौ उस्ताद

राजस्थानी रचनावां रौ गुटकौ

लेखक

गणेसलाल व्यास 'उस्ताद'

संपादक

विजयदान देथा



साहित्य अकादेमी

Kalam Rot Ustad A selection by Vijaidan Detha of (the late) Ganeshlal Vyas *Ustad's* Rajasthani verse Sahitya Akademi New Delhi (1984) Rs 20

पैलो संस्करण १९८४

साहित्य अकादेमी

सिर मुकाम

रवीन्द्र भवन ३५ फीरोजशाह मार्ग नई दिल्ली ११० ००१

दूजा दफ्तर

ब्लाक V-बी रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम कलकत्ता ७०० ०२९

२९ एल्डाम्स रोड [दूसरी मंजिल] तेनामपेट मद्रास ६०० ०१८

१७२ मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग दादर बम्बई ४०० ०१४

मोल बीस रिपिया

छपाई

भारती प्रिण्टर्स दिल्ली ११० ०३२

उस्ताद

राजस्थानी रै इकडकी कवि 'उस्ताद' रौ जलम सवत् १९६४, चैत सुद सातम। पोकरणा बामण चद्रभाणजी ब्यास 'गुडोळजी' री गवाडी। कविता अर सगीत री कोड बाप री ओळ हाथै लाग्यौ। भणाई री छाप तौ मुळगी ई नी लागी, पण उस्ताद रै नामून री छोगौ तौ माडै बधग्यौ। चाकरी रै मिस राज मे पाये रै निमत भणाई तौ गणेमलाल तीजी-चौथी किलास मे ई फिटी कर दीवी, पण मन मतै पोथ्या बाचण रै कोड मे किणी भात री खामी नी राखी। पिताजी रै सागै मुम्बई सिधाया रेस रा घोडा ई फेरचा। सातरी असवारी सीखी। पण सागै रा मार्ग ग्यान री अखूट तिसणा रा तुरग ई बडगडा सोवड मचावै हा। भात-भात रा भाटा भाग्या तौ ई ग्यान रै उफाण उतार नी आवण दियौ। जिणरै परताप अगरेजी भासा री आट अर लकब माथै रीझ 'बॉम्बे-क्रॉनिकल' रै समचार-सम्पादक बी सी हारनीमैन उस्ताद नै आपरै पाखती काम करण रौ मौकौ दियौ। अर उस्ताद अगरेजी इक-बार गै दाछट काम करचौ। 'बॉम्बे-क्रॉनिकल' टाळ उस्ताद 'प्रिसली-इडिया' मे ई कलम घिसी। पण बैडी कलम घिसाई उस्ताद रै आखरा री काण परवाण नी ही। जोधपुर रै पाखती फिटकासणी गाव री हुवालदारी अर मारवाड रै 'नावै' ठिकाणा री कामदारी रै मजाग उस्ताद री आख्यां अेक नवौ ई चानणौ व्हियौ। सामती इन्याव अर आवस रा साम्रत परवाडा निजरा भळक्या। देस री आजादी रै धूसा री भणक समचै कमाई रा सै पपाळ छिटकाय इण अवळै-ऊजड मारग रासा फणकारी सो किणी रै पाल्या नी ढब्यौ। पछै तौ सन् १९३० रै उपरात ब्यावर, अजमेर, जाळोर, सिवाणै अर जोधपुर जेळ ऊपरा जेळ। जेळ मे समाजवाद, साम्यवाद, विकासवाद इत्याद अवखौ ग्यान माथोडा रै गळै उतारणा री आफळ परवाण वौ 'अणभणियौ' माणस 'उस्ताद' रै नाव देखता देखता चावौ व्हैगौ। सन् १९३८ मे मारवाड लोक-परिसद री थापना व्हिया उस्ताद, जैनारायणजी व्यास 'माट-साब' रै गाथै जुडग्यौ। उण वगत रै इकवारा उस्ताद आपरी कलम रौ भणौ ई कामण परचायौ। काई लेख अर काई कवितावा। कठा दर कठा बस्योडा

उस्ताद रा गीत कानी-कानी अलख जगावण लागा। मेवट वैडा ई समरथ जोधारा भरोसै सन् १६४७ मे आजादी आया सरी। जैनारायणजी व्यास रै थोरा करघा उस्ताद राजस्थान जन-सम्रक विभाग मे नौकरी कीवी। लगोलग अट्ठारह बरस इण चाकरी मे तळीज्यो। अर २६ अक्तूबर १६६५ मे हिडक्या रै ओटावै उणरी ळळझळ सदावत सायत व्हैगी। उणरी तो झळ-झळ मिटगो, पण राजस्थानी रो करम फूटग्यो। हिन्दी, उर्दू सारू ई कम हाण नी पडी। वो राजस्थान अर राजस्थानी रो अेकल इकडकी ग्मी हो।

जीवता थका ई उस्ताद री अणूती मसा ही के वारी कवितावा म्हारै अर कोमल रै हाथा सपादन होय छपै। पण म्हारा अभाग के वारी मसा पार नी पडी। समाया पैली उस्ताद आपरी सगळी रचनावा री अमोलक वसीयत म्हनै अर कोमल नै सूपण सारू आपरै बेटा नै छेहली मुळावण देवणी ई नी पातरघा। म्है किणी प्रकासत पोथी के छप्योडी कवितावा सू ओ सग्रै त्यार नी करघो। हाथा लिख्योडा के लिखायोडा मूळ पाना सू ई अै कवितावा टीपी। सजोग री बात के इण सग्रै री घणकरी कवितावा 'जन-कवि उस्ताद' म छपी। पण म्है अेक ई आकडी इण सकलन मे भेळी नी कीवी, जिण री मूळ रचना म्हारै पाखती नी ही। मिळाण अवस छप्योडी रचनावा अर पोथ्या सू करघो। कुठोड पीड अर सुमरोजी वेद, कवता नाज अर सको आवै के 'जनकवि उस्ताद' तकात छप्योडै पोथी-पानडा हदभात खोटा। समझ अर छपाई री खोटा। अरथ रो अनरथ व्हे जैडी खोटा। पण मूळ कवितावा सू मिळाया टाळ वारै सुद्ध सरूप रो वेरो घणो दोरो पडै। म्है उस्ताद रै दोनू बेटा—इन्दर प्रकास अर ब्रजमोहन रो अणूतो जस मानू के वै कवता पाण भजेज उस्ताद री सै रचनावा जरूरत परवाण म्हनै कोड सू सभळाय दी। आ म्हारी सिरै अर अखूट हेमाणी है।

चिरजीव विनय जैन रो हदभात गुण मानू के वो इण पोथी रो डोळ-बणाव कोड-मोद सू सारघो। जिण लाग, मैणत अर उछाव सू मन लगाय वगत इनायत करघो, वो फगत उणनै ई छाजै।

सपादक

विगत :

कविता

मुखडौ

'उस्ताद' मायँ लिखण सारू कलम उठावता ईं सिरँपोत री वा जूनी ओळू, बीजळी ज्यू सळावा भरँ। आख्या मीच् तो पळकँ। आख्या खोलू तो भळकँ। सन् १९४० के ४१ रै लगैटगै री बात। कदास सातवी क्लास मे भणतौ। डी आर. सरमा री हाट सू पोथी वपरावण खातर खाथी-खाथी चालतौ हो। सोजतिये दरवाजै रै माय मैला गाडी री पटरिया लाघता ईं अेक गोरा-निछोर मोट्यार री खर-खर गळ काना भणकी

जागण रौ दिन आयौ साथिया, जागण रौ दिन आयौ

आखती-पाखती चार-पाचेक छिडा विछडया मिनख ऊभा उणरै साम्ही टग-टग जोवै हा। आपरी मस्ताई मे हाथा रा फटकारा देवतौ वौ अेकलौ ई अेकण ठौड ऊभौ आकरी ढाळ मे गावतौ हौ। इक्लगी धौळी धोती। धौळौ ई कुडतौ। बटण खुल्योडा। लाबौ अर पतळौ डील। तीखौ नाक। जगती आख्या। काथी बतरीमी। म्हैं बगनो व्हियोडो उणरै पतळै होठा मीट गडाय निरखण लागौ। सूता वेलिया नै जगावण खातर वकार री झळ चालू ही। तर-तर भीड बधण लागी।

अणछक जगजगता कोया नै घुमाय वौ मोट्यार ओळू-दोळू भीड कानी भाळयौ। तठा उपरात गावतौ गावतौ ई ध्रकै बधण लागौ अर लारै भीड ई टुळवण लागी। साचाणी, अबै तौ जागण री वेळा-पुळ आयगी। जद अैडौ कामणगारौ आज धौळै-वेपार जगावण नै आयौ तो जाग्या ईं सरसी। औ डकै री चोट जगावै तौ गाडी ऊध मे घोरावण वाळा ई खमखरी खाय जागैला। अवस जागैला। कविता री कडिया रै ओळावै उणरै मूडै जाणै खीरा झरता हा

अब तरवारा मोटी हुयगी, घोडा ठाकर वेच दिया
मोटर सू कवळौ तन पडग्यौ, दारू जतर खेंच लिया
रणबका राडा चित लागा, गुरगा काम जमायौ
मरदारा राज गमायौ, साथिया जागण रौ दिन आयौ

मिनखा रा अडवडता रेला जुड्या लाठौ जलूस वणग्यौ। लवूरा भरती झळ रै उनमान उणरी वाणी चालू ही। जलूस रौ थट लगौलग वधतौ जावै हौ। के इत्ता मे अणछक 'पुलिस-पुलिस' री सळवळ सुणीजी। भीड कानी-कानी विखरगी। राज रा सवार पाधरा उण मोटचार रै पाखती पूगा। किडकिडिया चावनै ढवण री सानी कीवी। पण वौ तौ आपरी धुन मे ई मगन हौ। वौ किणरी सुणै ? वौ तौ सूता मिनखा सारू अलख जगावण नै नीसरचौ हौ

> वरावरी रौ आज जमानौ, कुण छोटौ नै कुण मोटौ
> दो हाथा री खाय मजूरी, वौ निकमा सू नित मोटौ

ज्या निकमा-निठाला सारू उणरी वकार ही, वारा स्यामभगत हाजरिया उणनै अबोनौ राखण सारू खपिया। कोई उणरी वाहूडौ झाल्यौ। कोई उणरा लटिया अपडचा। तगतगाय अेक तागा मे माडै न्हाक्यौ। सगळा असवार रीठा री गळाई उणरै दौळा व्हैगा। कोई माई रौ लाल उणरी हिमायती करण सारू धकै नी वध्यौ। पण उणरै दाझतै गळा री वाणी अवखी वेळा मे ई उणरौ साढौ नी छिटकायौ। वत्ती पाण लागी।

अणगिण हाथा रै विचाळै देखता-देखता राज रा सवार उणनै हाका-धाका धीगाणै आपरै साथै लेयग्या। वौ सूता मिनखा नै अलख जगावण री जुगत कीवी पण वै सोरै-सास जागणिया कद हा ! वै आप-आपरी ठौड झेरा खावता रह्या अर राज रा प्यादा उणनै माडै अपडनै लेग्या। होळै-होळै उणरी वकार ई हवा मे विलायगी—जागण रौ दिन आयौ साथिया, जागण रौ दिन आयौ।

पण हाल तौ झिलमाझिल काळी-बोळी रात ही। सूरज ऊगण मे हाल खासी वेळा ही। दिन ऊग्या तडकै मतै ई लोग जागैला। उण मोटचार रै अदीठ व्हिया लोगा री पलका उघडी। गळगळी गुरपुर सुणीजी—उस्ताद नै अपड लेग्या, उस्ताद नै अपड लेग्या।

पण उस्ताद तौ अपडीजण रै हेवा हौ। उण सारू वा जोखा री नवादी वात नी ही। उणरै तौ अलख जगावण री आखडी ही। जेळ तौ उण खातर स्यारू धामा विचै घणी सिरै ही। वौ जेळ मे मुगत हौ अर वारै पेंखडीज्योडौ। उण जनकवि री वाढाळी किणी रौ डाण नी मानती—नी ठाकर-ठेठरा रौ, नी राव-उमरावा रौ, नी रण बका रौ, नी अगरेजा रौ, नी धरम-धजिया रौ अर नी ईस्वर-परमेस्वर रौ।

आज तौ गळि-गळियारै नेता अडवडै। पण वा दिना सूरज री किरणा, मोंघ्योडा ई दोरा लाधता। आज रा नेता तौ फूल-माळावा वधाइजै, कूकू गुलाला वूरीजै। वारै काना जैजैकारा रा रीठ उडै। पीवण नै अपटा दूध-मळाई। खावण नै घवसा माखण-मिसरी। सोवण नै गदरा। भोगण नै नी नी व्है जैडा अमोलक भोग। ओळू-दोळू अणगिण अपछरावा चवर डुळावै। रूपाळी डावडिया गीता

हुलरावै । आरी मसा परवाणै सूरज चदरमा ऊगै अर आथै । बिरखा वसत यारी सानी समचै नाचै । पण वा दिना नेताजी री ठौड़ दस नवरिया मे नाव दरज व्हैतो। वै फिटोळ, ब्रोवाडिया, नागा अर रळेट वाजता । माथै जरवा री फटकारा उडती । लटिया ताणीजता । गेडिया भागीजती । धुर-धुर री धुरकारा । धौळी टोपी देख्या लोग पूठ फोरता । आसरौ देवता मौत आवती । आज तो नतावा रै चरणा लोग पलका बिछावै, पण वा दिना मुणतौ जको ई कानो लेवतौ । गावड खुजावतौ अर नीचै भाळतौ । वगत-वगत री माळ । दिनमाना रौ काळ सुगाळ ।

ओखाणै ई कथीजै के दो तौ माटी रा ई भूडा व्हे । इण नौ-कूटी मारवाड रौ भख लेवण ,सारू वा दिना दो अपरबळी डाकी अर डैण राचता हा । दोना रौ माहौमाह गळजोडौ । अेक डाकी तौ ही देसी राजा अर दूजो डैण हो परदेमी अगरेज । नौ-कूटी मारवाड री रैयत माथै दोनू राखसा री रगावग जीभा लपलपावती ही । चात्रग छळगारौ अगरेज राणा, महाराणा, उमराव, राजा अर नबावा रै पडदै आपरौ थाट बधावणी चावतौ अर वै मूछाळा मारू गोरा री छतरछीया तळै आपरौ ठागौ नेगम चालू राखणी चावता । आपरौ स्वारथ पोखण सारू अडिये-वडिये दोन् अेक दूजा री सहाय करता । गळजोडौ अमर राखण सारू अणहूता वळाप करता । जोधाणै रै सिरै गढ वा दो धणिया री आकस अर गाव-गाव नै ढाणी-ढपाणी मदछकिया ठाकर-ठेठरा री पावडै पावडै धणियाप । अलेखू ऊखळा बिचाळै माथौ, पछै झिगदीजण मे खामी ई किसी ही ! काल-पिरसू री औ नूवौ इतिहास आज तौ दत-कथा ज्यू लखावै, पण वा दिना तौ आ इज चरड-घाणी चालती ही । अणगिण लाठा तळ क्चिरीजिया किमौ तिल साबत रैवतौ ? अेक दूजा सू डयाळ दोनू डाकिया स् पडपण सारू जको ई आपरै आपै खपतौ, जूझळ दरसावतौ, वौ जूझार हौ ।

वा गिणिया जूझारा मे उस्ताद रौ ई अेक अमर नाव । समझण जोग समझ वापरिया उण जूझारू कवि रै आगै फगत दो ई काम सिरै हा—जेळ सू छूट्या पाछौ अलख जगावणौ अर अलख जगाया पाछौ जेळ । नागौरी गैणा[बेडी-हथकडी] री झणकारा उण री नडी-नडी नाचती । सचळौ रेवणौ उणरै वस री वात नी ही ।

आ जनकवि री जुग वाणी
आ कदै न चुप रह जाणी
कोई लाख जतन कर हारै
वा समचै साच सुणाणी

कवि री काया रै वरदान उणरै कठा जनता री जुगवाणी उफण्या ई सरती । आपरी कुबाण भला वा कद छोडती ! वा तौ चोट लाग्या पळापळ चमकै । निरणै पेटा भळाभळ दमकै । वा तौ कठ मसोसिया गरजै । झाळा बिचाळै सरसै । उस्ताद नै

किणी रै अदीठ हाथा बाळण जागडी अैडी ई गुटकी मिळी ही। जिण गुटकी रै परताप समझ वावडघा वौ जौवियो जितै ई आपरी घत अर आपरी कालाई नी छोडी।

किणी घर-गवाडी वेटो जलमै तौ थाळ घुरै। वधाई रौ गुळ वेंचीजै। कुटम रै सालम मापुरस री गुटकी दिरीजै कै वधती उमर परवाणै वौ सदगुण सीखै। भणै गुणै। सातरी कमाई करै। बडेरा रौ जस वधावै। मडी-माळिया चुणावै। गैणौ गाठौ घडावै। घी खाड जीमै अर नित चीवणी आगळिया चळू करै। आपरौ घर भलौ अर आपरौ कडूवौ भलौ। पाधरै मारग जावै अर पाधरै मारग आवै। सुख री नीद सूवै अर सुख री नीद जागै। दूजा री कळझळ सू काई तल्लो मल्लो। आपरी खाचौ नै आपरी ताणौ। जिणरी टाकी माथी वैमै, मा ई उडावै। न्यारा घर ज्यारा न्यारा बारणा। मरै मा ई बळै। जीवै सो धूपटा मचावै। आप-आपरा करम फळै। दूजा रै हाथा नी माथौ लागै नी कारी। अै ई वडेरा रा अमोलक बोल अर आ ई सापुरसा री सदा सुहागण सीख। इण आदू अर खरी सीख सू टळै अर ऊजड चालै वौ कपूत अर कुमाणस।

छपन्ना काळ रै आठ बरसा उपरात सवत १६६४ री चेत सुद सातम नै पोकरणा रै घरै चदरभाण व्यास री गवाडी अेक अैडा ई कपूत अर कुमाणस छोरू री जलम व्हियौ। थाळा री खणझणाट गाजी। नाव काढीज्यो गणेसलाल व्यास। पण आपरै गुणा परवाण उस्ताद रै नाव वाजिदो व्हियौ। सगीत अर काव्य री लकब वाबल री ओळ उणरै अतस सावरी। वा दिना भणाई रौ धूसौ बाजतौ। हाथोहाथ राज री चाकरी अर राज म पासौ। गणेसलाल ई भणण सारू पाटी वरतौ झाल्यौ। पण घर गिरस्त रै खबोच्या रा उण डेडरा नै ठेठ बाळपणै ई अथाग समदर रौ राम जाणै कीकर झमको पड्यो क उण आदू छीलरिये उणरौ जीव अमूझण लागौ। तद वौ डेडरौ अेक नवा ई सुर म डरडाटा करण लागौ के इण खबोच्या म सुख सू जीवणा बिचै समदर रै हिबोळा डूबणौ घणौ वत्तौ अर घणौ सिरै। राज री जडिया उखेलण वाळा कुमाणस नै भला राज रै सीर सू कद सताख व्हैतौ। पछै राज री पोसाळा उण भणाई रौ काई म्यानौ? कदास तीजी, चौथी के पाचवी पोथी भणता ई वा गुणकारी भणाई वौ फिटी कीवी। मन उगटघा नाक री डाडी तणौ आदू धूम मारग छोडणौ तौ हाथ री बात ही पण मन जाण्यौ नवौ मारग सोधणौ सैल काम नी हो। काची ऊमर अर कवळी समझ। ठेठ आतरै मुमई जाय घुडसवारी सीखण सारू मन डुळायौ। पण घाडा री पूठा तणौ औ वेग उणनै ठाये ठिकाणै कदास ई पुगावै। उणरौ तौ मारग ई दूजौ हो। उणरी तौ मजल ई दूजी ही। नामी सवारी सीख्या उपरात वौ घोडा री पूठ छिटकाई। पाछौ वौ ई पोकरणा रौ वास अर पाछी वा ई हथाई। पण ताखडा तोडतौ उणरौ अचपळौ मन किणी अेक खूटै बधणी नी चावतौ हो। तठा उपरात वौ गोरौ निछोर, फबतौ फूठरौ मोटचार आपरै कवळै हाथा घणा ई भाटा भाग्या। इदौर जाय मील

मे मजूरी कीवी । रेलवाई री चाकरी चढचौ । मोटरा री रीडरी मे आख्या फाडी । फिटकासणी रै गाव हवालदारपणौ अर नाणै रै ठिकाणै कामदारपणौ ई करचौ । प्रिसली इडिया अर वार्बै नोनिकल रै छापा हद-भात घोटा घुमाया । इकबारी हुनर री हठोटी सीखी ।

भात-भात रा भाटा भाग्या, समझ वापरणा रै समचै अेक जगमगतौ उजास उणरै हीयै नित-हमेस झबूका भरतौ के गोरा री गुलामी रा पेंखडा तौ आपरै हाथा ईं तोड वगावणा पडसी । देसी रजवाडा अर परदेसी गोरा रै दोवडै दावणा, फगत आप-आपरै सुख सायत री वात सोचणौ तौ मोटौ जुलम है । इम मरम रौ अेलम होवता ई उणनै आपरै पगा चालण सारू मारग मिळग्यौ । मजल री सोय व्हैगी । पण मजल ताई पुगावण वाळौ वौ मारग अणूतौ ऊजड, अबखौ अर सूळा पायरचोडौ । पण गुलामा नै तौ इणी अबखै मारग चाल्या आजादी री मजल हाथै लागै । दूजी कोई डाडी नी ही । अेक ई मारग अर अेक ई मजल ही । अर उण मजल ताई पूगण सारू उण जनकवि री जुगवाणी मे फगत अेक ई मुळावण ही

आजादी रै बाग नै जूझार पसीनौ पाजौ रे

सिर साटै जद मतीरा ई दोरा हाथै लागै तद आजादी रौ तौ वैडौ सपनौ ई कठै पडचौ हौ ! इण खातर उस्ताद री तौ पैली अर छेहली वकार ही—सिर सोदै री साख सपूता, पूरी किण विध होसी सूता । गळी-गळी सू अैडी वकार दर वकार सुण्या आजादी रा सूरमा वद सचळा रैवता

लोही सू नदिया कर राती-सूरा नर न्हावै छै काती

पण मारवाड रै दोवडै दावणा इण अबखै मारग सिरैपोत हालणौ हदभात दूभर हौ, इण खातर पगा नै हेवा करण सारू मारवाड रै काठै ब्यावर अर अजमेर रौ रणखेत की ढाळै हौ । सन् १९२८ के २९ रै पाहै उस्ताद अजमेर री गळिया आजादी रौ बाकियौ बजायौ । उठै केई घायल अेकठ होय धमाल मचावण मडग्या । गोरा रौ आघण उकळण लागौ । वा सूरमा सारू जेळ री सीली ओवरिया टाळ दूजौ वासौ ई किसौ हौ ! जेळ अर दमन रै आक्स सूरमा रौ मेळौ तर तर वधण लागौ ।

पोसाळा री गुणकारी भणाई छाडचा उस्ताद रै ग्यान री तिमणा वत्ती चेतन व्ही । ग्यान रै उजास टाळ अधारौ नी लोपै । अर काळै-बोळै अधारै थका कठै ई की नी सूझै । नी आजादी रौ मारग अर नी आजादी री मजल । ग्यान रै आखरा टाळ आतम-सगतौ नी साचरै । जेळा री धिधकती ओवरिया रै परताप ई उस्ताद रौ अतस ग्यान री ऊची उडाणा भरतौ । वौ दिन-दिन हर धक्नै सूरज की न की वत्तौ आजाद होवण ढूकौ । कालेजा री भणाई विचै उस्ताद नै जेळा रै लेवडा राज-

स्थानी, हिंदी, उडदू अर अगरेजी रौ घणौ वेमी ग्यान ह्वियौ। च्यारू भासावा माथै उणरी सारीसी धणियाप ही। सबद अर भासा तौ मतै चनायनै उणरी हाजरी साजता। आपरी लिगन री हूस जेळा रै मगसै चानणै वौ विक्टर ह्यूगौ, वाल्तेयर, रूसौ, कारलाइल, हीगल, मारक्स एजिल्स, लेनिन, गोरकी अर ब्रेग्त इत्याद प्रचड लेखका री पोथिया रौ आखर-आखर पपोळ लियौ। पोथिया रौ सार जडाव री जात उणरै हिवडै जडग्यौ। साहित्य, इतिहास, अरथ सास्तर, राजनीति अर तत्व-ग्यान तौ जाणै उस्ताद री सरणौ ई झाल लियौ व्है। उण रै जाणिया गुणिया वारौ महातम सवायौ वधग्यौ। साथै रा बेलिया नै काई अजमेर, काई सिवाणै काई जाळौर अर काई जोधपुर वौ गूढ पाथिया रौ मरम दाछट समझावतौ। जैनारायण जी व्यास धुराधुर रै गरळै ग्यान खळकावतौ, इणी खातर उणरौ उस्ताद नाव पड्यौ। पछै तौ अेक ई नाव अर अेक ई बतळावण—उस्ताद अर उस्ताद। अर खुदोखुद टीपणा रै नाव री ठौड जदकद कवितावा म वौ उस्ताद नाव री छाप देवतौ। कवितावा रै हेटै खुद आपरै हाथा लिखनौ—उस्ताद री कलम सू। कैंडौ ई धुरधर विद्वान उणनै उस्ताद रै नाव बतळाया पूरौ मादीजतौ। पण म्हाटा उस्ताद नै कदै ई इण बतळावण सू गुमज नी ह्वियौ। वा ई थिरता वा ई लुळताई, वौ ई सालसपणौ अर वा ई ग्यान री अमिट तिसणा। लिछमी रौ धुरकारचोडौ उस्ताद मुरसत रौ अणूतौ लाडकौ हौ। धन-मपत रै मापै वौ निपट कगलौ ग्यान, विद्या अर कविता रौ इकडकौ कुबेर हौ।

समजीवी इकवारनवीस रै आगै वौ आगरा री सडका ई खासी भली मापी। पण अेकण ठौड रपनै जीवणौ तौ वौ जाणतौ ई नी हौ। आपरी जलम भाम मे धूणी जगाया टाळ चानणौ नी व्है। सेवट री बाजी सन् १९३८ म आगरै री जमना रौ वासौ छिटकाय वौ पाछौ जोधाणै आय धमक्यौ। मारवाड हितकारिणी सभा, 'नवयुवक मडळ' अर 'मारवाड लोक परिसद रै जत्था स्री जैनारायण व्यास अर उस्ताद रै सागै आजादी रा सूरमा कानी-कानी घमरोळ मचावता। ठाकर-ठेठरा अर राजावा रौ दारू उतरण ढूकौ। गारा रौ काळजौ फडका चढण लागौ। ठिकाणै ठिकाणै गळी गळिया रा उस्ताद रा गीत जणा-जणा रै कठा गूजण लागा के रजवाडा रौ डोळ कोरी छोरा रोळ है। धन धरती रा आ धाडेतिया सू डरण री अगै ई जरूत कोनी। अै सगळाई अण-घड टोळ है। सगळी सरम पगात्य न्हाक राळी है। आ मदछकिया रा जतर दारू खेंच लीधा है। यारी भोटी अर काटीज्योडी पात्या सू डरपो मती। खेत खळा स वाढेत्या लेयनै झडपौ। गिणती रा तिणका है। हाकरता चुगलौ। टाग माथै टाग धरनै सूवणिया अै माह धरती माथै अणूता बाझ है। आनै थड्डौ देय अळगा गुडावौ। आ सूम-सेठिया अर आ रळियार राजविया रै परताप हाल ताई अगरेजा री सान बच्योडी है। जडा मूळ स् उखाड फेंकौ। अवै तौ आ धाडविया रै धूड-माजनै न्हाकण सारू फगत मूठी रेत चाहीजै। आरौ औ इज

भाजनौ है अर इत्तौ इज भाजनौ है। उस्ताद रै गीता री घोखा परभात फेरचा रे मिस गूंजण लागी

घूघूकारौ मच्यौ जगत मे, जना भाखर धूजै
मोट्यारी घर मच्यौ उछाळौ, बूढा नै कुण बूझै
औ परिडै घुळग्यौ घोळ, साथी काचौ टिकै न झोळ
वदा हिम्मत री जै बोल, बदा मैणत री जै बोल

साखा रै वदळै उस्ताद आपरी कविता रै आखरा खेत-खेत मे खीरा जगाया के सगळा पडखावुवा नै वत्तीस तेवड जीमाय थें क्यू पेट रै गाठा देय अधभूखा सूवौ ? दूजा तौ सै सपत खरचण वाळा है अर थें सपन निपजावण वाळा हौ। थारा हाथ हेम सू जडिया थका व्हैता ई थें क्यू भूखा मरौ ? ठाली निकमा, माल-मलीदा उडावै नै थारा टीगर वासी टुकडा नै तरसै। अबै तौ सोचौ रे करसा-कमतरिया के थें क्यू मुडदा सीस उचावौ, थें क्यू निकमौ बोझ उठावौ ? आळस किया पीढ्या री जमारौ विगड्यौ नै धर्म ई पीढी दर पीढी री जमारौ विगडेला। जागौ अर उछाळौ करौ। सै दुनिया री आस थारै माथै अटक्योडी है। हजूरा री वाता बिलायगी। अबै राज दातळा रौ है। अबै राज हथोडा रौ है। अबै दातळौ नै हथोडौ धन अर धरती री धणियाप करैला। अेक छोटौ गुर अबै थारै हाथै आयग्यौ के मजूरी करै उणरौ माल अर जमीं उणरी जिणरौ खडवाळ। हवा रै रेसा-रेसा औ मतर सुणीजै के बिना मजूरी जीवै वारौ खेत खपाणौ पडसी। उस्ताद रै पैली करसा अर कमगरा नै अेडी नेक अर खरी सीख देवणियौ मिळ्यौ ई कद हौ

सपत संग मजूरा री है, जमी जोतवा वाळा री
अै ईस्वर राजा देस विणज, सै ठग विदिया ठाला री

राजा, राव, उमराव, ठाकर-ठेठर अर फिरगिया विचै ई उस्ताद नै करम, धरम, ईस्वर, आतमा अर परमातमा सारू ई कम खीज नी ही। इतिहास नै मथिया उस्ताद री मथाणी फगत औ इज माखण हाथै आयौ के धरम करम अर ईस्वर रा जूना सस्कार विणमिया टाळ रजवाडी ताकत री डर नी मिटै। भाग, करम अर ईस्वर रौ जाळौ कट्या ई इण सामती अडवा री पोल निगै आवैला :

भोपा भूत सू भरमाय, भोळप धन कमायौ
बामण वद भणनै, भूत नै भगवत बणायौ
नग नग सूत्र घड, पडपच सीख्या सेवणौ रे
पग पग पूज मत, पाखड री परथै घणी रे

भात भात री आपमाळा, मिसाला अर रूपक रा दीवा झुपाय-झुपाय उस्ताद

अबूझ मानखा री आस्था घणौ ई चांनणौ करचौ। इण भरम रै भंवर-जाळ नै तोडण री सीख दीवी के भोळौ माणस तौ भाटा नै पूजै अर पीर पुजारी चढावौ जीमै। आ दिसा-मूळ पेटू भणिया नै मरचा ई आगीवाण मत वणावौ। वेपीदै पयाळा धरवाय देवैला। आ वाळणजोगडा खीरा नै मत पोखौ, अै थारै ई झूपा लाय लगावैला। धरम अर रीत-पात रा अै राज फगत टाला रा सगळा काज सुधारै। अध विस्वास, धरम अर रूढिया रा माळी-पन्ना उतार उतार वारौ काळस चौडै करचौ। आस्था मे आगळिया खसोल-खमोल परतख साच सू भेटका कराया। स्यार रा तवोडा देय सूता मानखा नै जगावण रा कळाप कीधा। घोदाय घोदाय पगा वाल करचा। ईस्वर, धरम, राजा, ठाकर अर करमा रौ ठागौ समझायौ

> पिंडतजी रा पोथी पाना, ठग विद्या रा ठागा है
> साधू पडा जग गाडै मे जुतिया माठा ढागा है
> अै ओझा अक्कल री सीरा नै, खाडै म खडकासी
> करमा री लकीरा नै, कायर सीस झुकासी
> पिण सुळझ्या सबळा नै सुभ मारग मिळ जासी

खुद उस्ताद मन माडै किणी री काण के सकौ मान्यौ तौ मान्यौ पण उणरी कलम नी किणी री काण राखी अर नी किणी सू डरी। काळस पोतणिया रै मूडै वा निसक काळस पोत्यौ। आ वात अखरै के परिवरतन, क्राति के उछाळौ बदूक री नाळ सू आवै। पण बदूका मतै ई नी चालै। कलम रा आखर बदूक चलावण वाळा हाथा नै उकसावै तद वै बदूक थामै। भूटका करै। इण खातर उस्ताद री दीठ म कलम रौ महातम हथियार सू बेसी हौ। अर उस्ताद रै हाथा ताजिंदगी औ हथियार नी छूटौ। बजोड खामचाई अर मुथराई सू वौ इण हथियार नै वरत्यौ। प्रतिबद्ध साहित्य री अैडी बानगी अर अैडी अमोलक आव बिरळी ई लाधै के बहुजन भूखौ, गिणिया खावै, धणिया नै धाडेत दबावै। धन-धरती धणियाप किणी री, कुण खोदै कुण खावै ? अडबा री भौळप, क्रोडा रौ लालच, हजारा री हाट जमावै। काम करावै करार प्रमाणै नै चहीजै उतरौ मिळ जावै। उस्ताद रै नैणा री मीट इज अैडी ही के अेक चरै चौरासी पीसै, उण घर समता किण विध दीसै ? *उस्ताद री आस्था नै फगत अेक इज परभातियौ तारौ तिरै आवतौ के धस-ढ्ढ* री धणियाप धुडिया वरगभेद री जड आपै ई कट जावैला। अबै औ अरटियौ घणा दिन नी चालै के जन रा खायक तौ खेंखारा करै अर जन रा भीडू मुडदा धीमै। *अबै आ निकमी वाता रा दिन ढळग्या*

> हुनर मजूरी निपज बधावै, निकमा लूटै खरचै खावै
> उलझै अणगिणिया रौ आडग, अणभणिया रौ आळस भागै

औघड उस्ताद रै हीयै धन-मपत सारू सपनै ई ममता नी जागी। धन तौ फगत मिनख री जरूता पोखै। पण औ इज नाकुछ धन जद अपरवठौ होय पावडे-पावडे आपरा विरतव रचावै तद अेक दिन अवस इणरी पोल उघड्या गरै

धनबळ जद जन रौ मुख चुगलै, तद आ भोम अगारा उगळै
जन भावी री भुजग भेरवी, रगत पिवै माया भख मागै
रे मोटियार! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै

औ काळ रौ अघड अगुगत हालै, पाछ पगल्या लारै सिरजण वाळा आपै ई आपरी मौत मरैला। जीवण वा हीनपुन्या नै छिटकाय आगै वधैला—आगै अर वळै आगै। उस्ताद री मोटी भुळावण ही के भाई होठैं हालौ पण आगै हालौ। लारै भाळया की साधी लागै नी। गई काल मे तत रौ लवलेस ई कोनी। पाछौ पग कुदरत सू अवळौ है। चालतौ ढवै सौ मरै। वामीसा री भोळावण, पाडै री पूछ झाल्या काम नी सरै। जकौ ई मूवा वाप रै किरणियौ तागै, उणरा टावर भीजै। पाछौ सिरकै जिणरौ हूतवाळ अखरै। जिणी माथै किरियावर कोनी। जिण नै जीवण रो लाग व्है वौ जुग रै गायै चालै। जूना जूझार विडदाया सूरापणौ नी चढै। पैला देस अर समाज नाव रौ पडपच ई कठै हौ? फगत कुळा री ममता रो नातौ हौ। माहौमाह वट-वढता। भूत नै घोख्या भावी रौ पाठ याद नी व्है। वडेरा रै जूनै मारग गडारा पडगी, नवै पथ रा पग-मडणा माडौ। वडेरा नै चितार्‌या के वारा वखाण करया नवी पीढी रौ आगाण नी वधै। काल रै सूरज आज उजास कठै? लटघोडौ लाटौ घडी घडी नी लटै। वीतयोडे सूरज उस्ताद नै कदै ई उजास निगै नी आयौ। उणरी निजर सदावत उगूण री रातौड साम्ही तवयोडी रैवती। रात रै काळै-वोळै अधारै ई उणनै झळ दिस कानी परझळतौ उजास निगै आवतौ। उण उजास अर उण रातौड रौ वौ घणौ ई विडद वखाणियौ। लाल धजा री घगी ई आण-दुआई घमकाई। डावै मारग [वाम-पथ] धकै वधण सारू वौ कलम री डाग लोगा नै घणा ई उछेर्‌या—आगै—आगै अर वळै आगै। उस्ताद री कवितावा मे आगै रौ अरथ फगत औ इज हौ के इणी डावै मारगियै धकै हाल्या मनचीती मजल पगल्या चापैला। हा, इणी डावै मारगियै केळ झवूकै, फूल हसै अर सूरज आपरी किरणा रै स्वारै पथ उजाळै। पण स्तालिन रै फोत व्हिया ख्रुस्चेव रै मूडै इण सूरज रै उजास रौ जको काळम उघडयौ उण सू घणा ई बुझागडा री आख्या बूरीजगी। उगूण दिस री रातौड सगसी लखावण लागी। वा दिना म्हारै अर कोमल माथै उस्ताद रौ जीव अणहूतौ हौ। घणी ई वाता-विगता व्हैती। काव्य अर साहित्य री चरचा हालती। ख्रुस्चेव रै धमाकै केई वजर काना रा कीडा झडग्या। केई वजर माया भवग्या। म्है चित-वायरा होय उस्ताद नै पूछ्यौ औ काई व्हियौ उस्ताद?

उण वेळा पीजरै रोडचोडा मिथ री गळाई, इक्लगी पछियौ पळेट्या उस्ताद कमरा में अठी उठी मार चकारा देवतौ हो। उण सू अेक ठौड जम्यौ नी रैईजतौ। हालता-हालता उणनै केई वाता उपजती। आ उणरी जूनी धत ही। पण उण दिन हाली री खथावळ आकरी अर वत्ती ही। आख्या री रातौड मेर रै ग्रीरा ज्यू जगती लखाई। अवस भाग रौ लूदो मापै सू ववणो के तिवणो जमायौ व्हैला। सूदी तणा अेक ऊडा निस्कारा रै उपरात उम्ताद हालतौ-हालतौ ई बोल्यौ—आज तौ इणरो पड़ूत्तर म्हारै पाखनी ई कोनी। वगत री समझ ई सबसू सिरै अर निकेवळी व्है। थोडौ नेहचौ राखौ। गिदळचोडौ पाणी वगत परवाण अवस नितरैला।

'पाणी नितरै वळै काई, पाणी तौ उतरग्यौ। आगै-आगै वधता सेवट इण मारग अर इण मजल रा अै परवाडा उघडया ! वळै कठा लग आगै उछराला ?'

उम्ताद रै पतळै होठा अेक झीणी मुळक साचरी। कैवण लागौ—इण मारग अर मजल री कठै ई माठ नी है। औ मारग नी माम्बी थावै अर नी पकिंग। आगै री मजल तौ अनत है। साचाणी, इण राज री रगत अेडी नी जाणी ही ! पण वगत री ठोकरा जद जार रौ राज ई नी टिक्यौ तौ अै राज ई गर्पिदा पावैला। आगै हालणो तौ 'समझ' रौ धरम है।

पण आगै लारै री गोय व्है कीकर ? कठै ई आगै रै भरम-भरम दिहावळौ मानखौ साव ऊजड ई तौ नी भम्वै ? केई दिना उपरात आ सरा उम्नाद रै निरमळ हीयै घाण-मथाण रा घिराळा भरती सेवट कविता रै आखरा इण भात परगट व्ही .

अरे बुझागड
थारा जतर जोनम अणुक्रम
कोरी फाड उधेड वेंतणी, कम सीणौ है
जग लखग्यौ पिंडताई री परथै पोची, पीदै तीणौ है

कोरी अक्कल सू घमरोळ माडण वाळा निक्मा-ठाला री उस्ताद रै अतस तुम जित्तौ ई मोल नी हौ। हीरा होमण वाळा अर मिरतू रै भोग लगावण वाळा वूझागडा सारू उणरी दीठ अगै ई कुरब-कायदो नी हौ। वौ सदावत थोथा बुझागडा री खिखरा उडाई।

उस्ताद री प्रतिबद्ध कविता री सबसू मोगी मगती अर सिरै गुण औ इज हौ के वौ सीख, सदेम अर चेतावणी रौ समचौ पैला आपोआप सारू पछै खलका खातर। वौ कविता नै पैला आपरै आचरण मे वरतौ अर भली भात पतवाण्या उपरात पछै उणरी सिरजणा कीवी। जद आपरी सीख रै मारग आपरा पग ई नी हालै तद दूजौ कुण उण मारग आडो लेय धकै वधैला। जात पात, ऊच-नीच री थोथी झाटी नी कूटतौ। आपरी सीख मुजब वैडो ई हालौ हालतौ। जद इज तौ

पुराण-पथी पोकरणा बामणा री गवाडी जलम लेय वौ दूजी जात में वा दिना गाजा-बाजा ब्याव रचायौ, ज्या दिना वैंडी सपनौ आयोडौ ई खोटौ हौ।

राजनीति में सदावत अगवाणी व्हैता थका ई ऊंचा पद अर नामून सारु वौ सपनै ई हर नी करतौ। जीवतौ रैवण सारु जीवण रौ जुगाड तौ हर मानखा रै निमन व्हैणौ चाईजै। उणसू वेमी री लालसा छूत री मादगी है। उस्ताद नै तौ आपरै आगै जकौ फरज निभावणौ हौ, वौ निभाया ई सतोख व्हैतौ। फरज री लीक सू टळणौ उणरै वस री बात नी ही।

अक्ल रौ हदभात उजागर व्हैता थका ई उस्ताद नैं जीवियौ जित्तै कदै ई आ बात समझ में नी आई के लोग-बाग धन-सपत जोडण सारु क्यू इत्ता कळाप करै? झापळिया भरै। सचै व्हियोडी सपत नै चोरी मानण वाळौ उस्ताद कदै ई सपत वधावण खातर मन नी डुळायौ अर नी वैंडी ममता जगाई। फगत जरूता पोखण खातर ई नाणा री दरकार। उण सू वेसी उणरौ फुनरवा जित्तौ ई महातम कोनी। उस्ताद कवीर री गळाई औघड माणस अर औघड कवि हौ।

वौ सदावत इण बात सारु इचरज करतौ के लोग-बाग वित्त-मवेसी वधावण सारु अफाळा करै। माया जोडण खातर अस्टपौर धुडै, सत्ता सारु पडपच पाळै अर ऊचा ओहदा खातर तिकडम करै पण भूल-चूक सू ई उणनै कोई अैडौ मिनख नी मिळ्यौ जकौ अक्ल वधावण री चावना राखै। हर कोई समझवान बिचै धनवान वणण सारु ताखडा तोडै। अगारै समाज धनवती सगळै पूजवाण पण समझवाण री कठै ई पूछ कोनी—औ वैंडी विवेक अर आ कैडी व्यवस्था। समझ री परख फगत धन-सपत रै परवाण। पण उस्ताद री कविता मे तौ उस्ताद रौ विवेक हौ। उस्ताद री व्यवस्था ही। ठौड-ठौड उणरी कविता मे धनवती धाडेतिया सू ई माडा अर धन री जोरावरी सबसू माडी जोरावरी। इण री अतकाळ अखरै। सुथरी समझ रौ उजास उगरै आखरा-आखरा जगमगै। माया सपत सारु तौ वौ पूरौ सतोखी हौ पण समझ रै वधापा खातर उणनै कदै ई सतोख नी व्हियौ। उणरी तौ घडी-घडी आ इज मुळावण ही के भई सोच समझनै हालौ। जगत मे सार चीज फगत समझ है। सुध-बुध रौ सूरज ई सबसू सानरौ सूरज है।

समझ अर अक्ल री अस्टपौर ढोल घुरावणिया उस्ताद री निजर मे मिनखा-देह री मैंणत अर हाथ रै हुनर रौ मोल ई कम नी हौ। मिनख रौ परसेवौ ई उणरी दीठ साचैला मोती हा। लिछमी नै प्यारौ फगत पुरसारथ। हाथ बिना आखी दुनिया री चाळचोळ मे आवगी हडताळ ई पड जावै। मिनख री मरजाद फगत मैंणत अर मैंणत। जकौ ई दो हाथा री मजूरी खावै वौ निकमा सू नित मोटौ। दो हाथा री मजूरी ई सबसू सिरै रतन अर हेमाणी है। उस्ताद रै सबद कोस में कामधेण रौ अरथ ई मिनख री मजूरी हौ। रत आयोडी रेत नैं फगत पुरसारथ ई वाल्हौ व्है—उस्ताद री फगत आ इज अमोलक सीख ही। वीरता री ठौड मैंणत

नै विडदावण वाळो वो नवो चारण हो। रगत फुहारा री ठौड पसीना रै टपका रौ महातम समझावणियो वो पैलो गरु हो।

सूता लोगा नै जगावण खातर उस्ताद घणा ई लालरिया लिया। तरळा तोड्या। वो ऊघता अवूझ लोगा नै वकार-वकार नै कैंवतो के वानै जीवण री गरज व्है तौ जागै। क्णी माथै क्रियावर रौ ठोसो कोनी। मौत मोटी ऊघ अर ऊघ मौत रौ छीलर सरूप। ऊध री आख्या हमेस अधारौ व्है। जाग्या अधारा में ई को न की सूझै। जागण रो दूजो नाव ई उजास है। कबीर अर उस्ताद री मीट जागण री सारीसौ महातम हो।

सुखिया सब ससार है, खावै अर सोवै
दुखिया दास कबीर है, जागै अर रोवै

कबीर अर उस्ताद रै जागण मे वगत रौ फेर हो। जे कबीर री वेळा-पुळ उस्ताद जलमतौ तौ वो दूजौ कबीर व्हैतौ अर उस्ताद री वेळा-पुळ जलमिया कबीर दूजौ उस्ताद व्हैतौ। आपरी नींद खुल्या वो ई उस्ताद री गळाई लोगा नै जगावण सारू पाछ नी राखतो के जीणो व्है तो जागो रे भाया। अलोक ऊघ्या मौत सू साम्हेळो व्हैला। सुणो अर भचकै जागो, नवजुग रा नोवत-नगारा घुरै। जाग्योडा जन-जीवण री तौ बात ई न्यारी

जाग्योडो जन जीवण मागै, क्सणा मिनख मिजाजी

जको जीवै जागै वो उछाळै चढै। सूवै सो बिछावणै मरै। अर जाग्योडो जन-बळ अकासा तीणो पाडै। अग्यान रौ धूधाड हटता ई इलम उछाळै आवै। पलका खुल्योडो मानखो जूनी गडारा भागै अर नवा पग-मडणा माडै। सतगरवा री गळाई उस्ताद मानी मे नी समझाय डाकै रै धडिगै वकारै के घर मजला बधतो जा सागै, हेर नवी पगडाडी आगै।

अेकल मिनख री सगती माथै उस्ताद नै अगै ई विस्वास नी हो। उणरै भरोसा री ताण मघ, समूह, समाज अर देस माथै टिक्योडी ही। अेक छाट भला ई कित्ती ई मोटी व्हो, वा रेत मे रळ जावै। अेक छाट मे नदी रौ वेग कद समावै? छाटा रौ अेकण सागै रीठ पडै जद नदिया रा गैगाट उडै। समदरा रौ पेटो भरीजै। छाट सू छाट जुड्या सगती सावरै। उस्ताद इणी समूह-सगती रौ उपासक हो। अेक सू अेक रै जोडै जुत्या इग्यारै व्है।

अडवा री अक्कल लाखा नै उपजै तौ सारा नै पथ बतावै।

गिणिया मिनखा री मूडौ नी भाळ उस्ताद अणगिणत री पूरौ लेखौ जाणतौ हो। उलळै अणगिणिया रौ आडग तौ अणभणिया रौ आळस भागै।

अेकल मिनख रा दो हाथ भलाई राजा रा व्हो के भलाई ईस्वर रा, वै घणा हाया मूं मिंडिया हारे। याकैं। उस्ताद रौ खराखरी डिढ विस्वास हौ

कोड मिनख हळ हाथ धरै जद, बजर मथीजै उगळै फैण

भेळप अर भाईचारा वास्तै ई उस्ताद आपरी कविता मे जाणै जित्तौ सख पूरयौ के भेळप रा भाग मोटा। भाईचारा मे ई सपत अर लिछमी रौ वासौ। समता रौ ससार भरयौ-तरयौ रैवै। भेळा री हुकार सुण्या धरती धूजै। आभा री सीवण उधडै। फूट गी तौ सपनौ आसा ई करम फूटै।

लारला अर धकला जीवण मे उस्ताद री अणै ई आस्था नी ही। परगत जीवण खातर तौ उणरौ पग पावडै प्रणाम हौ। पण पूरबला जलम री गागरत मे आपरौ थूक ई बिरथा गमावणी नी चावतौ। इण भव री तौ उणसूं अेक ई बात अछानी नी ही, पण उण भव री बात तौ ऊठी जठा सूं ई झूठी। जीवै सौ जुग री गत जाणै।

विकास अर अनुभव री कडी दर कडी जुडया ई मिनख समाज री साबळ तर तर बधै।

ग्रथि ग्रथि के अनुभव धन मे, पूरित इस युग का आचल है
सोने का युग तो आगे है, युग मानव का वेग प्रबल है

भौतिकवादी दीठ री हिमायती व्हैता थका ई उस्ताद किणी भात री थिरता री थान थापणी नी चावतौ। वौ परिवरतन रौ धाक्ड पुजारी हौ—सदावद परि-वरतन साचौ, भाग नही जीवण नै बाचौ।

नवै विचारा नै अगेजता थका इ उस्ताद मे कट्टरपणा रौ लवलेस ई नी हौ। भावना रौ कट्टर व्हैता थका ई वौ विचारा रौ कट्टर नी हौ। लाल धजा री आण फेरता-फेरता ई जद उणरौ रग मगमौ पडण ढूकौ तद आ बात कैवण मे ई वौ राव-रत्ती सकौ नी खायौ के मिनख पूजणी लत रौ पडग्यौ, मारक्सवाद मे थाणौ। सूत्रवाद रौ धूसौ सुणता ई वौ पुरजोर सबदा मे कह्यौ के बध्यौ है सूत्रवाद रौ सोर। लगतौ अग खटतौ ई अेक हिन्दी रौ नमूनौ वळै

मार्क्सवाद यदि महाभूत का गतिवाहन है
विधि विधान मे जीवन का पथ निर्माता है
तो कवि तुम से आज हमारा प्रश्न गहन है
मार्क्सवाद क्यो आतम हनन के पथ जाता है

जिण घत अर तरग मे जकौ भामा बखडी मे आ जातौ, उण मे कविता रा आखर दाछट खळकता वेवता, जाणै भाखर सूं झरणौ ढळयौ। भलाई राजस्थानी

कमगर मुगत कमाऊ गारी
विग री सरत, किण री क्यारी
गाडी किण री, किणी सागडी
कुंया जणसी करण कवारी
आ मरवण कुंती सरमिष्ठा
जीवैं है, पाखाण नही है

अबै आ मगती किणी रै लारै आयोडी नी गिणीजै। आ आपोआप री पूरण इकाई है। मेहदी राच्यै हाथा हृदभान मैणत करणी जाणै। आपरै पगा कमाई करै। जद-कद टेम मिळै, पूरख सू रमलै। निरख-परख अर चावनै आपरो जीवण साथी चुणै। अबै जुग माथै है, सूरज माथै है अर चरणा तळै अवचळ धरती री अनत मुक्ळाई है, पछै किणरो डर अर किणरी डाण ? जे राम सीता री है तौ सीता राम री है। अगन-परख रौ गचळको काढता ई मरजादा री घर हाकरता धूड भेळो। माहौमाह अेक दूजा माथै विस्वास करया ई साथ निभैला। मर्दा के देस री खुडको व्हियाे राम, राम रै मनै अर सीता, सीता रै मनै। किणी रै माथै किणी री धणियाप कोनी। मरद-लुगाई रै तोल जोख मारू अबै अेक ई पायली अर अेक ई भरण व्हैला। जे समदर किणी मसीणै तुलै तौ आज री सगत्या किणी मसीणै तुलै ! आभै री बीजळिया किणी वधणै वधै तौ अै सगत्या अबै किणी वधोकडो मे वधै ! जे सळावा भरती बीज किणी अेक खूटै बाधी चरै तौ अै अचपळी दामणिया अेक खूटै अर अेक ठाण ऊभी चरै ! कोसा दर कोसा झाळा रा लबूरा भरती क्राति री लाय कनाता ताण्या बख मे आवै तौ अै मरवण-कुंतिया किण रै झाली झिलै ? अै तौ यू ई कवारी करण जिणती घूमर रमैला।

समदर तोलै झाळ कनातै
वा अक्कल जासी अणखातै
अणुजुग री कमतरणी मरवण
चांद उडै के चरखौ कातै
बीजळिया नै बाथ राखनै
वै वधणा, वै ठाण नही है
काचा कूकया ताण नही है
बीती उण म प्राण नही है

अबै आ बीज किणी पोट म नी बधै। आभै उडती आ कुरजा माथै किणी रै धोबा धूळ नी न्हाकीजै। औरता री आजादी रौ अैडौ जबर आगीवाण तौ दूजो लाध्या ई पतियारौ व्है। औरत नै फगत प्रीत अर रळिया रौ खुणखुणियौ समझण

वाळा प्रेमी जकी वाहेली री अलका मे अळूझण अर उणरी पलका मे लुकण टाळ दूजी कोई गागरत नी जाणे वाने उस्ताद काई ठीमर, ठावो अर मीठो ओळवो दियो

अलका मे उलझेगा कैसे ?
क्रातिकाल है नाश चाहिए, मिट जाने की प्यास चाहिए
सर्वनाश स पीछे हट कर, जीवन का रस लेगा कैसे
अलको मे उलझेगा कैसे

उस अलको वाली से कह दे, चुबन नही बाह का बल दे
आधा अग अचेतन होगा, आधे अग लडेगा कैसे
अलको मे उलझेगा कैसे

उठो समय से कदम मिलाओ, दोनो मिलकर बढते जाओ
युग की प्रसव वेदना के क्षण, केवल प्यार चलेगा कैसे
अलको मे उलझेगा कैमे

हिन्दी रा छायावादी कवि आपरी गैळीगती आख्या उवाड धोरा रै इण आक वेजडा री छीया नौ निरखै के इणरी कैडी अर काई चानणी है ? इण पार, उण पार अर मझधारा गुचळकिया खावण वाळा आळजजाळी कविया नै कैडी सातरी सानी मे समझाया

क्यो बहू चढी मझधारो मे, क्यो अटकू पडे किनारो मे
जब पार महोदधि करना है, क्यो ढूढू बल पतवारो मे

जाग्रत जीवित मानव का मन, अनवरत उदित बढता यौवन
है चक्र इसी जीवन रथ के, क्या बाटू इन्हे प्रकारो मे

दो जुगा रै साधा विचाळै जोबन रै जोग विजोग, प्रेम, चुबन, आलिंगन अर चितवन री राडी-रोवणी अरै ई नी रोय उस्ताद जोबन री कैडी मरजाद बताई

पौरुष को भूचाल चाहिए, काल नही तत्काल चाहिए
विद्युत किरणा के आरोही यौवन को स्वरताल चाहिए

निसाणा री आख टाळ, जिण भात उरजण नै आपरै आखती-पाखती अर ऊपर-नीचै दूजो की निगै नी आयो, उणी भात उस्ताद नै रजवाडा री दोवडी गुलामी टाळ नी सुख, नी आणद, नी मौज, नी प्रेम, नी अलका, नी चुबन, नी

आलिगन, नी मझधार, नी फूल अर नी वमत की निगै नी आवती। आजादी अर फगत आजादी टाळ वो सैं की भूरयोडो हो। अर इण भात सैं की भूरया ई निसाणै तीर सधै।

उस्ताद रै उनमान अलख जगावणिया अनेखू 'नरसिंघा' रै परताप गाव-गाव रै वाडा-फ्ळा लाय चेतन व्ही तो गोरा रौ करार पिघळण ढूकौ। राव-उमराव, राणा, महाराणा अर नवावा रै माथै रौ छतर पिघळता ई वारी सैं जवराई ढोळै बैठगी। जुग पसवाडो लीन्हौ। बदळाव रा वाक्या वाजण लागा। भेळप रा भाग जागा। झिर-मिर झिर-मिर अत आभौ पावस्यौ। देस री लगाम देसवासिया रै हाथा। अवै किण वात री खामी अर खोट। जुग-जुगातर री गुलामी विणस्या आजादी रा नोवत-नगारा चौडै-धाडै वाजण लागा—धडिग-धडिग। अणगिण जागती आख्या रौ सपनौ सपूरण व्हियौ। उस्ताद नै ई इणी सपना री उडीक ही। आख्या री जोत सुफळ व्ही। अवै तो—जन रौ धन, जन रौ पुरमारथ, जन री सेंग भनाई है। अवै तो हाकरता—मारग सवळा सट वण जासी। दुख-दाळद भागैला। आभै नवा वधाऊ दौडण लागा। दूधा समद भरीजैला। वखिया फाड अन-धन निपजैला। जन रौ जीवण सवैला। नवै जुग रा नवा भागीरथ दुख दाळद रै थळ सुख री गगा लावैला। वूटै-वूटै अधारौ विणसैला। ठौड-ठौड परझळतो सूरज दीपैला। आजादी रौ चानणौ अैडो इज व्है! हाट-चोवटै, गळि-गळियारा अर चानण-चौक आजादी रौ धूसौ वाज्यौ पण वाज्यौ। नाचण वाळै पगा कीडिया चेंटण लागी। *आप-आपरै पगा री तासीर। आप-आपरी समझ रौ फेर। नोबत* नगारा रै डाकै धमाधम नाचणिया, लोगा री निजरा चढग्या अर आजादी रा सूरमा टग-टग जोवता रहग्या। उण धमचक रै विचाळै ई उस्ताद रै नैणा नवी *समझ साचरी।* अर उण नवी समझ रै समचै ई जागती आख्या रै सपना रौ पोखाळौ व्हैगो। उस्ताद री गळगळी वाणी रौ मतै ई सुर बदळग्यौ

दरप देखनै, दरद दव्योडो फूट पड्यौ, जद भरग्या नैण
किसी खाड री कोर ले आया, सेंग मुलक नै म्हारा सैंण

'सैण' सबद रौ अैडो प्रयोग तो किणी रै वैरी-दोखिया सारू ई नोज व्है। साचाणी, औ तो राज करणिया लोगा रौ रग बदळचौ पण राज री रगत नी वदळी। पूजी रै पजा रगत चूसणिया कोरा-मोरा हाथ बदळया। निधणिका माथै धन-वळ रौ हान वो ई ठोसौ अर ठौर। धन री धींगाई धुडी कठै? अगरेजा रै सिधाया सूम-सेठिया नेगम आपरी हाट जमाई। काई सोच्यौ अर काई व्हियौ

गुनामी सू छूटी मुलक री जवानी
किसी पाळ चढता, किसी ढाळ ढळगी

पण उस्ताद नै तौ जिण पाळ चढणौ हौ, उणी पाळ चढतौ रह्यौ। किणी दूजी ढाळ नी ढळ्यौ। वाहेला रै घडी-घडी समझाया आपरै आजाद मुनक री चाकरी सारू वौ राजी तौ व्हियौ पण नवी सुध-बुध रौ नवौ चानणौ व्हिया उणनै आ बात अडेरी घणी ई लागी। मन माडै री चाकरी आज छोडू काल छोडू करता-करता ई वौ सोळै वरस इण चरखी मे फदचोडौ रह्यौ। नी रह्या झरयौ अर नी छोड्या सर्यौ। भरम रौ भीवगोटौ तौ बदळाव री धमचक ढबता ई मिटग्यौ हौ। माथा रौ मोड तौ माथै ई सोहै अर पगा री जूतिया पगा मे ई छाजै। लरडी माथै ऊन नी गोरा छोडी अर नी काळा छोडणी चावै। आजादी रौ सूरज तौ ऊगौ पण परकास रौ अतौ-पतौ ई कोनी। कुण जाणै कठी विलायग्यौ ? जकौ वरदान काना सुणीजै, आख्या नी दीसै वौ कैडौ-काई सुख लावै !

अमर जोत मे कीडा पडग्या, जन मारग अधरावण लागौ
अजर कळप रा पाना झडग्या, जन जीवण मुरझावण लागौ

राज री रगत नी बदळी तौ काई, उस्ताद री वाणी अर समझ तौ ठांवै ही। कवि रै जमारै उणनै तौ आपरौ फरज निभावणौ ई हौ। आजादी रै नोबत-नगारै नाचण वाळा पगा रौ गसकौ देखता पाण जुगवाणी रौ सुर बदळग्यौ। राग बदळगी। वा नी किणी री आंकस मान्यौ अर नी मानै। सिंघा री दहाडा ई जद नी डरपी तद स्याळ मिन्ना रै घोरका आ कद डरपण वाळी

आ जनकवि री जुगवाणी
आ कदै न चुप रह जाणी
कोई लाख जतन कर हारै
वा समचै साच सुणाणी

धरती माथै सूवणियौ क्यू साकड भीडौ भुगतै ! ममझ री सेजौ फूट्या उपरात कैडौ सकौ ! आजादी रौ सूरज तौ भला ऊग्यौ, पण दरसण सारू दूखता नैणा नै उजास रा दरसण कठै व्हिया ? वारी ओरिया तौ उणी भात अधारौ है ! उस्ताद रै आळावै अणगिण कठा अेक नवौ ई सवाल खदबदावण लागौ

इण दिस पडी न सुख री छाई, राज बदळग्यौ म्हानै काई

इण सवाल रै आखरा ई इणरौ पडूत्तर के देस रा गिणिया ऊजळ धोनधा अणगिण मानखा साथै घात करग्या। आजादी रै नाव फगत आजादी री रामत माडी। उणरौ उजास नवा धींग-धाडविया रै कोठारा अडाणै पड्यौ कचवचै। आ कैडी आजादी आई ? पूत-पितर मे छिनाळौ मच्यौ अर चारू दिस बरबादी छाई। बध-बध भरम री वाता उफण्या मरम हदी चोट कद लागै ! निजर-नारदा रा अै

नित नवा-नवा नेग ! धरम-धज परमिट-पथिया रा अै पळक्ता तेग ! कुण कैवै ब्याव भूडौ ! मामा री ब्याव नै मा पुरसगारी, जीमो बेटा रात अधारी। जबर रळियार-रासौ मच्यौ। सूखा काठ डूबै अर तिकडम रा सैंतीर तिरै। मूढ मिनख पिंडता नै हाकै अर कळावत नै भाड उछेरै। अपराधी न्याव करै अर भोळी जनता कठघरै ऊभी। सूरज गळग्यौ अर अधारौ जीतग्यौ। ठग राजी पण जन रौ मन सीजै। आखौ लोक लडचौ पण जात पुजीजै ! आ धवळी टोपी तौ जबरी धूळ उडाई। काई औ दिन देखण सारू ई उन्मादी देस-भगत मैंत-मैंत आपरा सिर दीन्हा? *काई इणी आस री खातर वै सतग्यानी साधक सूळ्या !* वै रजथानी रिडमल रुळचा। सैं बुगला आज बापू रै नाव पळै। कोड्या कचन कमावै। जलम री बाझ गोदचा पूत रमावै अर सात-सपूता री मा अस्टपौर हीजरै। पल-पल उडीकता ज्या सपना सारू इतरा दिन देस रा सपूत तडफा तोडता हा, वै इण रूळै राज मे सडण लागा। घोर खाचणिया रै माथै मुगट छाजै अर जका आफळ-आफळ आथडिया वै अछूत बाजै। अस्टपौर अरट खडण वाळा रै खाधी आयगी, तिरस री दाझ बारा गळा दाझै अर निक्मा-ठाला दोनू टक सापडै नै बिना तिरस माडै इमरत खळकावै। पण उस्ताद री जागती आख्या वळै सपनौ साचरचौ के सेवट री बाजी औ इन्याव ई उथलैला। तिकडम रा ताणा तूटैला। डोकरिया रै नाव री ढाल कितरा दिन ढाकाढूमौ ढाकैला। अबै ई चेतौ। ढोलक रै समचै नाचता ढबौ। निक्रमा पून मत पसारौ। लोभ रै मिस साचाणी रतन गिटग्या तौ खराखरी जीव सू जावौला। न्हाया सौ ई पुन्न विचारौ। घणा दोडचा घरै पधारौ। दिन आथमग्यौ अबै रावळी रामत सावटौ तौ आछौ। बिरथा भाखर-वळती रौ क्यू इचरज लावौ ! थारै पगा लाय लागी, धावौ तौ धावौ। जुगवाणी रै आखरा ढोल री पोल खोल्या ई जनकवि नै नेहचौ व्हियौ। जरवा सू नी दबी तद बुचकारचा क्द दवती !

मेवट उस्ताद रा आखर फळचा। उणरा बोल चवडै आया। धवळी टोपी रा चारू धाम देखता-देखता घुडग्या। उण उथलधडा मे नी जबरौ वच्यौ अर नी झीणौ। पण जूना ओखाणा सोरै-मास झूठा नी व्है। भूत मरै अर पलीत जागै। फगत टोपिया रौ रग बदळचौ, वारी रगत नी बदळी। फगत रावळिया बदळया पण रामत उण सू ई माडी। औ ढोल उण सू ई पोलौ। पण आ भगवी अर राती टोपिया री धूळ उडावणियौ अर इण ढोल री पोल खोलणियौ आज कठै ? इण नवा रळियार-रासा री सिरजणा सारू म्हारै काळजै तीन खामिया भूडै ढाळै रडकै— पैली खामी उस्ताद री, दूजी खामी उस्ताद री अर तीजी खामी उस्ताद री। कित्ता बरसा सू उस्ताद रौ पाट हाल ताई सूनौ, साव सूनौ लखावै ! कठै ई म्हारी मीट मोळी तौ नी पडगी। पण म्हारी मीट रौ म्हनै पूरमपूर पतियारौ है। उण पाटै बैठण वाळा पूतळा सारू साढी तीन हाथ रै खोळचै पूणी चार हाथ रौ काळजौ चाहीजै !

वौ उस्ताद रौ ई काळजौ हौ जकौ उणरै साथै ई बिलायग्यौ। वौ काळजौ आपरै खपता आपरै फरज किणी भात री की खामी नी राखी तौ अपा ई उण काळजिया नै बेरणी ज्यू बीधण मे किणी भात री कठै ई की कोताई नी बरती। चाकरी री अस्टपौर तळतळावण अर छीजत ! पावियौ राजेन्द्रसक्र भट्ट निदेसक रै गुमेज उणनै मणाबद तळियौ। की काम-धाम नी करण देवतौ। नी नी व्है जैडी अणहूती खोडीलाया। उस्ताद आपरै बेली मत्रिया नै घणा ई प्रतिवेदन खरडिया पण वारै काना जू तकात नी सळवळी। कवितावा बिचै ई प्रतिवेदना म उस्ताद घणो बेसी वगत खपायौ। चाकरी री चरडधाणी वाळौ तौ अेक दूजौ ई भारत हौ। *जकी पगार राज सू मिळती वा विद्या अर लोक-कळा माथै ई खरच व्है जाती।* बजार री उधार उस्ताद जीवियौ जित्तै ई नी मिटी। वाच्या दुख रै सागै इचरज ई कम नी व्हैला के हाल ताई उणरा डीकरा बच्योडा लेहणा रौ भरणौ भरै। *अेक वेळी रै कागद मे उस्ताद आपरो विखो दरसावता लिख्यौ के कळा, साहित्य* अर चाकरी रै पेटै नूटीज्या उपरात ई म्हारी कविता नी लूटीजी। म्हारो ओ ई मोटो ध्यावस है।

तुम सत्ता से मरने का मार्ग बनाते हो
मैं मिटकर जन का, जीवन मत्र सिखा सकता हू
तुम जीते हो मरने के भय का भार लिये
मैं कोटि कठ से, जीवन गीत सुना सकता हू

जका चेला-चाटिया रै मूडै आपरै 'उस्ताद' री बतळावण थूक सूखतो, वै देखता-देखता सिघासण रा गदरा रगदोळण मडिया सो उणरै 'राडी-रोवणा' री की गिनरत ई नी कीवी। इण डाम री चरडको उणरै काळजै जीवियौ जित्तै ठाडो नी व्हियौ। वो पितूर सेवट मरणा रै उपरात ई उस्ताद रै भेळौ दागीज्यौ। मेक्सिम गोरकी, मायाकुवस्की अर बरतोल्ड ब्रेख्त रै जोड रा खोळिया री म्हा अगै ई गिनरत नी कीवी, माळ-सभाळ तौ मोटी बात। आखौ समाज अमर बेल ज्यू उण माथै पायरघोडी रह्यौ पण वौ तौ आपरी धुन अर धत मे ई सदावत मगन हौ।

समझे कुछ, मैं क्यो जीता हू
अमृतमय हू, विष पीता हू
पथ सीधा है, चक्र नहीं है
धरा फोड कर जल पीता हू

सत्ताधारिया रै छळ प्रपच अर पाखड नै भाडतौ थकौ उस्ताद समाज रै निरमाण अर विकास सारू गीत अर निरत-रूपक ई घासा लिख्या। रिमझिम, बावतरो, जाझरको, राधो, धरती-उतरण रै सागै बधाऊडा जैडो खातीलो ख्याल

उस्ताद री कलम सू रचीज्यो। जिण नै अलेखू मिनख देखनै जाणै जित्ता मोदीज्या। वधाऊडो राजस्थानी साहित्य मे एक नवी अर अबोट भेंट ही। राजस्थान रै जूनै ख्याल चदरमेण अर अमरसिंघ राठोड री लक्ब रै सागै पेरिस नै इटली रै आंपेरा री मरोड। आ दोना रै मेळ उस्ताद रा 'निरत-गीत-नाटक' अेक नवौ सरूप लेय साम्ही आया। वधाऊडा मे खेती रै हाडतोड कदीमी हलीला नै विग्यान री नवी हठोटिया रै ढाळै पजावणा री सीख है। गीता री धुना वाणी अर साखिया री ढाळ व्हैता थका ई नवी लखावै। उस्ताद नै जूनी धुना री पूजती जाणकारी ही। परपरा रै साथै नवी रचना सिरजण री उस्ताद रै पेरवा अेक हदभात हठोटी ही।

साहित्य अेक अैंडी कळा है, जिणरी रचना रौ आवगो माध्यम बोल-चाल री भासा ई है। पण साहित्य मे, खासकर कविता मे वरतीज्या भासा फगत भासा ई नी रैवै। की न की इदक वण जावै। अर कविता मे भासा रौ औ इदक-पणो ई उणरी खरी कसौटी है। कविता मे रमीज्या सबद आपरो कदीमी आपो उतार अेक नवा ई रस अर मरम रै निमत वणै। कविता मे सबदा रै माय अरथ नी व्है,सबदा रै पाण अरथ झापीजै। ऊचा अर अमर कविया री भात उस्ताद री कविता रौ औ ई सिरै गुण के वौ सबदा रै मार झिवाळ नी करनै, सबदा रै पाण आपरौ अतस दरसायौ। उणरी कविता मे जडिया उपरात वा कदीमी सबदा रौ सरूप ई वदळग्यौ

नखता नेड वसासा ढाणी। वधै बीजळी कद गुदडी मे। भूमडळ रा वखिया फाटै। पाणी मू पक्वान है। हिलमिळ हुळस पसीनौ मेळ। हिलमिळ हरख री दे हात। भुज-भेळप सू वमै उजाड। भेळौ भुजवळ वध क्टावै। वास लडग्या, वळै डूगर। झकाळचा री वक्झक वणी आज गीता। झिरमिर आभौ पावसै। तारा री पडताळ। रग-रग रगत उछाळा खावै। धरती धीणो है। कपडौ कीणो है। उद्बुद वाता। निवळा-नाथणी। मील-मुसायव। जीवण झोलौ। चढी उछाळै। जळ-जीवण जिजमान। अन-धीणै धनवान। रगत फुहारा ऊर सरवर। मरचोडी पूत जिणै कोनी। गिटिया सू रतन गळै कोनी। भात-भात रा रतन जडाव उस्ताद री कविता मे जगमगै।

उस्ताद रै सुभाव अर उणरी कविता रौ निकळक खरापणौ के दोनू ई निपट अबोट हा। भेळ अर दोगलापणौ कोसा आतरै। घट मे सौ ई मूडै अर पेटै सौ ई आखरा। उघाडो भाड हो, कैडा ई धीग रै मूडै-मूड पाधरी खळकाय देतौ। धरम अर ईस्वर सू ई नी डरचौ जको मिनख-वदा सू काई डरतौ। मिनख रै खोळियै उणनै मिनख रौ साचेलौ उणियारौ मिळचौ, इण खातर दिखावटी वेवला लगावण री उणनै कदै ई जरूत नी पडी।

उस्ताद रै सुभाव री अेक इदकाई वळै न्यारी इज ही। ढळती ऊमर, माथै चादी रौ राळौ तौ अवस पाथरग्यौ पण उणरौ अतस विगत वरसा रौ मसाण नी बण्यौ। आपरै आपा मुजब जीवण रा सै खेडा उणरै हिवडै कायम हा। इणी

खातर वौ टावरा भेळौ अबूझ टाबर, मोटचारा भेळौ मोटचार, कविया भेळौ कवि, विद्वाना भेळौ विद्वान अर गिंवारा भेळौ गिवार हौ। जिणरौ जैडौ ठरकौ अर माजनौ व्हैतौ उणनै उस्ताद रै ओळावै आपरी वैडी ई छिव निगै आवती। वौ पैला मिनख हौ, पछै की दूजौ हौ। इण खातर वौ कैडा ई मिनखा रै भेळौ रळमिळ जातौ। हद भात लुळताई व्हैता थका ई वौ झुकणौ कदै ई नी जाण्यौ। नी उणरी बकनाळ कदैई खोळी व्ही अर नी उणरै विचारा रै कदै ई सूळी लाग्यौ। पण अनत कुदरत अर भान-भात री अणगिण भावनावा सू पूठ फोर उस्ताद राजस्थानी कविता नै छळ-प्रपची नेता अर पाखडी सत्ताधारिया रै कूडाळिया सू बारै नी जावण दी। आ अडिग प्रतिबद्धता ई उणरी लाठी सगती अर कमजोरी दोनू ही। उणरी कविता फरेवी अर लबाळी नेतावा रौ खेरौ नी छोडयौ। छेकड अेक दिन म्है अर कोमल हीमत करनै खराखरी कह्यौ—उस्ताद, अबै आ उजल-धोलचा वाहेला नै विसरावौ। इण सू वेसी आपरी कलम सारू आ मे तत कोनी। आपरै आखरा री मरजाद घणी लाठी है। केई नवा चाद अर केई नवा सूरज हेरणा है। जैपर छोड गाव चालौ। अठा सू वीटा गोळ करौ, नीतर औ फितूर आपरी लारौ नीं छोडै।

उस्ताद कमरा मे चकारा देवतौ रह्यौ। लारै बालाजोडी मारचोडी। मुळकतौ थकौ बोल्यौ—हा, अबै वीटा गोळ करचोडा ई समझौ। गाव आयौ क आयौ। जे चार-पाच महीना साथै रैवण रौ उकरास जुडग्यौ तौ म्हनै पूरौ विस्वास है के म्हारी कविता कठै री कठै पूग जावैला। इस्तीफौ दियोडौ है। मजूर व्हैता ई पाधरौ बोरन्दै। पूरी तेवडली।

पण किणी अदीठ तेवडण वाळा रै तौ की दूजी ई तेवडचोडी ही। अेक इस्तीफौ अेडौ व्है के किणी रै बिना दिया ई लप अजाण्यौ कबूल व्है जावै। उस्ताद रै आचौ अत इज घणौ हौ। नेठाव रौ तौ ककको-केवडौ ई नी जाणतौ। हिडकिया री सुइया सात ई लगाई, बाकी सारू आहळाणौ करचौ। पण अठै किणी रै हीया री हुरडाई नी चालै। राजस्थान सरकार सू पैली मौटा राज रौ फरमाण आयग्यौ। सुणता ई आखै राजस्थान जागै पटकी पडी। २९ अक्टूबर १९६५, सूरज री उगाळी जागै ऊगता पाण ई सूरज आथमग्यौ। रात माथै रात उलळगी। उस्ताद आपरी आदत परवाण मरण मे ई आचौ करग्यौ। जीवियौ जित्तै मरण सारू पावडै पावडै जूझ्यौ अर मरचा आखरा री खोळ अमर व्हैगौ। कविता री कडिया उणरौ रूं-रूं दीपै। राजस्थानी कविता उणरी कलम रौ परस पाय अमर सुहागण व्हैगी। उणरी कविता मे जडचा अलेखू सबद उण पैनी नी तौ किणी कवि री कलम बरतीज्या अर नी सोरै-सास धकै ई बरतीजै। बोल-चाल री वाणी रौ रमतौ आसण छोड अेडा अणगिण सबद उस्ताद री कविता रै घुर पाटै जमग्या अर जमता ई वारै कदीमी सरूप रौ अरथ अर वारी ओळख ई वदळगी।

डीगळ रै डोगर हीडै जुद्ध, वीरता, धरम अर भगती घणी ई माल्ही—नी

नी व्है जेंडो अवधी अर अवळी ठौड । गिगन रै गोरवं अर सूरज रै मोडै । उस्ताद राजस्थांनी रौ पैलौ अर छेहलो कवि हो जकौ जुद्ध, वीरता, धरम, भगती अर प्रेम रा जूना मिणिया छिटकाय आपरै आखरा नवा अमोलक मोती वींध्या—मैणत रा, परसेवा रा, समझ रा, समता रा अर भेळप रा। वीर नायका री ठौड करसा, कमगर, कामेतण अर मजूरा नै ढोल-डमका रै डावं वधाया अर विडदाया। वारो जस गायो। ठाकर-ठेठर, राव-उमराव अर सामना रौ उणरी कलम कुजरवौ ई कुजस कीन्हो। नवा जुग री नवी कविता री अपटा-अपटा नेग चुकावणियौ वो पैलौ ई चारण हो। मरघा उपरांत, सुरग अर अपछरावां लारै धोवा धोवा धूळ उछाळ, इण जुग मान मरोड सू वो जीवण री जुगत जगाई। नवी करगत रै पैल परकारै ई राजस्थानी कविता रै अैंडी पाण लगाई कै वा किणी जुग नी उतरै अर नी वैंडी पाण वळै किणी रै हाथा लागै। उण कामणगारा री कलम रो अैंडो ई कामण हो। वो माइधा जठै ई आखरा री माठ थरपीजगी।

अेक ओळ हाल ताई म्हारै हिवडै आरौ घाल्योडी। खराखरी वरस अर मुद्दो तौ याद नी पण किणी अेक ठाणै जैपर मे अेकर लाठौ मजमौ जुड्यौ। गाव-गाव सू लोग अेकठ व्हिया। म्हारै गाव रै करसा री अेक वस ई उण ठाणै जैपर गी। मळा जैंडौ लाठौ अर जवर मळो हो। उस्ताद सू भेटवा व्हिया माहोमाह पिछाण कराई। घणकरा करसा उगरै नाव सू वाकव हा। म्है केई वळा उस्ताद री कवितावा वाचनै सुणाई ही। उण दिन साप्रत उणरा दरसण व्हिया। उस्ताद रै पड़ूत्तर मुजब वै तो दरसणा साटै दरमण हा। भिडता ई उस्ताद रै मूडै कविता सुणण री मसा दरसाई। मोठ-मरजाद तौ उणरै नेडाकर ई नी निसरी ही। अळगौ तालर जाय वौ सगळा नै कवितावा सुणाई। सगळा ई कविता सुणनै अणूता राजी व्हिया अर उस्ताद ई कविता सुणाय राजी व्हियौ। राजी व्हिया म्हारी तिसणा वत्ती चेतन व्ही। दूजै दिन सगळा ई कोडाया-कोडाया जन-सम्प्रक निदेसालय पूगा। अेक रूख री छीया तळै मडळी जमी। उस्ताद रै हिवडै रा आखर खर खर गळ सू बारै झरता हा। गाव वाळा नै आणद आयौ पण आयौ।

तेजा माराज कह्यौ—आ पुरसगारी तो जवरी। धापण री ठौड तर-त्तर वत्ती भूख जागै।

अनजी भडियार रै धाळो ई खत अर उण सू ई धोळी वत्तीमी। वावौ मुळकतौ थकौ वूझ्यौ—ओ उस्ताद अठै काई करै ?

म्है अर उस्ताद दोनू अेकण सागै जवाब दियौ—राज री नौकरी।

अनजी वावौ मूडो मस्कोर वोल्यौ—सात धोवा धूळ वगावौ इण नौकरी रै। आनै तो आज ई अपारै गाव ले चालो। कित्ता टका मिळै ?

म्हारै मूडै यू ई गचळको निकळग्यो—आठ सौक रिपिया तो मिळता ई हैला।

उस्ताद लिलाड रै हाथ लगाय कह्यौ—कठै पड्या आठ सौ ? चार सौ रपल्ली नीठ भरै पड़ै।

बाबा री आख्या ऊंची लिलाड मे चढगी। उस्ताद री हाय झाल आपरै साम्ही तगतगावतौ कैवण लागौ—थानै म्हारी सौगन। अबार ई चालौ। बस्ती नै काई भार ! आप जैडा पाच कवि खटावा तौ ई थोडी बात। आ चाकरी थानै छाजै कोनी। अबै तौ म्हा करसा भेळा ई घोटा घुमावौ। बीस बरसा रौ तौ म्है अेकलौ ई लिखत कर दू। कमाई थोडी घणी तौ सुक्यारथ लागै।

उस्ताद री आख्या जळजळी व्हैगी। गळगळा सुर मे नीठ बोलीज्यौ—आज म्हारी कविता रौ साचैलौ मोल भरपायौ। अबै म्हनै की नी चाहीजै। बिज्जी अर कोमल बरसा सू घोदावै। हूथीकौ आवूला।

बाबौ उस्ताद सू हाथ मिळाय वाचा लिया। आवरै गळै हाथ धरायौ। आज तौ दोनू ई इण ससार मे कोनी। अनजी बाबौ चार-पाचेक बरसा पैली ई देवलोक व्हियौ। अबै कुण किणनै निवतौ देवै ? उस्ताद थका वौ मिळतौ जणा ई बूझतौ के उस्ताद कद आवैला ? पण आऊ-आऊ करता थका ई उस्ताद री ठौड उस्ताद री सुणावणी आई। आकास वाणी सू। सुण्या बाबौ ई म्हारै सागै ठळाक ठळाक रोयौ। आवसिये कठा नीठ बोलीज्यौ—बिचाळै ई दगौ देयग्यौ। आपरै वाचा री थोडी घणी ई पत नी राखी। थारै उस्ताद सू अैडी आस नी ही।

आ जन कवि री जुग वांणी

आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदेह न चुप रह जाणी
काई लाख जतन कर हारै
वा समचै साच सुणाणी

कोई मार कूट धमकाई
धन कुरब धाम ललचाई
सौ जुग रा जुलमी खपग्या
इण करी नही सुणवाई
आखडिया सौ आयडिया
इण माथै धूस जमाणी
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदेह न चुप रह जाणी

जद जन रै पग वेडी ही
जनता गाडर जैडी ही
राजा री जोर जमावण
अगरेज फौज नैडी ही
जद कठै दवी जरवा सू
अब किण रै हाय दवाणी
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदेह न चुप रह जाणी

जद गोरी हुक्मत अडती
सडका पर गोळ्या झडती
जेळा मे चौखट चढिया
मोरा री खाल उधडती

पिण 'जै भारत' घुरराता
नरसिंघ जुत्योडा घाणी
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदैह न चुप रह जाणी

तरवार चली इण लारै
उण जुग जन री पौ बारै
जद इण पर जुलम जतायो
पात्या पिघळी फटकारै
धन धरती रा धाडेती
धींगाई धरी अडाणै
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदैह न चुप रह जाणी

आ चोट लग्या चमकै है
निरणा पेटा दमकै है
फाटा गाभा नै रण रा
झण्डा गिणती गमकै है
इण रा घण टावर जाणै
विपता माथै मुस्काणी
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदैह न चुप रह जाणी

आ भूला समझावैला
ऊजड खडता पालैला
पूठै, इण घडी अगाडी
हाली, हालै, हालैला।
जुग जुग इण री भावी है
सिलगाणी वळै वणाणी
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदैह न चुप रह जाणी

गायक इक दिन मिट जासी
पिण अैडा गीत बणासी

जन जन रै कठा रमसी
पीढी दर पीढी गासी
आ काया तौ कवि री है
पिण जनता री जुग वाणी
आ जन कवि री जुग वाणी
आ कदैई न चुप रह जाणी
कोई लाख जतन कर हारै
आ समचै साच सुणासी

अरे बुझागड़ !

अरे बुझागड !
थारा जतर जोनस अणुबम
कोरी फाड उधेड कैतणी, कम सींणी है
जग लखग्यो पिंडताई री परचै पोची, पींदै तीणी है

अरे मानखा !
इण जुग जीवण री गत वेगी
पिण क्यू डिगभिग थारा पगल्या, मन हीणी है
डरप मती, दो हाथ मजूरी कामधेण, धरती धीणी है

अरे सूरमा !
जुग झाटक री धमक सुणी जद
घर क्यू न्हाटै, कमर खुली क्यू, रग खीणी है
भिचक मती, जीवण सारू पग-पग लडणी मरणी जीणी है

अरे जवानी !
नर नारी री नस क्यू निवगी
लाल रगत री गरमी निठगी, सुर झीणी है
भूल मती, इमरत पैली सागर मथणी है, विस पीणी है

अरे सुगायक !
नवें मिनख रै मादै सुर में
जन मैणत री राग सुणा, जद परवीणो है
उळझ मती, जन रै जीवण में साचो धन, कपडो वीणो है

अरे वुझागड !
थारा जतर जोतस अणुग्रम
कोरी फाड उधेड वैतणो, कम सीणो है
जग लखग्यो पिंडताई री परचै पोची, पीदै तीणो है

३१ १ १९५९

काका ! कूक्यां कांण नही है !

काका ! कूक्या काण नही है
बीती उण मे प्राण नही है
जाग्ये जुग जोबन री निजरा
ओ जीवण रामाण नही है

अगन परख री उदबुद वाता
जुग रळग्या, सुणता समझाता
सैस जुगा मतवती सीता
डूब गई मरजाद निभाता
अणुबळ मुगत समै री सगत्या
अब इतरी अणजाण नही है
काका ! कूक्या काण नही है
बीती उण मे प्राण नही है

साथै हाथ कमाता खाता
सुख दुख सरखो भार+ वटाता
कद कुरजा पर धूड करैली
भुज मैणत सू* बचती राता

+भाग
*रण खेतां सू

दपतर मील सीव रा डेरा
सेजा सज्या मसाण नहीं है
काका ! कूक्या काण नहीं है
वीती उण मे प्राण नहीं है

समदर तोलै झाळ कनातै
वा अक्कल जासी अणखातै
अणुजुग री कमतरणी मरवण
चाद उडै के चरखो कातै
वीजळिया नै बाध राखलै
थै वधणा वे ठाण नही है
काका ! कूक्या काण नही है
वीती उण मे प्राण नही है

इण जुग नारी आप इकाई
करडी मैणत करै कमाई
टैम मिळै पूरख सू रमलै
निरख परख नै करै सगाई
नर नारी री नेह समरपण
मितर पढ्यो प्रमाण नही है
काका ! कूक्या काण नही है
वीती उण मे प्राण नही है

कमगर मुगत कमाऊ नारी
किण री मपत किण री क्यारी
गाडी किण री किसो सागडी
कुत्या जणसी करण कवारी
आ मरवण वुती सरमिस्ठा
जीवै है पाखाण नहीं है
काका ! कूक्या काण नही है
वीती उण मे प्राण नही है

कळ ट्रेक्टर खडता हळ व्हाता
करडा दिवस रगीली राता
भगी भीड आपडती रमनी
मरवण पळमी वेल [illegible]

इण जुग 'स्वाहा' मिढ सुद्ध है
माथै पर सैनाण नही है
काका ! कूक्या काण नही है
वीती उण मे प्राण नही है

आ सीता वो राम वरैला
जो पूरौ विसवास करैला
जिण पुळ साजन परख मागली
मरजादा रौ घर बिखरैला
जुग माथै पग धरती धण रै
तन पर नर री डाण नही है
काका ! कूक्या काण नही है
वीती उण म प्राण नही है

१० ५ ६३

मजला ढाण धकै पग मेल

मजला ढाण धकै पग मेल, चोट पडै हसतै मुख झेल
गेंद वणा विधना रा भाखर, होणी री छाती पर खेल

आ आभै तक्ती मोग्चारी, आ सखरी काया सुध सारी
धणी तात सी तणती नाडा, तप्यौ रगत तिरसी रण क्यारी
ठोकर दे होणी नै कहसी, मारग रा पाखाण उथेल
मजला ढाण धकै पग मेल, चोट पडै हसतै मुख झल

तन साजौ पुरसारथ जागै, जद उमगा बुध मगळ मागै
मन व्याज वधणा सू छूटा, जुग रौ जोवन वधसी आगै
जोत जगैली पण जावन रौ, तातौ रगत वणैला तेल
मजला ढाण धकै पग मेल, चोट पडै हसतै मुख झेल

परगत पथै सग असवारी, सेता सायण पिलगा प्यारी
नर सागै चदरमा चढसी, कमगर मुगत कमाऊ नारी
करसी भरसी नै खुल रमसी, तन मन वधणा अळगा मेल
मजला ढाण धकै पग मेल, चोट पडै हसतै मुख झेल

ऊवड खावड सडक अजाणी, सेंजोड़ै बधसी जिंदगाणी
तडफडतौ जाग्यौ जुग-जोबन, नखता नेड बसासी ढाणी
भू बधणा रा तार तूटसी, जीवण नवी बणासी गेल
मजला ढाण धकै पग मेल, चोट पडै हसतै मुख झेल

पाखण्ड री परधै घणी रे !

धग धग धूज मत, दो हाथ रे धन रा धणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परधै घणी रे

भोपा भाड भौळप भारखड री लख सवाळी
निबळा नाथणी, जूना जुगा मे चाल चाली
रग रग रोग वणगी, बात बूझागड तणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परधै घणी रे

आखर आव री आगै, जगत मे जोत जागी
बामण साद मुल्ला मौलवी री भूख भागी
लग लग लोभ सू, जन माल री नटगी अणी रे
पग पग पूज मत पाखण्ड री परधै घणी रे

भोपा भूत सू भरमाय, भोळप धन कमायौ
बामण बद भणनै, भूत नै भगवत बणायौ
नग नग सूत्र धड, पडपच सीख्या सेवणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परधै घणी रे

निरणै लोक होम्यौ अन्न-घी जद आख खोली
रधड धरम रै पाखण्ड सू, तरवार तोली
ठग ठग मीर कीन्हौ, राज री रगत बणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परधै घणी रे

लूटण लोक जद राजा धरम, सिर लोभ चढायौ
बधगी फौज, जन रै जीव, धन री बोझ बधग्यौ

घनबळ जद जन री सुख चुगलै, तद आ भोम अगारा उगळै
जन भावी री भुजग भैरवी, रगत पिवै माथा भख मागै

रे मोटियार ! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै
ओ आयौ दो जुग रौ साधौ, जीणौ व्है सौ कमरा बाधौ
अणुगत चलै काळ रौ अधड, पाछ पगा नै जीवण त्यागै
रे मोटियार ! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै

२८ १२ ५३

आ दीवट आगै ले जाही

ओ रे भाया !
रुक मत भाई, झुक मत भाई
ऊजड खडती आधी आई
दो झटका दे आ ढळ जासी, आ गळ जासी रेत चढाई
रुकता पैली आप मरैली, जीव जठा लग आगै जाही

ओ रे वेली !
थक मत भाई, बक मत भाई
वाट कठण, काया कुम्हळाई
अढब रगीला काळा भूरा पीळा जागै बाट बटाही
थू सागै आगै वध जुग रै, जीवण दे जीवण रै ताही

ओ रे सुगणा !
तक मत भाई, छक मत भाई
नवी कठै है वरग लडाई
जन जाग्या जुग री गत सजळी, सुळझी सुध नव जीवण लाही
घर मजला जीवण जोडै बध, दीवट लेलै पथ बताही

ओ रे उरजण !
डर मत भाई, मर मत भाई
दिन दिन दीसै मजल सवाई
आ थारी काया पड जासी, पण वे जीवण चाल घटाही
नित आगै वधती जिन्दगाणी, आ दीवट आगै ले जाही

दग दग तोप सू, बौपार री चादर तणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परथै घणी रे

परली मीख जन - बळ, संस जुग सिक्यौ कजावै
हुयग्यौ कठण ममझचौ, खेत सारौ बाड खावै
जुग जुग जूझता, इन्याव री कटसी कणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परथै घणी रे

जुग जुग जूझ, धरती धन निठाला निजर कीन्हा
चुग चुग चामडी रा वेस, मुगणा नोच लीन्हा
मग मग भल मत, धन - धान री मैणत मणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परथै घणी रे

कमगर देख औ ससार, दो दळ माय वटग्यौ
मादै मिनख रै अग्यान रौ, धूधाड हटग्यौ
डग डग डोल मत, तरवार आ बेली तणी रे
पग पग पूज मत, पाखण्ड री परथै घणी रे

३ ५ १९४९

जीवण आगै

रे मोटियार! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै
जाग्यौ जन बळ मारग भागै, जूण आथडै, समद उलाघै
ताव चढै जद उथल पुथल रौ, जोवन भिडकै, जीवण जागै
रे मोटियार! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै

मिनख जूण री कथा पुराणी, खलक भरचौ खायक रै पाणी
पिण जद जुग पसवाडौ पलटै, धरती धग धग धूजण लागै
रे मोटियार! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै
हुनर मजूरी निपज वधावै, निकमा लूटै खरचै खावै

उलडै अणगिणिया रौ आडग, अणभणिया रौ आळस भागै
रे मोटियार! सभळ वध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै

धनवळ जद जन रौ सुख चुगलै, तद आ भोम अगारा उगळै
जन भावी री भुजग भैरवी, रगत पिवै माया भख मागै

रे मोटियार ! सभळ बध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै
ओ आयौ दो जुग रौ साधौ, जीणौ व्है सौ कमरा बाधौ
अणुगत चलै काळ रौ अधड, पाछ पगा नै जीवण त्यागै
रे मोटियार ! सभळ बध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै

२८ १२ ५३

आ दीवट आगै ले जाही

ओ रे भाया !
रुक मत भाई, झुक मत भाई
ऊजड खडती आधी आई
दो झटका दे आ ढळ जासी, आ गळ जासी रेत चढाई
रुकता पैली आप मरैली, जीव जठा लग आगै जाही

ओ रे बेली !
थक मत भाई, वक मत भाई
बाट कठण, काया कुम्हळाई
अढव रगीला काळा भूरा पीळा जागै बाट बटाही
यू सागै आगै बध जुग रै, जीवण दे जीवण रै ताही

ओ रे सुगणा !
तक मत भाई, छक मत भाई
नवी कठै है वरग लडाई
जन जाग्या जुग री गत सवळी, सुळझी सुध नव जीवण लाही
धर मजला जीवण जोडै बध, दीवट लेलै पथ बताही

ओ रे उरजण !
डर मत भाई, मर मत भाई
दिन दिन दीसै मजल सवाई
आ थारी काया पड जासी, पण के जीवण चाल घटाही
नित आगै बधती जिन्दगाणी, आ दीवट आगै ले जाही

पिण आगै आगै हालौ

भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

आगै हाल्यौ मिनख जिनावर
पगा ऊभ हाथा खातौ
आगै हाल्यौ मूढ सिकारी
गिंडका पर लाठी वातौ
औ जुग जुग हालै मानखौ
जीवण रौ नाव उछाळौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

आगै हाल्यौ वौ नर राकस
मिनख मिनख नै जिण खायौ
आगै हाल्यौ वौ खेती खड
मिनख जोतनै हळ बायौ
औ पग पग काटा भागतौ
मारग नै कियौ सवाळौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

आगै हाल्यौ भोपौ प्रोयत
कामण सीख वेद भणनै
आगै हाल्यौ सूर सिपाई
धाड छोड राजा बणनै
औ जीवै सौ आगै वधसी
मरतोडा खावै टालौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

आगै हाल्यौ व्याज वाणियौ
नाथ घाल राजा खडनै
आगै हाल्यौ मील-मुमायव
राज लियौ सस्तर घडनै
सगळौ धन भेळौ कीन्हौ
दे अन गाभा रै ताळौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

धब करसा कारीगर चेत्या+
जूथ बाध आगै वधसी
अटक करै थारै मारग मे
वारा धड पल मे पडसी
इण नित री हळचळ मायनै
जीवण रौ सार सभाळौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

जनम लियौ सो डीगौ वधसी
कद ओछौ पड पाय नही
वध तोड धरती सू निकळै
बीज पताळा जाय नही
औ गयौ रूप कद आवै
रुक जाणौ जम रौ जाळौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

पाछौ पग कुदरत सू अवळौ
रुक जावै सौ मरै परौ
जग जीवण नित आगै हालै
औ कुदरत रौ नेम खरौ
बीतौ कद पाछन फोरै
कद बिरखा करै वसालौ
भई धीमा मुधरा चालौ
पिण आगै आगै हालौ

+ जाग्या

[प्रजा सेवक जोधपुर मे प्रकाशित]

कठण कांम री जै बोलौ

वजर पगा सूं सूळा घसता, नवी धरण रा पट खोलौ
कोड करा कमतर में कसता, कठण कांम री जै बोलौ

नवै मिनख री निजरा आगै, वो जुग रेत मडधा पग त्यागै
नवै पथ रा धोरा नै लगै, बुध-बळ हाथा सूं हिल जागै
जन-सुध झानै मारग पडग्यौ, अणलगाम जीवण झोलौ
कोड करा कमतर में कसता, कठण कांम री जै बोलौ

भाग खुनै तन री मैंणत रा, मुडै मिनख मरणै री मत रा
जन-भुज भेळप रै इण जुग में, जीवै मौ जूझार जगत रा
मिनखपणौ जीवण है मरदा, मर जाणै सूं मत मोलौ
वजर पगा सूं सूळा घसता, नवी धरण रा पट खोलौ

अडब मिनख जाग्या जुग साधै, हथबळ हेत हुनर हळ खाचै
जुग तोफान जुवाडा जोतै, उण जन जीवण नै कुण वाचै
अणु रै नथ घाली उण जन नै, कद परमाद करै पोलौ
कोड करा कमतर नै कसता, कठण कांम री जै बोलौ

अकल खुल्या अधारौ व्हाटै, भुज-मैंणत भव वधणा काटै
अडब हिया हुकार करै जद, भू मडळ रा बखिया फाटै
अणुजुग में अणु री गत हालै, उण जीवण सूं तन तोलौ
वजर पगा सूं सूळा घसता, नवी धरण रा पट खोलौ

जुग पुरसारथ चढै उछाळै, जन स्वारथ जुग री गत हालै
हुनर गध्या हाथा रै हिलकै, कळ-बळ करडा काम कमालै
अणहूती उथळण नै उलडै, उण जन-मत रै सग होलौ
कोड करा कमतर में कसता, कठण कांम री जै बोलौ

वंदा मैंणत री जैं बोल

बदा हिम्मत री जय बोल, बदा मैंणत री जै बोल
आ जमी सिरा रै मोल, साथी इण री भारी तोल
साथी हिम्मत री जै बोल, वन्दा मैंणत री जैं बोल

घर मजलां परदेसी आया, लीवी चाकरी चोखी
सूतोड़ा री गरदन वाढी, सरम पगाल्यै न्हाकी
औ रजवाड़ा रौ डोळ, साथी कोरी छोरा रोळ
साथी हिम्मत री जै बोल, बदा मैंणत री जैं बोल

पाळी ऊपर अेक डोकरी, सौ जुग पैली मरग्यौ
पूत मोल में धरती दाबी, नवौ रावळौ बणग्यौ
आ जागीरा री पाल, साथी निरभै हुयनै खोल
साथी हिम्मत री जैं बोल, बदा मैंणत री जैं बोल

दादोसा सायब रा चाकर, मरजी रा चपडासी
पासवान रा गाभा धोया, कटगी भव री पासी
अै हाकम हिवडै होल, साथी सारा अणघड टोळ
साथी हिम्मत री जै बोल, बदा मैंणत री जैं बोल

सेठ गिया परदेस कमावण, सग लै लोटौ डोरी
दीवी धरम नै गोडा लकडी, मडपै गतप थोरी
अब सेठ बण्या बेडोळ, साथी पेट हुवा है ढोल
साथी हिम्मत री जैं बोल, बदा मैंणत री जैं बोल

राजा ठाकर सेठ अेलमद, निरभै मोजा माणै
मुलक मुलक मे अेकण ढाळै, कमतरिया नै ताणै
थू मन म मत कर मोळ, साथी सारी दुनिया गोळ
साथी हिम्मत री जैं बोल, बदा मैंणत री जै बोल

णत थें मैंमू धन निपजावौ, पिण अक्ल री घाटी
अफसर सेठ सिपाई ठाकर, सगळा चाटै चाटी

जद थें उतरौ खम खोळ , साथी थानै दो रगदोळ
साथी हिम्मत री जै बोल , वदा मैणत री जै बोल

धूधूकारौ मच्यौ जगत मे , जूना भाखर धूजैं
मोटयारी धर मच्यौ उछाळौ , बूढा नैं कुण बूझै
ओ परिड़ै घुळग्यौ घोळ , साथी काचौ टिकै न झोळ
साथी हिम्मत री जै बोल , वदा मैणत री जैं बोल

थें गिणती मे घणा भायला , हाकै सू क्यू डरपौ
गिणती रा तिणका है चुगलौ , वाढेती ले झड़पौ
थें धरौ धमक नै धोल , साथी करदौ बीटा गोळ
साथी हिम्मत री जै बोल , वदा मैणत री जै बोल

सवळां सूं लड़ मर जांणौ है

निवळा नैं वळ देवण नैं
सवळा सू लड मर जाणौ है
मिट जाणौ इण धरती सू
जग जीवण सुखी वणाणौ है

आज सिरा रा मोल पटै छै
मूता सावत साख घटै छ
आ काया तौ जद कद जासी
पिण औसर फेर न आणौ है
निवळा नैं वळ देवण नैं
सवळा सू लड मर जाणौ है

आ देही धरती री माटी
धर री समझ करौ क्यू काठी
अब लुक छिप जीव बचाणौ
धरती पर बोझ बढाणौ है
निवळा नैं वळ देवण नैं
सवळा सू लड मर जाणौ है

लोई सू नदिया कर राती
सूरा नर न्हावै छै काती
तन तिल तिल कटतौ जावै
पण आगै कदम बढाणौ है
निबळा नै बळ देवण नै
सबळा सू लड मर जाणौ है

जागौ मरदा जाय जमानौ
करतब पाडै हेलौ मानौ
खुद अमर नींद मो जाणौ
पिण देस अमर कर जाणौ है
निबळा नै बळ देवण नै
सबळा सू लड मर जाणौ है

सखरी काया भरी जवानी
रण री वेळा फेर न आणी
रणखेत रहचा सिर ऊंचौ
डर भाग्या जनम गमाणौ है
निबळा नै बळ देवण नै
सबळा सू लड मर जाणौ है

१९३५, मुम्बई

बंधणा नै तोड़ौ

बधणा नै तोडौ, जुग रा जूझारा दौडौ दौडौ
बधणा नै तोडौ, जुग री सगत्या दौडौ दौडौ

हाथ सरीखा नर नै नारी, ओड भुजां बळ नै काई भारी
जो रीता जन रा पग बांधै, वारी नाड मरोडौ
बधणा नै तोडौ, जुग रा जूझारा दौडौ दौडौ

जन बळ जागे घडी घडी मे, वधे बीजळी कद गुदडी मे
धरण जागगी हय-बळ हुळस्यो, जूझे जग जाग्योडो
वधणा नै तोडो, जुग री सगत्या दौडो दौडो

धडक धडक भव रो हिय धडके, जन-पुरसारथ रा भुज फडके
गेंद बणा धरती सू रमळै, जीवण ज्वार चढयोडो
वधणा नै तोडो, जुग रा जूझारा दौडो दौडो

हुकमत घर री, जुग-गत साथै, वळा मोकळी धरती हाथै
समद फाडदे+ ओड जगा री साथै चरण वध्योडो
वधणा नै तोडो, जुग री सगत्या दौडो दौडो

थूं जागी

थू जागी जन रो मन सलट्यो, भुज भेळप री भान है
वरतारो पमवाडो पलट्यो, जीवण मे तोफान है

ओड कठ हुकार करै, धरती गूजै है
ओड हाथ भडार भरै, धरती दूजै है
धोरा पर धणियाप जमाणी, इण पीडी री आन है
जगळ मे मगळ रो दगळ, जीतण मुलक जवान है
थू जागी जन रो मन सलट्यो, भुज भेळप री भान है

आज वेकळू सोवन वरणी जिगमिग चमकै
हाथा री बळ हर्यो हेम निपजासी हमकै
हुनर हेत साथै पुरसारथ, जुग-जीवण जजमान है
जनवळ हथवळ साथ समझ बळ, कळबळ सिमरथवान है
थू जागी जन रो मन सलट्यो, भुज भेळप री भान है

ढाळ पलट धोरा रा सळ सुलटा कर लेसा
तिरसे थळ रा सूम्योडा वेरा भर देसा

+ रोक दे।

ढाळ ढाळ पर रुख लगाम्या, पाणी सू पक्वान है
हुनर सुधार्या ढोर धपाम्या, अनमाता धनवान है
थू जागी जन रौ मन सलट्यौ, भुज भेळप री भान है

जन जाग्या सू जुग जीवण री जोर वधैला
धन निपज्या सू सुख जीवण रा साज सजैला
समता रौ संसार वसैला, जागण री दिनमान है
थू जागी जन रौ मन सलट्यौ, भुज भेळप रौ भान है
वरतारौ पसवाडौ पलट्यौ, जीवण में तोफान है

विळिया विगल वजाई

जीवण जुग पसवाडौ पलट्यौ, विळिया विगल वजाई
हे जन तन मन आतुर भुज फडकै, चढग वधग धुन छाई
अणभणिया आधडवा लागा, अघ विचला निरभै नागा
जनता जीवण उकताई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
विळिया विगल वजाई

सिर हाथा रौ साचौ सगपण, आज मजूर समझग्या
हे धरती धन निपजावण वाळा, मार कूट सू मजग्या
थोडा ठग जन धन लूटै, भूका तौ हुक्मत कूटै
जन जीवण लग्यौ दवाई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
विळिया विगल वजाई

जग सारु अन धन निपजावै, हाडी धान न सीझै
हे राज धरम वैपार विणज रा पाटा मे किचरीजै
मदमस्त मुफ्तिया मालहै, पिण जनता चढी उछाळै
धर धणिया री अगडाई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
विळिया विगल वजाई

सैस जुगा खाधे चढ माच्या, पिण्डत पीर पुजारी
हे वारी पाव तळै सू खिसकी, सम्पत करी सवारी
जुग जागण ज्वाल जगाडी, जन जीवट बध्यौ अगाडी
धरणी धर आख उठाई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
बिळिया बिगल बजाई

जन छाती पग खूद बाजग्या, ठाकर सेठ सिरोमण
हे ईस्वरस्याम-धरम रो भाटो, छाती चढ्यौ सवा मण
अै धरणी-धर बाजै, नै बिना कमाया गाजै
अब चोरी चवडै आई हो, भाई हो भाई हो
परिवरतन पुळ आई
बिळिया बिगल बजाई

जन रग रग मे धग धग धडकै, रतन चढ्यौ सन्नाटै
हे पग पग मग मे धर कडकै ठग ठाला हिय फाटै
बळ बुध सू करी सगाई, कमतरिया फौज बणाई
जन छेहली लडै लडाई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
बिळिया बिगल बजाई

अकल खुली अणगिणत मिनख री, पथ अणी चितरीजै
हे जन विराट नव जीवण दाता, जाग्योडा कद धीजै
कण कण मे जीवण जागै, पग पल पल हालै आगै
जुग जागण जोत जगाई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
बिळिया बिगल बजाई

सपत सेग मजुरा री है, जमी जोतवा वाळा री
हे ईस्वर राजा देस विणज, सै ठग विदिया ठाला री
जुग-जुग जन रो धन खायौ, नित जन नै मूढ बतायौ
अब ठग री खुली कलाई हो, भाई हो भाई
परिवरतन पुळ आई
बिळिया बिगल बजाई

बांकियो बाजै

ओ बाजै रे बांकियो बाजै
सुर जागे लोक रो गाजै
मिनख देस नै साजै

नर नारी मगन मनावै
मंदर रो माता धावै
धन नवा गन अपनावै
मढ मढ गू भाग जगावै
हाथां रो बढ गांठ, उतरगी सांठ
गोठ मे रमी आगियां साजै
ओ बाजै रे बांकियो बाजै
सुर जागे लोक रो गाजै
मिनख देस नै साजै

जुग जोर पढ़्यो पोतावै
जगत रा नैण उघाड़ै
घाटल जोगा नै धाड़ै
मायड़ री जड़ियां गाड़ै
नव जुग रा गुर बोल, भुजा रे मोल
आंट मे मिनख गड़्यो दरवाजै
ओ बाजै रे बांकियो बाजै
सुर जागे लोक रो गाजै
मिनख देस नै साजै

घुरै रे नगारी

धमक धमक धम, घुरै रे नगारी
सिर सौदागर घरै पधारी

धन - बळ जुग जीवण गत रोकी
लारी गुख चग्गी परलोकी
लूटै लाव बनावै चोखी
मिळग मिळग जन जियो रे अगारौ
घमक घमक घम, घुरै रे नगारौ
सिर सौदागर घरै पधारौ

लख पीढी पग हट पयारी
जागी कमगर दुनिया सारी
जन विराट रण तुरग सवारी
धमक धमक पग पडै रे करारौ
घमक घमक घम, घुरै रे नगारौ
सिर सौदागर घरै पधारौ

जन जुग जीवण जोत जगासी
डिग पड ऊट अगाडी जासी
पग मारग पिण निजर अकासी
चमक चमक चमकै रे तारौ
धमक धमक घम, घुरै रे नगारौ
सिर सौदागर घरै पधारौ

सग सग जीवण चढ्यो उछाळै
रग रग उफण्यो रगत उकाळै
पग पग अणगिणिया पग हालै
धडक धडक धडकै रे मन सारौ
घमक धमक घम, घुरै रे नगारौ
सिर सौदागर घरै पधारौ

औसर उमर मगर मोट्यारी
भुज फडकै हुळमै दोट्यारी
इण जुग जूझण इणरी वारी
घुडक घुडक रण मच्यौ नजारौ
घमक घमक घम, घुरै रे नगारौ
सिर सौदागर घरै पधारौ

जुग पसवाड़ौ लीन्हौ

इण हाथ हथोडौ साभियौ, उण दातळलौ कर दीन्हौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

सिर चढयोडा बोझल हुयग्या, ल्हास मसाणा चढ चाली
जीवतडा कुछ काम कमाता, अब रैग्या ठठर खाली
जुग बीत गयौ राजा ठाकर रौ, बदळयौ रीत रवीनौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

सिरदारा री साथ विगडयौ, बाड खेत खावा ढूकी
राज रावळा पडग्या पातळा, जागीरा री जड सूखी
हळ कळ वाळा हुळमिया, अब कठण जुलम सू जीणौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

सठया निमक रमै* छत माथै, नीव भीत री पिण काची
ऊपर हाल रही है मैफिल, नीचै बळै ज्वाळ माची
आ इक दिन ज्वाळा फूटसी, जद जबरौ बचै न झीणौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

अैलकार री चाल दुरगी, करै बदगी मोटा री
निवळा नै नथ घाल नचावै, खार खेंचनै छाटा री
हाकम-सा चितराम समझग्या, जिणमू हुवौ पसीनौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

बामण साद फकीर जगत रा, करमा माथै पेट भरै
करमा माथै हाथ धरावै, धरम करम रा ढोंग करै+
मजदूरा सुध साभळली, कद मुफ्त गमावै सीणौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

---

* सेठया सांड चरै
\+ करमां माथै हाथ फिरावै, परलोकां रा ढोंग करै

गाव चौधरी मोटा करमा, कामेतां सू गाठ करै
हाकम सू प्यारा लग चाटी, नाहक निबळा सू आट करै
जाग गयो धरती रौ धायळ, घटची मुफ्त रौ धीणौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

जुलम जोर री जडा उखलगी, जुग जागण री पुळ आई
धन धरती जनता ले लीन्हा, धुडगी धन री धीगाई
जाग्योडौ जन - बळ पाडैला, अबै अकासा तीणौ
जुग पसवाडौ लीन्हौ रे भई, जुग पसवाडौ लीन्हौ

लाल धजा री आण फिरै

लाल धजा री आण फिरै
आ लाल धजा री आण फिरै, जद कमतरिया री दसा घिरै

बीत्या जुग मैंणत करता नै धरती धन निपजाता नै
माखण माल मुफ्त ग जाता, छाछ मळीचौ खाता नै
अबै हथोडी दातळनी धन धरती री धणियाप करै
आ लाल धजा री आण फिरै

डिगमिग डोल रह्या रजवाडा, बडै राज रौ जोर गियौ
ठाकर फिरै ठाकरा खाता, बडौ रावळौ बिगड गियौ
जाग गिया धरती रा धायल, हूळस धारिये हाथ धरै
आ लाल धजा री आण फिरै

सेठा री सैंणप सड चाली, बात बिगडगी बोहरा री
चाल उकीली चवडै हुयगी, पोल खुली सब चोरा री
अणभणिया आयडवा लागा, धरती धूजै सूम डरै
आ लाल धजा री आण फिरै

जूझ रह्या अणगिणिया जुग स, जग रा करसा अवर मजूर
मीच धरा रातै लोई सू, रग दियौ धज नै भरपूर
बंध कट्या, आजाद मजूरा रै हिवडै म जोम भरै
आ लाल धजा री आण फिरै

दूजा रग विणज रा बाना, रातौ रग मजूरा रौ
हाथ हथोडै दातळला मे, वसियौ काळ हजूरा रौ
निसक चरै हळवाण्या वाळा, दुसमण दळ भय खाय मरै
आ लाल धजा री आण फिरै

हळवाळा तरवारा झेली, कळवाळा तोपा दागै
दाव भूलग्या दळ बळ वाळा, जीव छोड नै पड भागै
धूड माजनौ धाडविया रौ, कमतरिया रा काज सरै
आ लाल धजा री आण फिरै

पग पग मेल संभाळ रे

हाल हाल जुग ढाळ कमाणी, पग पग मेल सभाळ रे
पाळ पाळ पपाळ, अडाणी, अक्ल धरै मत लार रे

पीढया रा वधणा मे घुळगी,गुपत राखिया बिदिया सुळगी
उपजै उती उजाळ, बधाणी, उण मे रम कस घाल रे
आयौ इलम उछाळ, जमाणी, जिण मे जीवण ढाळ रे
हाल हाल जुग ढाळ, कमाणी, पग पग मेल सभाळ रे

मायौ छोड्यौ भुजा उतरगी,सभळी सुध बुध चाल सुधरगी
निरज वध्या निहाल, उगाणी, उणरी जडा रखाळ रे
दीसै सो पथ हाल, पिछाणी, पग डाडी मत टाळ रे
हाल हाल जुग ढाळ कमाणी, पग पग मेल सभाळ रे

गढ सू गमी खेत मे लाधी, धणी तज्या धणियाप दबादी
मैणत तणी मसाल, उजाणी, उणनै पैली वाळ रे
हथवळ हेत हलाल, हिजाणी, उणनै अथक उखाळ रे
हाल हाल जुग ढाळ कमाणी, पग पग मेल सभाळ रे

मुड्णा मिनख मसीना मसळै, नाग पळै घरका नै डसलै
हिळमिळ हलै हमाल, हटाणी, हळ सू हिडक हकाल रे

अधपाची औंगाळ, पचाणी, उणनै पग पग पाळ रे
हाल हाल जुग ढाळ कमाणी, पग पग मेल सभाळ रे

पौ फाटा निठसी अधारौ, सैचन्नण जुग मारग सारौ
मिनखा मिळै मजाल, समाणी, उणनै खाधै झाल रे
जन बळ तणौ जमाल, जमाणी, सीख्या सधै सुगाळ रे
हाल हाल जुग ढाळ कमाणी, पग पग मेल सभाळ रे

भुजा रौ भेळौ बळ चाहीजै

थें तौ आगे भाळौ रे मारू लोकडा
आ तौ लाखा नै लागी रे ललकार, भुजा रौ भेळौ बळ चहीजै

औ तौ जद कद आभौ रे पावसै
औ तौ सारौ ई धरण धस जाय, थळी मे मीठौ जळ चहीजै
आ तौ लाखा नै लागी रे ललकार, भुजा रौ भेळौ बळ चहीजै

अै तौ धागा सिधाई सारी माळवै
अै तौ जलमै जिण पैली रे मर जाय, चारै स् छिलतौ थळ चहीजै
आ तौ लाखा नै लागी रे ललकार, भुजा रौ भेळौ बळ चहीजै

अै तौ भूखा रे अेवड दूवळा
अै तौ ऊगै उण पैली रे चर जाय, धरण माथै दळ चहीजै
आ तौ लाखा नै लागी रे ललकार, भुजा रौ भेळौ बळ चहीजै

आ तौ सारा दोसा री औखद अेकली
आ तौ हाथा रै हाली रे हुकार, निपट नैडी बळ चहीजै
आ तौ लाखा नै लागी रे ललकार, भुजा रौ भेळौ बळ चहीजै

भरम रै भंवर जाळ नै तोड़

भरम रै भवरजाळ नै तोड, मरम नै मारग मिळ जासी
करम सू जीवण रौ रुख माड, मजल नित नवी निकळ जासी

धरती रौ मारग करडौ, असमान उडचा क्वळौ है
धरती मे मिनख बधै है, चादं रौ पथ सवळौ है
नरम पड जुग मारग मत छोड, नखत मे जीवण खिल जासी
भरम रै भवर जाळ नै तोड, मरम रौ मारग मिळ जासी

बागा मे नही असीगै, घर माय जगा रौ तोटौ
लटियाळ चढी है धीमै, मोटधारी रौ मत मोटौ
सरम रा गोडलिया मत फोड, धरम री धजिया सिल जासी
भरम रै भवर जाळ नै तोड, मरम रौ मारग मिळ जासी

आजाद जमानौ आयौ, आजाद हुई मोरचारी
क्वि थू आजादी लायौ, फूली केसर री क्यारी
अधूरा मन बधणा नै तोड, घडोल्यै इमरत छिल जासी
भरम रै भवर जाळ नै तोड, मरम रौ मारग मिळ जासी

झिरमिर आभौ पावसं रे

झिरमिर आभौ पावसं रे, मनडै रा मोवन
झीणी झीणी हालै रे पुरवाई, पाणी सू धरती धापगी रे

जन जीवण आजादी पाई, सूता नै जगाया जाय
मैणत री महाराणी आई, सुपना साच वणाया जाय
फिर फिर बादळ गडगडै रे, मन वावा माझी
सूता री सुळ जासी रे सगाई, जागतडा जीवण जीतसी रे

जीवण मे जवानी छाई, पुरसारथ रौ पथ सभाळ
जोडायत दिवलौ कर लाई, हाल माईना आगै हाल
फिर फिर लोई ऊफणै रे, सुपना रा सीरी
मगरै रे मोट्यारी चढ आई, मैणत रा मोती पाक्सी रे

जुग पलट्या नींद उडाई, जवानी मोटा भाग
जाग्योडी जन - सगत्या गाई, भुज मैण तरी टणकी राग
खिर खिर हीरा विखरै रे, हेतण रा हाळी
रत रै रहता कर ले रे कमाई, रजकण सू रूपौ नीसरै रे

जाग हुई जद कमर वधाई, हाथ घणा अण थाग करार
साथ सभा जद लोग-लुगाई, धण सढै धन धान अपार
थिर थिर जीवट जागतौ रे, सुख दुख रा सगी
सुख जीवण री सायत नैडी आई,जाग्योडौ जन बळ जूझसी रे

इलम बिना धोरा मे धन कद धीजै

इलम बिना धोरा मे धन कद धीजै

गीढचा री परख पुराणी रे पडगी
दूध घट्या नै सारी ओध बिगडगी
हथणी नै ऊदरौ परणीजै
इलम बिना धोरा मे धन कद धीजै

थळ म कद भागीरथ जलमै
नवौ रै इलम उपजै जनमन मे
आलौ सूखै नै सूखौ भीजै
इलम बिना धोरा म धन कद धीजै

खोदै खूटै नै अेवड चर जावै
नागी धरण सारी धूड दबावै
ऊगै उण पैली घूटौ सीझै
इलम बिना धोरा मे धन कद धीजै

नवी रे हुनर सारी ओध सुधारै
भूख तिरस रौ रे भार उतारै
गोरी नैं देवाळया गुणीजै
इलम विना धोरा मे धन वद धीजै

नहरा भरी नळ कूप खुदावौ
थळ तिरसी उणनैं जळ पावौ
सूखी धरण कुण वीजै
इलम विना धोरा मे धन वद धीजै

भरया रे चडस वेरा सू निसरै
जळ री वाळ जगत सब विसरै
झाडा मू डाळ ढकीजै
इलम विना धोरा मे धन वद धीजै

अन चारौ निपजै अणमातो
दूध मिठै मव नै मनभातो
जुग जुग मू वळी वेक्तू भीजै
इलम विना धोरा मे धन वद धीजै

धन सुधरै पुरसारथ पावै
रोग कटै नी अेवट थावै
दूधा रा समद भरीजै
इलम विना धोरा मे धन वद धीजै

अनधन रा कीड़ा मर जासी

अनधन रा कीड़ा मर जासी फुंवारा छर छर छूटै रे
मै धान रोग नै धमकासी धरती सू धूवा उठै रे

उगै उण मायं जीवै जड डाळ पात गुठ जावै
गायां रौ लोई पीवै ज्न री मैणत रुळ जावै
मै बधता बूटा मुरझासी माटी रौ रमकम खूटै रे
अनधन रा कीड़ा मर जासी फुंवारा छर छर छूटै रे

जड खाय करै जवराई लीलौ सौ पीळौ पडसी
करसण पर डाढ लगाई जद डाळ पानडा झडसी
हथ मैणत पडसी गळ फासी मिनखा नै कीडा लूटै रे
सैं धान रोग नैं धमकासी धरती सू धूवा ऊठै रे

सब भेळी घोळ दवाया कोठ्या भरनै ले चालौ
दो जोडी मरद लुगाया, ट्रेक्टर री पप चहालौ
पिचकारया इमरत बरसामी वळ खडी बादळी फूटै रे
अनधन रा कीडा मर जासी फुवारा छर छर छूटै रे

की गाडौ खोद जडा मे की भेळौ धूड कणा मे
रेह जावै फेर घडा मे बा छिडकौ डाळ तणा मे
करसण रा दुख नैं डरपासी कीडा नैं करसा कूटै रे
सैं धान रोग नैं धमकासी धरती सू धूवा ऊठै रे

धोरां री धरती जाग

बडभागण भर्‍ये सवाग , लाग वळै पुरसारथ लाग
रे धोरा री धरती जाग

त्रण खोद गाडरा चरगी , अणझाड कवाड्या करगी
जद रम्यौ बायरौ फाग , धूड मे दब्यौ मुलक रौ भाग
रे धोरा री धरती जाग

सैं घास बळै अध ऊगौ , जळ ठेठ पयाळा पूगौ
जद लू बरसावै आग , पवन म खख चढी अणथाग
रे धोरा री धरती जाग

सैं खेत धूड मे दबग्या , जद छाग माळवै चढग्या
धन धीणै पड्यौ दवाग , दुहारया हृदा निठगा झाग
रे धोरा री धरती जाग

झाडा री जडा जमाणी , धोरा री धूड दबाणी
दे ओड हाथ सू याग , थळी नैं उथल वणा दे बाग
रे धोरा री धरती जाग

लो नवै इलम सू लागै, सुध हुनर हेत सू जागै
जन मैणत हदा भाग, जमावै कोड कठ री राग
रे धोरा री धरती जाग

आगै हल भई

साथ सभळ पुरसारथ फळ भई
आगै हल भई आगै हल भई

मुलक पूतळी सडका नाड, भुज भेळप सू बसै उजाड
अन धन उपजै बखिया फाड, सडक विना पड जासी साड
खोद सुरग पुळ सुथरा कर सळ, बुलडोजर सू बाठ उथल भई
आगै हल भई आगै हल भई

जमी खोद जड झाड उखेल, कूट काकरी डवर ठेल
मुड माटी ज्यू बैठे मेळ, हिळमिळ हुळस पसीनो भेल
धमक मोगरा लाग भुजा बळ, इतरा मिनख इतो सौ धळ भई
आगै हल भई आगै हल भई

सुथरी सडक अगाडी रेल, हुनै विणज री रेलमपेल
दुख दाळद नै दूर धकेल, दे आळस नै अळगो मेल
जग परमारथ पसवाडै पल, हथ मैणत सू मुलक बदळ भई
आगै हल भई आगै हल भई

जागो जागो जी सांईना

जागो जागो जी साईना थारा भायेला बुलावै
सगळा साथी दौड्या जावै रे
म्हागी रे साथणिया साजन उभोडी उकळावै

हालौ हालौ अे भुज सगत्या वारै बीजळिया भळकावै
छोरचा कद री नाहरा खावै रे
थारौ हे मनभवरौ थारै लारै कद रह जावै

जन री भुज भेळप हाळी नींव लगासी
सै घर-ग्वाड नवा रे वण जासी
तगडा रहजौ रे मूछाळा, परत्ता साम्ही सडक बणावै
दिन दिन बधता जावै रे
पथ सुधरता धरती दूणौ रिजक कमावै
जागौ जागौ जी साईना थारा भायेला बुलावै

गाती बहज्यौ अे जन सगत्या था सू मन बळ बधतौ जावै
ज्यू ज्यू सडक अगाडी धावै रे
थारी रे सगत सू जन बळ दूणौ जोर लगावै
हालौ हालौ अे भुज सगत्या वारै बीजलिया भळकावै

अन धन लिछमी हाळी गाव कमावै
सडक विना रे सगळौ सड जावै
बधता हालौ रे हळहाथ्या साम्ही होड चढचा बै आवै
मागी लारै मत रह जावै रे
पिछडै वारी परण्या साजन लाजती लुक जावै
जागौ जागौ जी साईना थारा भायेला बुलावै

तगडी रहज्यौ रे गुण लिछम्या थारा हाळी हुळस्या धावै
भुज सू भाखर खोद बगावै रे
थारी रे निजरा सू भुज म बीजळी भर जावै
हालौ हालौ अे भुज सगत्या वारै बीजळिया भळकावै

जद जन आप लगन सू लागै
पथ बणै दुख दाळद भागै
भेळप पाळौ रे मोट्यारा साम्ही सोनै रौ जुग आवै
मन रा बधण तोड वगावै रे
थारी जन सगत्या दगळ करती मगळ गावै
जागो जागौ जी साईना थारा भायला बुलावै

हसती हालौ हे रूपाळचा था सू थाकेलौ थक जावै
सगळा हसता हाथ हिलावै रे
थारी हिम्मत सू हाळी हरख्या काम कमावै
हालौ हालौ अे भुज सगरा थारै बीजळिया भळकावै

ऊपर उठ जासी

ऊपर उठ जासी जन थारी जिंदगाणी
जद थू जुट जासी वधता ई वण जाणी

ऊंच नीच आपै उड जासी, जुग मुड़ग्यौ, जन ई मुड़ जासी
पग राखै जुग साथ, हुनर ले हाथ साथ ई मुळजासी
उळझी अकल अजाणी
ऊपर उठ जासी जन थारी जिंदगाणी

परख मिनख री पोळ नहीं है, मिनखपणै रौ मोल नहीं है
पुरसारथ री पाण, इलम री आण, मिनख नै मिळ जासी
कारज मुजब कमाणी
ऊपर उठ जासी जन थारी जिंदगाणी

इण जुग री आ वान वडी है, सैंग वधी आ सड़क पड़ी है
मन वधणा नै घोन, नवौ सुर घोन, झूपड़ी सध जासी
अर्जै पडी अधराणी
ऊपर उठ जासी जन थारी जिंदगाणी

लग गू वण बादळ उड जावै, फेर ठरै जद हेम वणावै
धाया तणी कड़ाण, करारी वाण, हिमाळै चढ जासी
गर ममता रौ पाणी
ऊपर उठ जासी जन थारी जिंदगाणी

कारज करड़ौ मैणत मांगै, जुग रौ मोड़ नवौ पथ भागै
मोट्यारी रौ मान, उमर नै ध्यान, मजन नै मम जासी
गुधरी ममत सयाणी
ऊपर उठ जासी जन थारी जिंदगाणी

नव जुग री नोवत वाजी

तन तगडो भरी जवानी
थू निपज वधा मनमानी
अन री उपज बध्या वध जासी
सुख री सगवड साजी
नव जुग री नोवत बाजी
सुख री सगवड साजी रे सयाणा
पग धरती बुध ताजी
नव जुग री नोवत वाजी

मिळ मन सू करो मजूरी
पट जाय समद री दूरी
जाग्योडो जन जीवण मांगै
कसणा मिनख मिजाजी
नवजुग री नोबत वाजी
कसणा मिनख मिजाजी रे सयाणा
पग धरती बुध ताजी
नव जुग री नोवत वाजी

जुग जोडै हूस हुलासी
आ भाय पगा री दासी
रथ तारा सू बाध विलाला
कोड मिनख कर राजी
नव जुग री नोवत बाजी
कोड मिनख कर राजी रे सयाणा
पग धरती, बुध ताजी
नवजुग री नोबत वाजी

कस कमर आगळी काठी
दे गोवरधन रै लाठी
आज करै उण सू इदकारी
पाच बरस री बाजी

नवजुग री नोबत बाजी
पाच बरस री बाजी रे सयाणा
पग धरती बुग्र ताजी
नव जुग री नोबत बाजी

वीर बिछड़्या बदळ्या यार

वीर बिछड्या बदळ्या यार
मजला करडी बधती भार
पिण साथी उगूण रत्योडी
आस तजै मत कर्नै सवार

अथक अकेलो ऊजड गैल
वाहेना रै मन मे मैल
पग पग काटा छुरी पूठ मे
पिण दीवट दतौ रह तेल

घर मजला बधती जा सागै
हेर नव पग-डाडी आगै
जुग जीवण जीणो जद जाणै
जन सूता दीवटिया जागै

जद थारी काया थक जासी
तळिया रा छाला पक जासी
मोटयारी दीवट ले लेसी
जीवण री गाडी हुक जासी

नुगरा निरमळ नेह न्हवाना
गुगरा गुथरा मळ गुळ जाना
जीवण मन जोड़े बध साथी
साथ निभाता जोत जगाता

मोटा रौ मपीणौ

निरमळ काया सुखी जमारौ
हाथ तळै धरती धन सारौ
त्रिया चतुर पिरवार सपूतौ
तद परखीजै मिनखीचारौ

अवळी गत

त्रिमरियौ खेत खड रौ नाव
ठाकर रौ गिणीजै गाव
सादा मिनख माथै भार
मोटा मिनख री सिरकार

अवळी सै जगत री रीत
धन री गरज गिटगी प्रीत
लालच सू डिग्योडी नीत
वणगी स्नेह साम्ही भींत

वचाता जाय

रोजीना वचाता जाय, जन रै आडा आता जाय
धनजी रौ पिरवार सयाणौ सगळा मिनख कमाता खाय
जन रौ जोर वधाता जाय

आठ मिनख रा मोळै पइसा तीन रावडा धनजी भइसा
भळा कर कर रखसा पडनौ हर मीना म लाता जाय
घर रौ नीव जमाता जाय

पाम्यौ पूस्यौ मोदन मुन्नी, रतनकौर नाराणी चुन्नी
नव टावर नित रा नव पद्‌मा जनता नैं सभळाता जाय
सघरी टेव सिखाता जाय

जद इकग्रार मदेमी लायौ, रतनकौर रै इनाम आयौ
घर वणग्यौ टाबरिया भणग्या लाय बचाता खाता जाय
पड्‌चा लेखण गाता जाय

श्रोठ मिनख साचौ प्रण करनै, सौ म पाच वचन मे धरलै
नगर गाव ढाणी मे जद पड्‌चा निठमी लाता जाय
सगळा समक्ष सभाता जाय

पद्‌मी पड्‌सी मिनख वचावै, जनता री जीवण वण जावै
सड़क बध बिजळीघर नेहरा मीला लोक वणाता जाय
सैं दुख दळद दबाता जाय

दोनू दिस दुसमण रा फेरा, बन्न बधै फौजा रा डेरा
सीमाडै पर धनजी भटमा अन मन्नार पहुंचाता जाय
दुसमण नैं डरपाता जाय

जीणौ व्है तौ जाग रै

जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग
या धरती पर गोप मती इण जुग री गत अणथाग रे
जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग

अणबिदिया रू जामन भटकै जीवण मे अजाळ भरै
पग भू रै जन री गत अटकै जद जागण रो ग्यान करै
भणगुण समदा गमै री रगन दे आळग मे आग रे
जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग

निछरपां नैं नग पर थामो, भरम भेद री भाव नहीं
भाग री मर तोर गमायो किणी पथ अटकार नहीं

पिण हर री विरतत्र सू जोडी वठण काम म लाग र
जीणो व्है तो जाग सयाणा जीणो व्है तो जाग

हळ जोतै उतरा ई सतर हुनर हेन री हाट भरी
निव चाल्या निकमा रा नखतर पुरसारथ री पेट गरी
जन जुग म जनता धणियाणी यू जनता रो भाग रे
जीणो व्है तो जाग सयाणा जीणो व्है तो जाग

पण थारै जूनै जीवन री मारी नींव सडी कोनी
दुरजणता रो दरप दळण री भेळप भूल पडी कोनी
अकल वधै उणनै अपणानै पथ रार्के सो त्याग रे
जीणो व्है तो जाग सयाणा जीणो व्है तो जाग

घर ग्वाडया सेरया सै सडगी वचन काया मैल भरी
दारू मू सै अक्कल अडगी अर रीन बिगड रगत उतरी
दोरप नै दळ न्हाव छेदडै वठण काम री राग रे
जीणो व्है तो जाग सयाणा जीणो व्है तो जाग

अलोक मती ऊध रे

भरण तप नै चानणो है डोळ रूप रग है
हलण सुर नै गध है मनेह जाण सग है
हरख पीड हेन प्रीत पाळनै सरीर मे
लखण नैंण निरमळा नै नाक कान अग है
जूण जनम साच सजन निरख सुणनै सूघ रे
अलोक मती ऊध रे

इण जनम म फूल फळ है कमल अर तळाव है
इण जनम म सूळ सुगध पुमप रो बचाव है
इण जनम मे हरख निरख परख रो बजार है
इण जनम मे जोत निजर चाद रा पडाव है
आतमा असार सजन जग नै जनम सार रे
असोक मती हार रे

सास लहण वायरौ नै पथ गहण चेत है
पेट भरण अन धन नै हरघा भरचा खेत है
मिनखा नै मोक्ळ ही मिनखपणौ लोक मे
सरग नरक साव झूठ सार सुख भोग मे
नार नर रौ नेह सजन जन री अमर वेल रे
अबोध मती खेल रे

जनम पैली मरण पछै फेर जनम झूठ है
सुध विहूणै निजर हीण मिनख साव ठूठ है
रूप डौळ चाल ढाल जीवण वधावणौ
सत रै गळै बाढणी नै धन रै हाथ मूठ है
जन रै सागै हाल सजन जन रै सागै जाग रे
अलोप मती भाग रे

साथण दिया जगा दे

साथण दिया जगादे
दीवाळी सिणगार सयाणी जुग रौ पथ उजादे
साथण दिया जगादे

औ नव जुग नित जुग सू न्यारौ, लिछमी नै पुरसारथ प्यारौ
सुध विसरचा जीवण नै साथण जुग री गत समझादे
साथण दिया जगादे

ओड हाथ कारज मे लागै, क्रोड मिनख री सुध-बुध जागै
सीर सभ्ये हथबळ नै साथण बळ पर काम लगा दे
साथण दिया जगादे

छिण बदळै पळ मे बध जावै, हुनर मजूरी हेत निभावै
जुग साधौ गुळदावण साथण समय सुधा बरसा दे
साथण दिया जगादे

गिण हुनर री बिरताव सू जोडो वठण काम मे लाग रे
जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग

हळ जोतै उतरा ई खेतर हुनर हेत री हाट भरी
निव चाल्या निवमा रा नखतर पुरसारथ री पेठ खरी
जन जुग म जनता घणियाणी थू जनता रौ भाग रे
जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग

पण थारै जूनै जीवन री सारी नींव सडी कोनी
दुरजणता रौ दरप दळण री भेळप भूत पडी कोनी
अक्कल वधै उणनै अपणानै पथ राखै मौ त्याग रे
जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग

घर ग्वाडथा सरधा सै सडगी वचन वाया मैल भरी
दारू सू सै अक्कल अडगी अर रीत विगड रगत उतरी
दोरप नै दळ न्हाव छेदडे वठण काम री राग रे
जीणौ व्है तौ जाग सयाणा जीणौ व्है तौ जाग

अलोक मती ऊंघ रे

मरण तप नै चानणो है डौळ रूप रग है
हलण सुर नै गध है सनेह जाण सग है
हरख पीड हेत प्रीत पाळनै सरीर मे
लखण नैण निरमळा नै नाक कान अग है
जूण जनम माच सजन निरख सुणनै सूघ रे
अलोक मती ऊघ रे

इण जनम मे फूल फळ है कमल अर तळाव है
इण जनम मे सूळ सुगध पुसप रौ बचाव है
इण जनम मे हरख निरख परख रौ बजार है
इण जनम म जोत निजर चाद रा पडाव है
आतमा असार सजन जग नै जनम सार रे
असोक मती हार रे

साम लहण वायरो नै पथ गहण चेत है
पेट भरण अन धन नै हरया भरया खेत है
मिनखा नै मोकळ ही मिनखपणौ लोक मे
मरग नरक साव झूठ सार सुख भोग मे
नार नर री नेह सजन जन री अमर बेल रे
अबोध मती खेल रे

जनम पैली मरण पछै फेर जनम झूठ है
सुध बिहूणै निजर हीण मिनख साव ठूठ है
रूप डौळ चाल ढाल जीवण बधावणो
गत रै गळै बाढणी नै धन रै हाथ मूठ है
जन रै सागै हान सजन जन रै सागै जाग रे
अलोप मती भाग रे

साथण दिया जगा दे

साथण दिया जगादे
दीवाळी सिणगार सयाणी जुग री पथ उजादे
साथण दिया जगादे

ओ नव जुग नित जुग सू न्यारो, लिछमी नै पुरसारथ प्यारो
सुध बिसरया जीवण नै साथण जुग री गत समझादे
साथण दिया जगादे

कोड हाथ कारज मे लागै, कोट मिनख री सुध-बुध जागै
सीर गम्यै रूपवळ नै साथण कळ पर काम लगा दे
साथण दिया जगादे

छिण बदळै पळ मे बध जावै, हुनर मजूरी हत निभावै
जुग गांधी गुजरातण साथण समय सुगा बरसा दे
साथण दिया जगादे

भेळौ भुजवळ धकै पधारो

धमक धमक धम घुरै रे नगारौ, भेळौ भुजवळ धकै पधारौ
समद उलाधण जहाज वणाया, नगर मुलक रा रेल जडाया
विण गावा रौ जीवण न्यारौ सडक विना कद जुडै किनारौ

काछोटधा कस करा मजूरी, काटा नगर गाव री दूरी
आण जाण धन करै वधारौ, तद औ कमतर हुवै करारौ
धमक धमक धम घुरै रे नगारौ, भेळौ भुजवळ धकै पधारौ

गाव गाव भुजवळ रौ मळौ, हुवै मोन्रा मिटै झमलो
विणज वधै सुधरै वरतारौ, जन जीवण री सधै जमारौ
धमक धमक धम घुरै रे नगारौ, भेळौ भुजवळ धकै पधारौ

ढाणी गाव नगर जुड जावै, मोन्चारी मैणत चढ जावै
कटै कून्ता दाळद सारौ, इण जुग म पुरसारथ प्यारौ
धमक धमक धम घुरै रे नगारौ भेळौ भुजवळ धकै पधारौ

हाथ खडै ज्यू हाल

भायला हाथ खडै ज्यू हाल
अकल मन कमतर तणा कमाल

तट घट वधता लगती बुझती जळ जीणा री ज्वाळ
थळ खोदया आगै ढब पडगी थण मीणा री थाल
भायला हाथ खडै ज्य हाल

हाथ खुल्या तद पग सू हाल्यौ परिवरतन री ताल
राछ लिया पसुवड सू वधगी मिनख जूण री डाळ
भायला हाथ खडै ज्यू हाल

जूण वणी विखरी वध चढ़गी राछ वणण री नाळ
ज्यू ज्यू हाथ सध्या त्यू बधगी माथै तणी मजाल
भायला हाथ खडै ज्यू हाल

भाटै सू जद मिनख जिनावर वन मे हत्यौ सियाळ
उण पुळ मिनख बण्यौ नै मूझी तारा री पडताल
भायला हाथ खडै ज्यू हाल

हाथ घडचौ परथम हळ पेडौ अतज उडणौ काळ
चाद उडै कै कवन खोदै हाथ विना हडताळ
भायला हाथ खडै ज्यू हाळ

धरती माथै जीवण पनप्यौ पलट पलट कवा
हाथ हुनर सू जीव समझग्यौ जग पलटण री चाल
भायला हाथ खडै ज्यू हाल

मुलक थांरौ गाठ बंध्यौ धन मांगै

जागतडौ मन मागै साथीडा थारौ जोर भरचौ तन मागै
लोक मजूरी करण सम्यौ जन जागण जोवन मागै
मुलक थारौ गाठ वध्यौ धन मागै

दिन उगौ मैणत रन आई, जळ थळ आभै घणी कमाई
बधी उपज घर बैठा लाई, तन मैणन धन री भरपाई
त्यार खडी पुरमारथ गाडी, धन री अजण मागै
मुलक थारौ गाठ वध्यौ धन मागै

गडचौ माल किणरै गुण आवै, माय सडै के चोर चुरावै
फिरतौ धन नित रिजक बधावै, मुलक सुधारै ब्याज कमावै
नव जीवण री नीव लगावण, करण जिमा जन मागै
मुलक थारौ गाठ वध्यौ धन मागै

बाध बणकरसण बध जावै, जळ बिजळी कळ रा हळ वावै
रेल सडक जळ पथ बणावै, जन रौ धन जन कारज धावै
नित तिरसौ सूखौ थळ पावण, जन धन साधन मांगै
मुलक थारौ गाठ बध्यौ धन मांगै

लग लग लिछमी लोक लगावै, रग रग रगत उछाळा खावै
नग नग करता झाड हुय जावै, पग पग कारज हाथ करावै
काम करण जुग जीवण ऊभौ, कमतर कथन मांगै
मुलक थारौ गाठ बध्यौ धन मांगै

जन जन रै मन हेत चाहीजै

जन जन रै मन हेत चाहीजै
जुग साधै सकट री वेळा सगळा सुभट सचेत चाहीजै

जिण जनता म फूट फजीता, खुली किंवाडया लोग नचीता
तक मिळता उण घर मे वडसी, लूक मियाळया गडक चीता
जन बळ भेळप बजर कटै, पण तन बळ तेज समेत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

धरम हूग रा सुळ्या खलीता, जात पात रा जिग्या पलीता
जुग जीवण मे लाय लगावण, पनप रह्या जन लोई पीता
फूट समद री भवरा तिरबा, जन मन भेळप सेत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

लिख्या लेख सू लोक मुगत है, पण जीवण जजाळ जुगत है
नवा राव नै नवा रावळा, कुण जाणै जन री हुकमत है
राज करै बारी रसना मे, करी बात रौ वैत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

अक चरै चौरासी पीसै, उण घर समता किण विध दीसै
जन रा खायक करै खखारा, जन रा भीडू मुडदा धीसै
धाडविया रै धूड माजनै न्हाकण मूठी रेत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

नेता हाकम नै इदकारी, हळधर वळधर जनता सारी
अेकमना पुरसारथ कर नै, मुलक करैं केसर री क्यारी
भुज मैंणत रा सखरा सीरी, खरौ कमायौ खेत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

घर खेंचण दुसमण सीवाडै, दो चीता दोनू दिस दाडै
अेकमनौ जाग्या जन जीवन, अेक भिड़ै इक्कीस पछाडै
वजरवळी भारत रै रथ रा, सगळा तुरग अमत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

रजथानी कसमीर बंगाली, पजाबी उडिया मळियाली
करणाटक गुजरात मराठा, केरल उतराखड रा हाळी
वा मे भुज मैंणत भेळप री, नव जीवण री नैत चाहीजै
जन जन रै मन हेत चाहीजै

धूड़ उडावौ

जुग जुग रा जाळा झाडण नै
खरस्यौ माभौ धूड उडावौ
अणगिणिया हाथा रै वळ सू
समता रौ ससार वसावौ

आ दुनिया जड सू सडगी है
इण पर मैंणत घाटै जासी
डिग्ये महल थाभा देवाळा
खुद मरमी जग नै मरवासी
जुग जीवण मे वाठ वध्या है
जन मैंणत सू जडा खुदावौ
जुग जुग रा जाळा झाडण नै
खरस्यौ माभौ धूड उडावौ

वरग भेद री दुनिया उलटी
कुण विणजै जनता री मैंणत
खोदै सौ भाडैत गिणीजै
राछ रखै उणरी धन सपत

थारै दो हाथा वेली पिडता रै लिछमी बरसै
अब वा हाथा सू भर पेटा री पोल
पूरण वाळा पग धरिया पैली तोल

सादा मिनखा सू मारी धरती री सपत निपजै
कोरी अक्कल सू माडी निकमा घमरोळ
छीजण वाळा पग धरिया पैली तोल

जिण दिन विद्या री थारै जीवण मे जागै जोत
उण दिन मसार थारी मूठ्या मत खोल
जीवण वाळा पग धरिया पैली तोल
अक्कल सू आख्या खोल
हालण वाळा पग धरिया पैली तोल

भई सोच समझ नै चालौ

औ जनम जाय जुग रा कमतरिया आख खोल नै चालौ
भई सोच समझ नै चालौ

थें तन तोडौ करौ कमाई भूखा मरौ फिरौ नागा
राजा ठाकर सेठ पुजारी तगडा रैवै करै तागा
अै धन भूखा रौ घाप्या गटकै औ जबरौ घोटाळौ
भई सोच समझ नै चालौ

लाटा नै पखवाडौ बीत्यौ करखा नै टावर तरसै
लाज ढाकवा गाभा कोनी नैण लुगाया रा बरसै
जूता फाट अगूठा निसरघा तन पर पडग्यौ पाळौ
भई सोच समझ नै चालौ

मगर पचीमा करी कूवडी घर वाळी नै घर धधौ
टावरिया रा दात निसरग्या पाणत रौ पडग्यौ फदौ
थें ई सूख ठूठ ज्यू हुयग्या मुखडौ पडग्यौ काळौ
भई सोच समझ नै चालौ

भर तावडिये री विरखा में धान पकाय करौ ढिगला
वा पर आय गीध ज्यू तूटै पैली पेट भरै सगळा
अै मोटा मिनख ठगा री टोळी घर री गाठ सभाळौ
भई सोच समझ नै चालौ

मापौ लै बोहराजी आसी दूणौ दूण सवायौ वै भरसी
हासल लाग सवाई लेता कामेती रगडा करसी
हवलदार कणवारया भावी ऊपर करै कसालौ
भई सोच समझ नै चालौ

खाती नै परजापत भावी दूजा कमतरिया साथी
सबनै भूखा टरकामी बोहराजी भूखा हाथी
दो दिन रा दाणा रह जामी फेर खाखलौ पालौ
भई सोच समझ नै चालौ

बामण साद फकीर जगत रा कमतरिया पर पेट भरै
करमा माथै हाथ फिरावै धरम करम रा ढोंग करै
मन माडाणी माथै चढग्या करमी रूख सवाळौ
भई साच समझ नै चालौ

धरम धाडवी मैणत माठा ढिगला रै दोळा फिरसी
पैली पूळा लीलौ लेग्या, आज पोरला वै भरसी
आमीमा लाखा री देमी था पर थोप दिवाळौ
भई सोच समझ नै चालौ

लिया टीपणा फिरै रोवता सावा रा मूरत लावै
घर म बाळ राड क्यू हुयगी इणरौ भेद नही आवै
ज्यारै घर म घोर अधारौ वै कद करै उजाळौ
भई सोच समझ नै चालौ

सारौ माल मजूरा रौ है जमी जोतवा वाळा री
राज ब्याज नै धरम करम सै ठग विद्या ठाला री
आळस किया जमारौ बिगडै जागौ करौ उछाळौ
भई सोच समझ नै चालौ

१९३६, जोधपुर

जनता जुग समझण नै लागी

मन री अधारी हट जासी जनता जुग समझण नै लागी
तन रा पग वधणा वट जासी जनता हेत हिलण नै लागी

जन आखधा खुलता ई उडगी ऊच नीच अळगाई रे
आजादी आता ई हुयगी भिचवण सू भरपाई रे
जनता भय भागण नै लागी
नित री निवळाई निठ जासी जनता आप बधण नै लागी

जळ बिजळी वळ वळ खेडा मे अन री उपज वधाई रे
रेल सडक मोटर सू सुधरी करमण तणी कमाई रे
जनता करज भरण नै लागी
सिर रौ देवाळौ दट जासी जनता कम खरचण नै लागी

घर ग्वाडा री मैल विसरग्यौ मेरचा मे सुथराई रे
गाव गाव इसकूला खुलगी सगळा करै पढाई रे
जनता सुध साधण नै लागी
मारग सवळौ सट वण जासी जनता जुग लाधण नै लागी

जन सगत्या अपणौ वळ जाणै बेड्या तोड वगाई रे
नार जगी जन भारौ बटग्यौ जोड्या जुगल सवाई रे
जनता साथ रमण नै लागी
गाडी अब हळकी पड जासी जनता तेज हलण नै लागी

राज करै ज्यानै जन मेल्या सै मिळ जुगत वणाई रे
जन रौ धन जन रौ पुरसारथ जन री सैग भलाई रे
जनता जलम सुधारण लागी
भारत जग जोडै निभ जासी जनता खुद ऊठण नै लागी

मुलक रा टाबर अयां उदास

पूरब मे सुरख उजाम
जोबन री रग मे रास
धरती री उमगा उमडी
मैणत मे उपजी आस
रगत रौ कठै गयौ गरमास
मुलक रा टाबर अया उदास

जुग रै जोबन रौ जोर
पग रै क्यू बधगी डोर
जुग चाद घडै चढ उडलै
इण घर अधारौ घोर
अदीठ भव बघणा री चास
मुलक रा टाबर अया उदास

मिनखा री सिरै कतार
वधता पग तुरग सवार
आगै जोवै नी हालै आगै
यान पाछै सू प्यार
गळिया वळ रौ विसवास
बिरथा साव अलूणी आस
मुलक रा टाबर अया उदास

सुध बुध रौ सूरज ऊगौ

चौथाज्या वै चढण लागग्या सीस चढया धरती हालै
पिछडीज्या वै पढण लागग्या हुनर सध्या चीला घालै
सैंस जुगा मुख भीच भुगतती बोल पडयौ हरिजन गूगौ
अधारौ निठग्यौ जन मन सू सुध बुध रौ सूरज ऊगौ

सिखेरै री चढ्या चातरी मेळ्या सू पाणी भरता
सब मुण्यौ जद भग्या चौधरी मिंदरा रा करता धरना
इतरा दिन पग रज रह्यौ इण जुग उडनै आभै पूगो
अंधारौ निठग्यौ जन मन सू सुध बुध रौ सूरज ऊगौ

हुनर हेत पुरसारथ पनप्या मिनखपणै रौ मान करै
जोड हाथ सू करै मजूरी कळ रै बळ सू काज सरै
जुगा जुगा सू सूगौ हरिजन आज मोतिया सू मूघौ
अंधारौ निठग्यौ जन मन सू सुध बुध रौ सूरज ऊगौ

घटग्यौ जीवण तणौ करार

जनता जात पात म वटगी घटग्यौ जीवण तणौ करार
समता छूत छात सू कटगी मिटग्यौ मिनखपणै रौ प्यार

करडौ काम करै सौ कमती सोल्याळा सुख साज
इण आडी नै करौ पाधरी अत्र सारा री राज
मैणत सौ पावडिया चढगी उणनै कुण सकै उतार
जनता जात पात मे बटगी घटग्यौ जीवण तणौ करार

मळ सू मुगत करै घर सेरी, काढै सब री छूत
अणमोलौ उपकार विरमनै उलटा गिणै अछूत
वानै सुगराई समझासी कोनी नुगराई मे सार
जनता जात पात मे बटगी घटग्यौ जीवण तणौ करार

बराबरी उतरी ई अळगी जितरौ मन मे भेद
जो जितरौ ई भेद करैला उतरौ ई वधसी खेद
ज्यारा पग साकळ सू बधग्या उडलै वै कद पाख पसार
जनता जात पात मे बटगी घटग्यौ जीवण तणौ करार

सब मिनखा रौ लोई रातौ मैग बराबर अग
साथ जुत्या जीवण री गाडी भेद किया बदरग

[illegible]
[illegible] जीवण नवो बजार

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] जीवण नवो बजार

मरजाद बदळ देगी

अणु गाभो भर कूखई नै
ममता नू नाम धरी है
[illegible]
[illegible]
मरजाद बदळ देगी मनवार बदळ देगी

गो धोर मरा निरखा नै
बणनू मन मगनी माया
आसमान मैं झील्योडी
माटी बदळै है काया
सब सांस बदळ देगी सब मोल बदळ देगी

दो पग्न बांदो ऊभो
हाथां मं मिनख मिनावर
जद बांग बगण मांगी
भवनग्यो मिनख धरा पर
मगार बदळ देगी सब सार बदळ देगी

अणु भंजण पोथी गोमी
पण भाषा अधूरा आपा
अण गमझ टाबरां पाल्या
जीव रै जोग बठी भरमाया
सब भाग बदळ देगी सब राग बदळ देगी

उण भव री कुण वात पिछांणै

जो करणो व्है इण भव करलै
उण भव री कुण वात पिछाणै
अनुभव गुण सू जीवण भरलै
जग जीवै सौ जुग नै जाणै
उण भव री कुण वात पिछाणै

आख मीच मत दोड वटाऊ
पथ अजाण्यौ वैठौ हाऊ
निरख परख जुग माय उतरलै
जद पहुचेलो ठीक ठिकाणै
उण भव री कुछ वात पिछाणै

सखरी सीख दिवी वावाजी
जिण जुग निसरी उण जुग ताजी
इण जुग हालै सौ हिय धरलै
मत ना मनै अकल अडाणै
उण भव री कुण वात पिछाणै

सुगणी भाग वडेरा भारी
गत रोकी जीवण री सारी
जुग परगत साथै पग धरलै
दिव दिव जीवण पथ बखाणै
उण भव री कुण वात पिछाणै

सदा-वत परिवरतन साचौ
भाग नही जीवण नै वाचौ
जीवण गुण भवसागर तिरलै
जागरुक जुग चढचौ उफाणै
उण भव री कुण वात पिछाणै

जुग जीवण कण कण में हालै
जो जीवै सो चढ़ै उछाळै
संग जुगा री सुध-बुध चालै
जीवै सो कद मरै विछाणै
उण भव री कुण बात पिछाणै

सोच समझ रे मिनख सयाणा
जुग-जीवण परगत रा बाना
जुग-जीवण रग रोम विचरलै
जुग जाणै सो जीवण माणै
उण भव री कुण बात पिछाणै

परगत जीवण नै परणाम

मजल समै, गत री सग्राम
परगत जीवण नै परणाम

औ बिरमाण्ड असीम समदर
आ धरती माटी री गोळी
उण पर कैद, हवा पर निरभर
गत सजोग मिनख री खोळी
खट री खामण, बडी कलाम
परगत जीवण नै परणाम

जग री ग्यान अगाडी लेग्या
जीवण री सकड़ी सींवा में
मथण कर जीवण री देग्या
अनुभव रस जग रा जीवा में
जन मन चमकै थारो नाम
परगत जीवण नै परणाम

जुग-जुग मोटा मिनख जलमिया
जुग जीवण नैं पथ बतावण
गिण पग-पग पड़पची पनप्या
पथ पक्या सगळा फळ खावण
जीवण सबळ बण्या लगाम
परगत जीवण नैं परणाम

इण जुग बीती सौ सब जाणैं
भारत ऊगौ जिगमिग तारौ
उण सोध्यौ सत मारग जूनौ
वौ हाकम रौ दंड सहारौ
धवळी टोपी धन-बळ धाम
परगत जीवण नैं परणाम

याद करा मोटा मिनखा नैं
सतमत पागी समझ सयाना
त्यागा भरम-भाव तिणखा नैं
सदावत सतमत रा बाना
बधै ग्यान रौ आगैं काम
परगत जीवण नैं परणाम

थोड़ी आपरी सुध भूल

थोडी आपरी सुध भूल, जग नैं निरख, सुख म झूल

थारौ दरद कोनी ख्यात, जीवण जूण सूं उपरात
सुख दुख मान नैं अपमान, देवैं गत जुगत नैं भात
पग-पग सुगध नैं दुरगध, रूडा थोर माथै फूल
थोडी आपरी सुध भूल, जग नैं निरख सुख मे झूल

धरती धान धन री खाण, तपतौ जळ चढावै पाण
फूटा बीज ऊगैं रूख, खोदी धूळ देवैं डाण

मैणत मिनख री मरजाद, भेळप भाग दे गें सूळ
थोड़ी आपरी गुध भूल, जग नें निरख सुख में झूल

हिळमिळहेत री दे हान, टिपकण दे छिरयोड़ी आंन
जिण में रग, धुन नें म्न, उणरा विसरजा नख दान
आणद पीड री परसाद, काढा पुसप ग रस मूळ
थोड़ी आपरी गुध भूल, जग नें निरख सुख में झूल

करमां री लकीरां नैं

करमा री लकीरा नै कायर सीस निंवासी
पिण सुळझ्या सवळा नैं सुभ मारग मिळ जासी

रीत-भात री डर करघा सू जनम अकारथ जावै छै
खूंटै बंधिया ढोरा रैं ज्यू निकमा चक्कर खावैं छै
कूवैं पडिया हीरा नैं कुण सूरज परखासी
करमा री लकीरा नै कायर सीस निंवासी

बाभीमा री भोळावण सू पूछ पकडली पाडै री
मारग काटण आस राखणी फूटी टूटै गाडै री
हाथ बिखेरया हीरा नैं परका कुण सिरकासी
करमा री लकीरा नैं कायर सीस निंवासी

पिंडतजी रा पोथी-पाना ठग विद्या रा ठागा है
साधू पडा जग गाडै में जुतिया भाठा ढागा है
अैं ओझा अक्कल री सीरा नैं खाडै में खडकासी
करमा री लकीरा नै कायर सीस निंवासी

मैल-माळिया मोटर वाळा विना काम रा ठाटा है
कमतरिया री छाती ऊपर अैं चुणियोडा भाटा है
पोखी मन या खीरा नैं झूपा लाय लगासी
करमा री लकीरा नै कायर सीस निंवासी

उण जूनै मारग क्यू जाणौ जो ले डूबैं खाडै म
कूदया तिरस बुझैला कीकर कादै भरयै नाडै मे
पोहरो सूप्यौ अमीरा नै मूतोडा नै खासी
करमा री लकीरा नै कायर सीस निवासी

लारै जोता मारग चालै बाग दात रगीजैला
मूवा बाप रै करै छतरिया बारा टावर भीजैला
मागया ढोल मजीरा नै गीतडला कद आसी
करमा री लकीरा नै कायर सीस निवासी

मोच समझनै मारग लेणौ फेर चालणौ हिम्मत कर
धन माया अर कुटब कबीलौ रीत-भात दुनिया रौ डर
तोडौ सब जजीरा नै कटै गळै री फासी
करमा री लकीरा नै कायर सीस निवासी

मिवाणा री किलौ १९४०

भूल भरम रौ डर भागण नैं

भूल भरम रौ डर भागण नै, मिनख घडयौ भगवान
जुगा-जुगा सू भगती राखी, दे माखण पकवान
धन खोदै वै निरणा रहग्या, मैला मागै मान
हुकमत नै धन धूत दलाली, सैं चरणी वरदान
अधारै सू डरपण लाग्यौ, मिनख तणौ अग्यान
भून जण्या माडाणी वणग्या, पडपची परधान
जाण बधी ज्यू अण जाणी री सीव चढी असमान
वेल बधी जद भूत प्रेत री, जनम लियौ भगवान

समझ जगत मे सार

आ समझ जगत म सार, वगाऊ वीरा पग धर सोच विचार
आ समझ जगत मे सार

समझ बिना सतजुग समैं, रे बळि राजा गयौ रे पताळ
अवतारी वावन वण्यौ रे वीरा, कर राजा सू जाळ
वळि असुर जमारौ पायौ, वावन किरतार बणायौ
जिण कपट कियौ ईस्वर बण्यौ रे बीरा वळि डूबौ मझधार
आ समझ जगत में सार

त्रेता जुग रै मायनैं रे वीरा, राम तणौ ससार
छळ बळ सू वाली हत्यौ रे बीरा लका कीन्ही छार
जिण घर रौ भेद गमायौ, जग उणनैं भगत बणायौ
औ रावण नैं राकस कह्यौ रे बीरा, राम हुवौ अवतार
आ समझ जगत में सार

द्वापर में महाभारत मच्यौ रे बीरा, हाथ हाय नैं खाय
भीखम द्रोणाचार नैं रे बीरा, छळ सू दिया रे खपाय
जिण छळ सू करण मरायौ, उण परमेसर पद पायौ
आ कूड कपट सू किसन री रे बीरा, घर घर जै जैकार
आ समझ जगत में सार

कळजुग हृदा मातमा रे वीरा, माडी धरम केरी हाट
जग झूठौ सत आपरौ रे बीरा, ठग विद्या रौ ठाट
कोई अग भभूत लगावै, कोई मठाधीस बण जावै
औ सरग नरक समझायनैं रे बीरा, निसक करै वौपार
आ समझ जगत में सार

आज किरत-जुग आवियौ रे बीरा, घर घर अकल पडाव
जग ठगनैं परताणियौ रे वीरा, साध गमायौ साव
अब सगळा मारग जाणै, अणभणिया पोल पिछाणै
औ अधारौ अळगौ हुवौ रे बीरा, सैचन्नण ससार
आ समझ जगत में सार

८ दिसबर, १९४।

म्हे आया अकल बतावा नैं

म्हे आया अकल बतावा नैं
जनता रौ राज जमावा नैं

राजा देख समझली सगळी
गीत-भात रजवाडा री
सैंग ढोल मे पोल भरी है
धूम मची है धाडा री
धाडैत्या नैं धमकावा नैं
म्हे आया अक्ल बतावा नैं

बडा ठिकाणा जोर जतावैं
करै होड रजवाडा री
माडाणी महाराजा वणग्या
चाल-ढाल सैं भाडा री
बडपण रौ वैम मिटावा नैं
म्हे आया अक्ल बतावा नैं

मोटा अफसर लिवी मोटरा
अधबिचला घोडा राखै
छोटा रै आटै रौ घाटौ
रिसवत खाय धान चाखै
भवसागर भेद मिटावा नैं
म्हे आया अक्ल बतावा नैं

कामेती कणवारचा भाबी
राखैं ठाट नबावा रा
चवडै चालै चाल मुसद्दी
पडदै करतब काबा रा
पडदा नैं परा हटावा नैं
म्हे आया अकल बतावा नैं

सूम सेठिया वण्या सयाणा
लोई चूस मजूरा रौ
अेक अेक रा करै इकावन
सार सूतलै सूरा रौ
बोहराजी नैं भिडकावा नैं
म्हे आया अकल बतावा नैं

जोसी पडा गरू पुजारी
पीर पादरी साध जती
नितनेमां रा नखरा राखें
फूट झूठ सू फिरी मती
अणभणियां अकल उपावा नै
म्हे आया अकल बतावा नै

खेडा सैं खड़वा वाळा रा
मरत सैग मजूरा री
राज हवोडी दातळली री
बीती बात हजूरा री
सूतोड़ा सिंघ जगावा नै
म्हे आया अकल बतावा नै

कमतरियां रौ राज जमांणौ पड़सी

धरती डिगगी जूनें जुग री, खेडौ नवौ बसाणौ पडसी
नवौ बसाणौ पडसी भाया, जोर लगाणौ पडसी

करैं कमतरिया कसनैं काम, लूट ले जावैं दूजा दाम
विना मजूरी जीवें वारौ, खेत खपाणौ पडसी

भूख सू करमौ भूल्यौ मान, लोग लेग्या धरती रौ धान
हाथा रें बळ रौ करमें नै ग्यान कराणौ पडसी

कमाऊ मिनख ढोर सू हेट, मौज सू ठाला भरलैं पेट
या ठाला रौ ठोक पीजनैं, जोर हगाणौ पडसी

धरम अर रीत भात रा राज सुधारैं ठाला रा सैं काज
लाठा सू लाठाई करवा, आगे आणौ पडसी

मजूरी करे उणी रो माल, जमी उण री जिण री खडवाळ
या वाता रौ कमतरिया नैं भान करांणौ पडसी

मिनख सू आसग उतरौ काम, जरूरत मुजब मिळै आरांम
इणरी खातर कमतरिया रौ राज जमाणौ पडसी

साथियां जागण रौ दिन आयौ

जागण रौ दिन आयौ साथिया, जागण रौ दिन आयौ
औ ढळनौ दिन आयौ, जुग जगत पलटियौ पायौ

दिन बीत गया जद वैं मतवाळा, बाटा सिर लटका देता
धाडवियां सूं धोक भराता, वैंहता धन पटका लेता
जद कमतरिया रोता रह जाता, वैं करता मन चायौ
अै सगळौ जगत नचायौ, बेलिया जागण रौ दिन आयौ

वैं कमधज कादा रोटी खा, मुरधर नै माथा देता
घटका मे लड़ता, लाडधा सूं जुग-जुग अळगा रेहता
वैं धन धरा धरम-पथ साचा, जुग-जुग फरज बजायौ
वै सिर दे नाक बचायौ, साथिया जागण रौ दिन आयौ

अब तरवारा भोटी हुयगी, घोडा ठाकर बेच दिया
मोटर सूं कवळौ तन पडग्यौ, दारू जतर खेंच लिया
रणवका राडा चिन लागा, गुरगा काम जमायौ
मरदारा राज गमायौ, बेलिया जागण रौ दिन आयौ

वै चारण चाटै नी हिन्नता, कडवी बात सुणा देता
राज तेज रौ डर नहीं लाता, साचौ कवित बणा देता
अब बारहठजी मरजादा भूल्या, कविता कुजस कमायौ
अै जाचक नाव दिरायौ, साथिया जागण रौ दिन आयौ

जद रा सेठ मिनख हा अलगत, हाळया सूं हिळमिळ रहता
खाता धाप पूठ नी भरता, सै सुख-दुख भेळा सहता
जद हरचौ-भरचौ सगळौ जग रेहतौ, वित धन-धान सवायौ[1]
तद लोक परम सुख पायौ, बेलिया जागण रौ दिन आयौ

सेठा मे कुछ जतु जनमिया, हाथ-हाथ नै खा जावै
मोटा मगर कुटुब नै खावै, छोटोडा रळता जावै
भूखा मर हाळी कमतरिया, सगळौ भार उठायौ
सेठा पेट बधायौ, साथिया जागण रौ दिन आयौ

1 नित धन धान सवायौ

वै जूना हाकम चपडासी, करता राज दिलासा दे
अब वै वणग्या कलम कसाई, धन पधरावै धासा दे
अै साम-दाम दड भेद री, जबरी जाळ फैलायौ
अै जाहर जुलम जमायौ, वेलिया जागण री दिन आयौ

समझ विना सब लोक मुलक रा, भूत प्रेत सू डर जाता
बामण भोपा उधम मचाता, माल मुफ्त रौ वै खाता
भोळौ लोक भरम सू डरतौ, ठाला धन पधरायौ
वै सगळौ मुलक रुळायौ, साथिया जागण री दिन आयौ

बामण राज सेठ करमा नै, जुगानजुग सू चीथ रह्या
पण अब चेत गया कमतरिया, वै वरतारा बीत गया
हडबडाय हळवाणी वाळा, रण री सख वजायौ
अै जबरौ जग मचायौ, वेलिया जागण रौ दिन आयौ

बराबरी री आज जमानौ, अब कुण छोटौ नै कुण मोटौ
दो हाथा री खाय मजूरी, वौ निकमा सू नित मोटौ
अै गिणती मे गहरा कमतरिया, वै हथियार उठायौ
हिम्मत सू कदम वढायौ, साथिया जागण रौ दिन आयौ

१६३६, जोधपुर

औसर बीत्यौ जाय

आळस छोडौ कमरा बाधौ
साथी, औसर बीत्यौ जाय
साथी, औसर बीत्यौ जाय
भायला वैरी ऊभौ आय

उजडग्या रूस रुमानिया देस
चीण री बिगड रह्यौ है भेस
आ पूच्यौ अपणै फळमै
साथी, निवग्या ज्यानै खाय
आळस छोडौ कमरा बाधौ
साथी, औसर बीत्यौ जाय

जापानी बोलै मीठा बोल
कूट नै आजादी री ढोल
देय दिलासो कठ काटसी
साथी, भोळा नैं भरमाय
साथी, औसर बीत्यौ जाय
भायला वैरी ऊभौ आय

मच्यो है बरमा में घमसाण
निमड्यौ बगालै रौ धान
धनवाळा सब धान दबायौ
भायला, निरधन भूखा धाय
आळस छोडौ कमरा बाधौ
साथी, औसर बीत्यौ जाय

बिगड्यौ देनगिया री डोळ
बिकै धीवडिया दमडी मोल
सैंग जगत नैं राख बणासी
साथी, लगी पेट मे लाय
साथी, औसर बीत्यौ जाय
भायला, वैरी ऊभौ आय

सरग है सबळा नै ससार
नरक में निबळा तडफणहार[1]
चाकर बण वैरी सू निवणौ
भायला, देसी मान मिटाय[2]
आळस छोडौ कमरा बाधौ
साथी, औसर बीत्यौ जाय

रूस में लाल फौज री चाल
बणी है सैंग जगत री ढाल
थें ई ऊठ पगा पर ऊभौ
साथी, जूझौ जोर लगाय
साथी, औसर बीत्यौ जाय
भायला, वैरी ऊभौ आय

---
[1] मे निबला जीवण हार
[2] देस डुबाय

भेद सब जात-पांत रा भूल
  कळै नै काटौ जड सू मूळ
जापान्या री जडा उखेलौ[1]
  साथी, धरती दो धूजाय
भायला, औमर बीत्यौ जाय
  साथी, वैरी ऊभौ आय

मिवाणै किलौ, १९४०

साथी मागै सौ मिट जावै

साथी मागै सो मिट जावै
लडभिड ले लै सो जी जावै

धन धरती धणियाप किणी री, कुण खोदै कुण खावै
अेक फिरै अधराणी पगरखी, तौ नव नागा ई रह जावै
साथी मागै सो मिट जावै

माटी नै भाटा काटा नै वाटा सू, कचन लोग कमावै
जुग रा बूझागड हीरा ई हामै, नै मिरतू रै भोग लगावै
साथी मागै सो मिट जावै

रूपै री साकळ सू म्हावत बधिया, माटी रा देव चढावै
काचै सूत वधे गज रै जद, बात समझ म आवै
साथी मागै सौ मर जावै

अडवा री भोळप, झाडा री लालच हजारा री हाट जमावै
अडवा री अक्कल साम्रा नै उपजै तौ सारा नै पथ बतावै
साथी मागै सो मर जावै

सारा रौ साढौ, सारा री भिषवण, सारा रै सुख साल्ह धावै
काम करावै करार प्रमाणै, नै चईजै उतरौ मिळ जावै
साथी मागै सो मर जावै

---

[1] जापान्यां रौ अग उखाडौ। जापान्यां रौ जोर हटावौ

अब देखौ मूरख रौ पांणी

सैंणा री सैं पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख रौ पाणी

सैंणा जिणनै न्याव बतावैं, नेम घड़ै कानून बणावैं
बहु जन भूखौ गिणिया खावै, धणिया नै धाडेत दबावै[1]
मैल बणै उजड़ै लख ढाणी जद देखौ मूरख रौ पाणी
सैंणा री सैं पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख रौ पाणी

सैंणा परगत ढोल घुरावैं, सिर होमण री हाक लगावैं[2]
इणनै भागै उणनै खावै, जद अै दो पग आगै जावै
तेज चलै उण री जग हाणी, जद देखौ मूरख रौ पाणी
सैंणा री सैं पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख रौ पाणी

या सैंणा री समझ सयाणी, कमरा कूंची न्याव जवानी
बिणजै तन बळ तेज जवानी, रिजक वधावै भूख भवानी
खोद्ये धन धणियाप जमाणी, जद देखौ मूरख रौ पाणी
सैंणा री सैं पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख रौ पाणी

जद मैफल मूरख री जमसी, धन खोदै सौ महला रमसी
अक्ल हुनर रौ झगडौ थमसी, निकमी नफा नवाबी नमसी
छिनक न मैणत रैवैं अडाणी, जद देखौ मूरख रौ पाणी
सैणा री सैं पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख रौ पाणी

सपत सब री सकळ समानी, पलटै सौ कानून किराणी
आज भिखारी तडकै मानी इण जुग मूरख उण जग ग्यानी
जन-बळ जागण जोत जगाणी, जद देखौ मूरख रौ पाणी
सैणा री सैं पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख रौ पाणी

मूरख रौ मन सरळ सुखारी, मैणत सुख साधन इदकारी
जन-मन रजन सपत सारी, कठण काम री कीमत भारी

१ धाडेत डावै
२ सिर होमण री सायत लावैं

डर सू जन री नाड छुडाणी,[1] जद देखौ मूरख री पाणी
सैंणा री सै पेठ पिछाणी, अब देखौ मूरख री पाणी

३१-३ १९५४

मत जा साथी पंथ पुराणै

मत जा साथी पथ पुराणै
मत रण तुरगा रा असवारा नै, मोटर अजण मे ताणै

जिण मारग परताप पधारया, जिण हळ दुरगै काज सवारया
उण जूनै मारग मू मायी, पूग न पामी आज ठिकाणै
मत जा साथी पथ पुराणै

उण जुग धरती ही ठकराणी, धाय नही घर री धणियाणी
तरवारा री धाक दब्योडी, धरण दाब ली राज घराणै
मत जा साथी पथ पुराणै

किणरो मुलक कठै ही जनता, जन सू इदक कुळा री ममता
मुगला सू सावत रणबका, कुळ पर कटग्या जगती जाणै
मत जा साथी पथ पुराणै

आज मुलक आजाद अेक है, कुळ सू इदक मसीन मेक है
बरसगाठ जळ बाध बीजळी, कळा बधै जद लोग उजाणै
मत जा साथी पथ पुराणै

पूज बडेरा, सीस झुकालै, टेम मिळै वारा जस गालै
पण थू क्यू दिल्ली सू लडले, क्यू ले कटक चढै अमराणै
मत जा साथी पथ पुराणै

आगै देख मड्या पग ताजा, हिळमिळ मिनख मजूरी राजा
हुनर हेत सू बदळै जीवण, जीवै सो जुग री गत जाणै
मत जा साथी पथ पुराणै

---

[1] धन सू जड री नाड छुडाणी

साथी ! आ जो चिलक घणी है, थनै भुलावण भीत वणी है
इण जुग रा जूझार लुकावण, मत जूना जूझार वखाणै
मत जा साथी पथ पुराणै

गई काल मे तत नही रे

गई काल मे तत नही रे

मिनख जूण जीवण जुग बरणै
गई काल मे तत नही रे
जगत लुटचौ सैणा रै सरणै
पाछ पगा रौ अत सही रे
गई काल मे तत नही रे

पूठ कनी पछी क्यू झाकै
दिन लाग्या फळ सखरा पाकै
अनुभव पाछै ग्यान अगाडी
चढण वधण सू जण रही रे
गई काल मे तत नही रे

जिण दिन राछ मानखै झेल्यौ
पसु जीवण नै अळगौ मेल्यौ
जद सू मिनख जूण री भावी
हथ-मैणत री विगत वही रे[1]
गई काल म तत नही रे

जुग री मोटयारी साथी चढी रे उछाळै

जुग री मोटयारी साथी चढी रे उछाळै
जनता री मन सागर छोळा खावै रे, साईना साथी
खावै रे मन राजा माझी, आळस अळगौ मेलौ रे

---
1 दो हाथा री विगत बही रे

जागै नै जा पूगै वानै मिळसी रे वापौती
पिछडै सो रीतौडा पाछा आवै रे, सांईना साथी
आवै रे मन राजा माझी, पाछा मती पोढौ रे

सैंग जुगा सू साथी मिळी रे आजादी
पूरब पुरसारथ् सूरज ऊगौ रे, साईना साथी
ऊगौ रे मन राजा माझी, हरख वधावौ रे

अडव मिनख साथै चढची रे मजूरी
डूंगरिया हिलग्या नै समदर हटग्यौ रे, साईना साथी
हटग्यौ रे मन राजा माझी, हरख वधावौ रे

जुग री हालण साथी करै रे उतावळ
जनता रै जीवण मे आधी आई रे साईना साथी
आई रे मन राजा माझी, आगै आगै हालौ रे

झूम-झूम नै गावूं

म्हारी उमर रौ उभार, वारहै जोबनिये रौ भार
झेलण, झूम-झूम नै गावू
म्हारौ साईनौ हुसियार, म्हारौ मन चावै मनवार
कीकर बिना वुलाया जावू
म्हारौ मन घोडै असवार, जोडै आभै उडवा त्यार
किण विध साजन नै समझावू
मुड-मुड पूठै भाळै ओ, अटक-अटक नै हालै ओ
हिवडै रौ दरद किणनै दरसावू
वैणा सू बूतळावै कोनी, सैनी सू समझावै कोनी
झालै रै समचै समदा पार सिधावू

साथै हरख सिधावूं

म्हारो आलीजो ले जावै जठी हसती-हसती जावू
म्हारो साईनो सिधावै, उणरै साथै हरख सिधावू

पाछा काई झाको, आगै जीवण झोला देवै सा
हवळा काई हालो, जन रो जोर उछाळा लेवै सा
म्हारो साथीडो सभावै, धरती सिर माथै धर लावू
म्हारो साईनो सिधावै, उणरै साथै हरख सिधावू

आडा-डोढा काई देखो, सगळो साथ अगाडी है
अेकण सू उजडेला जीवण, दो पेडा री गाडी है
म्हारो मन राजा समळावै, पल मे उळझी नै सुळझावू
म्हारो साईनो सिधावै, उणरै साथै हरख सिधावू

मोरा सू उतारो धण नै, हाथ पकड ले हालो सा
सेंजोडै पधारो, करता जीवण म उजियारो सा
म्हारा माहजी मुळकावै, मस्ती मोद भरया सुर गावू
म्हारो साईनो सिधावै, उणरै साथै हरख सिधावू

कमरां बंधी वंधाई राखौ

थानै बार-बार समझावू, साजन था पर वारी जावू
कमरा बधी बधाई राखौ
थारै सिर सू भार हटावू, भुज मे दूणो जोर वधावू
हिवडै हूस वणाई राखौ

वळ-बळ कठण काम री वेळा, सै दिन मिनख मजूरी मेळा
जग रै मुख साम्ह जग पलटण, हिळमिळ मिनख कमावै भेळा
पगल्या साथै ई चढ जावू, मारग साथो-साथ वणावू
जिवडै जास जमाई राखौ
कमरा वधी बधाई राखौ

जन रै जोर मिळी आजादी, मन रै आडी पाळ हटादी
तन रै वळ रा पाख उघडग्या, पग री वेड्या सैंग तुड़ादी
साथै खाच खुरी आ जावू, जन नै समझू नै समझावू
हरदम हेत हिलाई राखो
हिवडै हूम वणाई राखो

तन री नाक्त पूगी मागै, धन री धाम हजूरी भागै
जन रै जायोड़ै जीवण सू, मरदा मुलक मजूरी मागै
पग-पग थारो साथ निभावू, कमतर जोडै खड़ी कमावू
पथ मे जोत जगाई राखो
ममरा वधी वधाई राखो

सगळा खावै अेक कमावै, वो घर कीकर ऊचो आवै
आधै जीवण री जोडायत, सूता मुलक पताळा जावै
मुख सू घूघट परो हटावू, नैणा मिनखपणो भर लावू
धण नै साथ मभाई राखो
हिवडै हूम वणाई राखो

परण्या डरै मती

थू भीडा सू भय खाय परण्या डरै मती
वै जगत उबारै सूरमा, ज्यारा लड़ता रा सिर जाय
अै डरपोडा मर जाय, साजन डरै मती

अै लाठा भड वाजै घणा
अै दोरा दिन व्है देस रा, जद आहळाणो कर जाय
थू उण गेनै मत जाय, परण्या डरै मती

वा निपट निपूती मावडी
जठै पूत कपूता नीवडै, कोई धूमो सुण डर जाय
नर सूरा कद फिर जाय, परण्या डरै मती

वा गाच सवागण सोवनी
जिण रण वका भरतार सू, सगळी गाधा मर जाय
भल नाक रहै नर जाय, परण्या डरै मती

आ घ्रक मिनखादे पावणी
जद मूछाळा मुडदा बणै, कोई रण छोडै घर धाय
ज्यू पाका फळ खिर जाय, परण्या डरै मती

अै धन टाबर नै कामणी
ओ देसडलो डूबा थका, सै जीवतडा मर जाय
अै देस तिरया तिर जाय, परण्या डरै मती

१९३४ ब्यावर जेल में

खातौ बोहरां सू मत घालौ

थानै समझावू सिरदार, खातौ बोहरा सू मत घालौ
ऊभी अरज करू भरतार, खातौ बोहरा सू मत घालौ

हा, हा घण खाता म्हे थोडौ खास्या, दस बीघा थोडा ई वास्या
हाजी, हाजी घर मे रहसी कीणौ चार, थानै समझावू सिरदार
खातौ बोहरा सू मत घालौ

हा, हा फाटा गाभा म्हे सी लेस्या, सीयाळै तप सू जी लेस्या
हाजी, हाजी लाटा नवा न्गूगडा त्यार, ऊभी अरज करू भरतार
खातौ बोहरा सू मत घालौ

हा, हा अै निवता चालै, मीठा भाखै फेर पेट मे छुरिया राखै
हाजी, हाजी मिळिया कदै न छोडै लार, थानै समझावू सिरदार
खातौ बोहरा सू मत घालौ

हा, हा बीज बाजरी मडिया देसी, ऊपर दूणा पईसा लेसी
हाजी, हाजी करडी पडै ब्याज री मार, ऊभी अरज करू भरतार
खातौ बोहरा सू मत घालौ

हा, हा मीठा बण सब घर खा जासी, विपत पड्या टाळी दे जासी
हाजी, हाजी थारो लाटा ताई रौ प्यार, थानै समझावूं सिरदार
खातौ बोहरा सूं मत घालौ

हा, हा भिनख मरया अै दौड्या आसी, माडाणी मौसर करवासी
हाजी, हाजी मगळो रुळ जासी परिवार, ऊभी अरज करूं भरतार
खातौ बोहरा सूं मत घालौ

हा, हा, ढोर ढीमडा सूं घर चालै, अै लिख लेसी आहीवाळै
हाजी, हाजी डूबैला घर काळी धार, थानै समझावूं सिरदार
खातौ बोहरा सूं मत घालौ

हा, हा सापा नै क्यूं दूधज पावौ, दुख दाळद क्यूं नूंत बुलावौ
हाजी, हाजी बाता सत भाखै घर नार, ऊभी अरज करूं भरतार
खातौ बोहरा सूं मत घालौ

मुमई १९३५

म्हनै फोड़ा मती घाल

परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ
जठै मोट्यारी चहीजै, उठै थारो बोझ सभाळ
निजरा मैणत सूं मत टाळ, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

दफ्तर मील, खेत नै खाण, मोटर रेला रा बहाण
सगळा करै दोवडी मैणत, ज्या माथै मुलक रा प्राण
करदे अपणो काम कमाल, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

सगळा कम खरचै धन सचै, गोळ्या भरणी तोप-तमचै
इण पुळ मुलक तणै दरद, सगळी बचत खजानै खचै
सगळौ सोनौ खोद निकाळ, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

वानै पूछै हिन्दुस्तान, ज्यारी जिन्सा भरी दुकान
किण रै काम किसै दिन आसी, अन-धन गाडचा व्है धनवान
वय् अे गधा बध्या घुडसाळ, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

टाबर बूढा नै मोटचार, सभग्या सगळा ई नरनार
सगळा दौड मोरचा सामै, झेली कामणिया तरवार
लारै रहता लागै गाळ, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

धरका हिंदी फौज जवान, जबरा जाहर जग जहान
सभगी छोरचा ले बदूका, कतरै वै दुसमण रा कान
लडता खेत रह्या सौ न्याल, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

कमरा वाध, मती मन मार, हुयज्या सगळा रै सग त्यार
म्हैं ई लारोलार हाल् छू, हाथोहाथ लिया हथियार
अन धन तन री करा उछाळ, म्हनै फोडा मती घाल
परण्या आगै आगै हाल, मत ना ढळै पाछली ढाळ

निवतौ

आ रेत हुई रुतमाती
साईना ! थारी धरण बुलावै घरै आजा
आ वाय चलै बरसाती
रगराजा ! थारी कामण घबरावै घरै आजा

नवी जोड थारी नै म्हारी
नवी जोड नारा री
आभै नवा वधाऊ दौडै
चढी उमग सारा री
रुतहाळी ! थारा वेल्या उकळावै घरै आजा

इण जुग रा भागीरथ लासी
सूखै थळ मे पाणी
बाग-बगेचा सू ढक जासी
खेड खेतडा ढाणी
मन-माळी ! थारी क्यारचा कुमळावै घरै आजा

आठ मास परसेवा वीत्या
अब विरखा रुत आई
धन धीणो धरती सै तडफै
पुळ पुळ तिरस बधाई
धन-गोरी ! थारी गाया रभावै घरै आजा

नगर गाव खेडा मे लाग्या
जन-मैणत रा मेळा
नर-नारी कमतर म कूदचा
जन-कारज मे भेळा
बळ हाथी ! थारी मरवण सरमावै घरै आजा

मरदा आगै होलौ

आयौ है वगत अमोल
मरदा आगै होलौ

दुनिया री बदळ रही है चाल
वा बुधबळ सू तोलौ[1]
देखौ हिवडै री आख्या खोल
मरदा आगै होलौ

घर री आजादी खातर
प्राण दै सब पाप धोलौ
परवस जीवण री काई मोल
मरदा आगै होलौ

१ वा अक्कल सू तोलौ

अै खेत आध मे बाटैं, नै लाग सवाई लाटैं
अै दूध दही घी साग खोसलै सारौ
करसा नै लागै खारौ
हद बेगारा री मार पड़ै
मिनख जिनावर अेक धड़ै

अै हाकम कलम कसाई, मछी चपडासी नाई
अै हवलदार कणवारचा भावी खोटा
करसा रै मारै सोटा
थाणायत बोलै कूड घणा
करसा रा करम कल्ड घणा

अै नित रा फोडा घालै, डरिया सू काम न चालै
इण धरती री धणियाप खरी हाळी री
फुलवाडी है माळी री
धन सपत सैंग मजूरा री
अब बीती बात हजूरा री

कमगर केसरिया साजै, करसा रौ धूमौ बाजै
या कमतरिया रा हाथ धारिये धरिया
घर भजला घोडा खडिया
जम जासी राज मजूरा रौ
औ पडतो वगत हजूरा रौ

अै जाय जठै जुग जावै, अै जग रौ भार उठावै
या कमतरिया रा हाथ हेम सू जडिया
तद अै क्यू भूखा मरिया
कविराजा इण रौ म्यानौ दो
परमसर थें हरजानौ दो

१९३६ दिल्ली

जागौ जागौ रे कमतरियां

[तरज दौलजी]

जागौ जागौ रे कमतरिया, गाढी नींद सू रे
आ दुनिया दौडी जावै, बिरथा जावै छै जमारौ

सूता सँग पीढिया बीती, बिखरी सपत सारी
सूना डेरा करै सरणाटा, सुध-बुध सरम बिसारी
साथी, थे तौ सूता रे गाढी नींद मे रे
अे गीदडला गटकाया जावै, जीवतडौ तन थारौ
जागौ जागौ रे कमतरिया बिरथा जावै छै जमारौ

सूरवीर माया दे करलै, धरती री रुखवाळी
पिण मनचलिया री भाभी, निबळा री घर वाळी
साथी, लाठा धणिया सू धरती खोसली रे
अे दो टुकडा मे सूम-सेठिया, धन पधरावै सारौ
जागौ जागौ रे कमतरिया, बिरथा जावै छै जमारौ

भणियोडा री डाणत बिगडी, ठग बिदिया बध चाली
अे आधा हुआ राज रा चाकर, आधा अकल निकाळी
साथी, रोटया घाली नै, झोळिया झेलली रे
अे माखण माखण मागै माठा, धरम करै परवारौ
जागौ जागौ रे कमतरिया, बिरथा जावै छै जमारौ

सबळा रै सुख सारू पडगी, निबळा माथै भीड
अे नेता निपट नचीता निरखै, दूखै जिणरै पीड
साथी, पिंडत परखा रै दुख सू दूबळा रे
अे कपटी कलम चलाय वधावै, जग मे भरम अधारौ[1]
जागौ जागौ रे कमतरिया, बिरथा जावै छै जमारौ

घर री अक्ल दौडगी चरवा, आख्या वधगी पाटी
अे टाकर सेठ सिपाई लीडर, सँग खोपडी चाटी

१ बण बिदिया रो अधारौ

साथी, अक्कल नै घर रै खूटै बाधली रे
सगरा मारग सीगै ई, निबळा री निस्तारी
जागो, जागो रे कमतरिया, बिरथा जावै छै जमारो

दूजा सं मगत नैं खरचै, अर थें मगत निपजावो
पिण माल मलीदा खाय निठाला, थें टाबर तरसावो
साथी, धरती करमा री नै माल मजूरा रो रे
थे दोनू हिळमिळ चालो, बदळो दुनिया री बरतारो
जागो जागो रे कमतरिया, बिरथा जावै छै जमारो

हे मारवाड़ रा करसां

हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो
दे सारै जग नै रोटी, क्यू अधभूखा रह जावो

थें गवू बाजरी जीरो नै दूध दही निपजावो
क्यू बासी घाट राबडी नै छाछ मळीचो खावो
कुछ करणो पडै न हीलो, जद ठाकर जाडा पडग्या
क्यू मुडदा सीस उचावो, क्यू निकमो बोझ उठावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

थें चोखो हासल देवो, नै उण पर लाग सवाई
थें बासू डर नै भाई, क्यू नीचा निवता जावो
ठाकर थे सुण लीज्यो, थारो सै गाजो-बाजो
आ करसा बिन रुळ जासी, मत थारी धूळ उडावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

रहसी खेडा अणखडिया, जिण सायत करसा रुळिया
दारूडा बद हुय जासी, टुकडा रो मिळै न ठायो
आ अमल अखाडा-बाजी, जूतो ले लारै लागी
आ आफ्त मैलो आगी, देही रो दाग मिटावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

अे वाणिया मेन न जोतैं, नैं कमतर करै न दूजो
वैं तो लिछमी मे झूतैं, थें नित रा ब्याज मडावो
महाजन लालच नैं त्यागो, अणचीती सू मुख मोडो
थें ज्या रूखा पर बैठा, क्यू वारी जडा सडावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

बोपारिया थें ई चेतो, क्यू करसा नैं तडपावो
वण अैलकार रा गुरगा, क्यू घर रौ लोक मरावो
जद आसामी ग्ळ जासी, डूबत मे खाता जासी
धन-धान कठा सू आसी, क्यू घर रा पूत रळावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

अे हाकम नै चपडासी, लोका री नाड दबाई
इण मुन्तडा मडळी नैं, क्यू डरता मीस झुकावो
लै माग पूख नै होळा, रिसवत सू भरलै झोळा
क्यू अैलकार अफसर नै, घर दीवो जोय बतावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

थें घर ग घर मे फूटो, क्यू अेक दूजै नै कूटो
छाटा-मोटा झगडा लै, क्यू दौड कचेडी जावो
थें सुणो राज रा अफसर, मत जुलम करो करसा पर
अै है जग रा अदाता, मत यारी नीव हिलावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

चौधरिया थें ई चेतो, घरका नैं मत कूटावो
वण हवलदार रा चेला, क्यू घर रौ भेद बतावो
थै पच चौधरी खोटा, घरका री गरदन रोसै
यारी तिकडम तिडकाता, झट खाडै गे खडकावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

पचा थें धरम विचारो, खावण रौ लालच छोडो
इण न्याव काण री गादी रै, काळस क्यू पोतावो
थें अणपढ रह्‌या जिणरा, अै फाडा पडै हमेस
भूखा तिरसा ई रहनै, टाबर नैं इलम पढावो
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावो

साधू जोगी नै बामण, मत कार सरम री छोडौ
भोळी-भाळी जनता नैं, मत करमा हाथ फिरावौ
अै धरम-धाडवी धाप्या, सब रगत चूसनै थारौ
सै नाड-नाड मे चिपगौ, आ जोका नैं झटकावौ
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचो ध्यान लगावौ

थें ज्यारो लूण अरोगौ, वानै दो सीख करम री
जद *आछा लागो भाई, नीतर खोटी गत पावौ*
अनधन रा मालिक करसा, जन जीवण तणा रुखाळा
सै माल मजूरा हाथै, हिलनैं हळ कळ हडकावौ
हे मारवाड रा करमा, कुछ सोचो ध्यान लगावौ

थें सुणी वात जो म्हारी, तौ साची विगत बताऊ
कायर पडग्या जिण सू, थें गुण गावौ नैं दुख पावौ
हे मारवाड रा करसा, कुछ सोचौ ध्यान लगावौ
दे सारै जग नै रोटी, क्यू अधभूखा ई रह जावौ

सिवाणै रौ किलौ, १६४०

रण गाथा

आ लोई लथपथ सुणजौ कथा पुराणी
रण गाथा राजस्थान तणी जुग जाणी

जद इन्द्रप्रस्थ मे पाडव जिग रचायौ
दिगविजय करण दिस-दिस मे बधु पठायौ
जद जन तन धन सरवस पर सकट छायौ
जद धरमराज मरु भू पर नकुल चढायौ
जद रणवळ परख्यौ रण रघड री पाणी
आ लोई लथपथ सुणजो कथा पुराणी

भारत मे जागळ मरु भू मत्स्य गिणीजै
औ सिरै सिखर तीरथ आबू बरणीजै

जद मद्धम जुग मे मैणा मेर पुजीजै
वन परवत मरु भू, धीर नरा नै धीजै
कुछ अठै-उठै रजवाडा वण्या पठाणी
आ लोई लथपथ सुणज्यो कथा पुराणी

जद उत्तराखड सक हूण यवन दळ आया
भारत पतळा छत्रीगण निपट निंवाया
जद सुध बुध सखरी जन-समाज री काया
जो इण घर आया सरबस समद समाया
नवजुग जाग्रति रघड रजपूत पिछाणी
आ लोई लथपथ सुणजो कथा पुराणी

जद दिल्ली गढ रजपूत धजा फरराई
जद *कठण विपत अजमेरा माथै आई*
कण-कण धरती पर जूझ्या मेर सिपाई
पण अत जमी सगळी सिरदारा पाई
वै हाडौती मेवाड मरुधरा माणी
आ लोई लथपथ सुणजो कथा पुराणी

ज्यू-ज्यू आगै सिरदार चरण पधरायो
त्यू पग-पग मैणा रण रौ नेग चुकायो
पण भारी पड़यो रजपूता रौ पायो
जिण गढ चुणवाया धरती बध लगायो
जद लहरण लागी गढ-गढ सिंघ निसाणी
आ लोई लथपथ सुणजो कथा पुराणी

जद विपत विखर मैणा बणग्या वनवासी
जद मेर विटळ मैहरात बण्या गउग्रासी
सै बण्या धाडवी मारकूट मेवासी
रणलिछमी हुयगी रजपूता री दासी
जद राजस्थानी नींव बणी अधराणी
आ लोई लथपथ सुणजो कथा पुराणी

भाटीपो जागळ पूगळ सिंध दबाया
जद अमरकोट ढूंढाड मत्स्य मुरझाया

रजकण पर कटगी सूर नरा री काया
जिण सैं धरती पर रजपूती जस छाया
गढ नगर बसाया ढोर ढीमडा ढाणी
आ लोई लथपथ सुणजौ कथा पुराणी

जन-जीवण पर रजपूती रगत छाई
रण राजस्थानी सोभा बधी सवाई
अफगान मुगल जद थळ पर जखडी खाई
तद सिरदारा माथा री भेंट चढाई
बू-बेटया सीखी जौहर जोत जगाणी
आ लोई लथपथ सुणजौ कथा पुराणी

घर फूट अँस मुगला री जडा हिलाई
जद फौज मराठी दिल्ली पर चढ धाई
इण फूट-तूट म गोरा जुगत जमाई
रण-बळ म राजस्थान पडी निबळाई
वैं बण उकील घर माय घुम्या माडाणी
आ लोई लथपथ सुणजौ कथा पुराणी

जद छळ-बळ सू अगरेज बण्या अदाता
वैं जन-जोई पी जन नैं मूढ बताता
इण दुसमण री रजवाडा तोख उठाता
उण रा चाकर बण घर रौ लोक दबाता
सीखगा नरपत भाडैं तरवार चलाणी
आ लोई लथपथ सुणजौ कथा पुराणी

जद जुलम जोर सू गोरा जन-धन लाटै
जद राजा ठाकर हिल्या मोज रै चाटै
तद जग्यौ लोक-बळ रगत चढ्यौ सरणाटै
सवत चवदै री गदर चल्यौ गरणाटै
उण दिन सू लागी, किण रै हाथ बुझाणी
आ लोई लथपथ सुणजौ कथा पुराणी

जाग्ये जन-बळ सू गोरा रौ गढ तूटौ
रजवाडौ बणग्यौ राजस्थान अनूठौ

अब भवन बणाणौ निपट रयो है घूटौ
प्यारा कारीगर जतन करौ जम लूटौ
था हाथ रही जन-सासन नींव जमाणी
आ लोई लथपथ सुणजो कथा पुराणी
रण गाथा राजस्थान तणी जुग जाणी

मत भूलै रजवाड़ी भाई

जुग-जुग दिल्ली कीवी चढाई, मत भूलै रजवाडी भाई

इद्रप्रस्थ जद नाव धरायौ, धरमराज सिंघासण पायौ
पिण जिण दिन जिग्ग रचायौ, मरु भू माथै नकुल चढायौ
दिल्ली सत री मत बिसराई, मत भूलै रजवाडी भाई

दिल्ली गढ रजपूत चमकियौ, जद मैणा पर काळ धमकियौ
प्रिथीराज दिल्ली गढ छकियौ, राजस्थान रगत सू ढकियौ
दिल्ली कुळ मे लाय लगाई, मत भूलै रजवाडी भाई

जद अफगान राज पर धायौ, तौ सागा घमसाण मचायौ
रोम-रोम घावा सू छायौ, पण सागेडौ रीठ बजायौ
जबडी जद-कद दिल्ली खाई, मत भूलै रजवाडी भाई

मालदेव सू वैर पुराणौ, अकबर आख गड्यौ जोधाणौ
मारवाड मे पटक्यौ थाणौ, जबर मांचियौ खींचाताणौ
चद्रसेन सू राड मचाई, मत भूलै रजवाडी भाई

मारग राजा मान बतायौ, जद अकबर मेवाड मतायौ
रघड पग पग सीस चढायौ, औ कद किण सू दवै दवायौ
हळदी-घाटी ख्यात बणाई, मत भूलै रजवाडी भाई

मुगल राज डूबण जद लागौ, दिल्ली कियौ मराठा तागौ
लागौ सिर सुभटा रै दागौ, राजस्थान हुवौ सब नागौ
रजवाडा पर चौथ लगाई, मत भूलै रजवाडी भाई

छळ-बळ सूं गोरा गढ पायौ, जद वै मारग नवौ बणायौ
हाकम नाव अजट धरायौ, जन छाती मे साळ जमायौ
धन खायौ नैं कीवी बुराई, मत भूलै रजवाडी भाई

आज राज खादी खडखावै, नैं बाण्या रा तोख उठावै
दिल्ली जन री नाड दबावै, पूठ छुरी ढूढाड चलावै
ख्यात पुराणी नैं दुसराई, मत भूलै रजवाडी भाई

कुछ नैं दिल्ली दीवी दलाली, राजप्रमुख री चाल निकाळी
कर जनता री निपट हलाली, राजधानिया कर दी खाली
नवैं राज री साख घटाई, मत भूलै रजवाडी भाई

जद जनता रा वोट पडैला, उण दिन गाडौ आय अडैला
खादी-खड री खाल सडैला, जद बो थारै पगा पडैला
जद कीजौ पूरी भरपाई, मत भूलै रजवाडी भाई

निजर निराळौ राजस्थांन

निरख्या नैण निरमळौ लागै
निजर निराळौ राजस्थान
जिणरा मिनख मवेसी सागै
हिवडै वाल्हौ राजस्थान

आडावळ आडू सिर भूसण
मरथळ धोरा कचन कण-कण
आ थळ रतना री खाण
सोवन-थाळौ राजस्थान

सालर सीसम वास सुरगा
पग-पग डूगर पग-पग गगा
जळ-जीवण जिजमान
इमरत प्यालौ राजस्थान

आडावळ रा दो पसवाडा
जनता रै अन-धन रा वाडा
जन-जीवण वरदान
हरियौ आळौ राजस्थान

चवळ सतलज बाध जवाई
जळ विजळी कर करै कमाई
करसण करै जवान
सरग-सुगाळौ राजस्थान

धोरा पर धारा सळवाळी
झिलै रे वेकलू रेत सवाळी
सोवन समद समान
जीवण झालो राजस्थान

केर सागरी बोर मतीरा
मोठ बाजरी धन धरनी रा
अन-धीणै धनवान
नरम सवाळौ राजस्थान

रण मे रघड बात बिलालौ
सैणौ पिण मिनखा मतवाळौ
भुज मैणत सुलतान
मरद-मुछाळौ राजस्थान

जिगमिग जनम्यौ राजस्थांन

जिण सुपनै नै साचौ करवा
जुग-जुग जूझ्या जबर जवान
वौ फळग्यौ जनवळ जागण सू
जिगमिग जनम्यौ राजस्थान

घणा दिना लग घाल जुवाडा
परका रा घर भरया अचेत
डिगला धान कपास कमाया
पहर चीथरा खाई रेत
निपज गई ठाकर सेठा रै
पडग्या सैग अडाणै खेत
लाग-बाग हासल निजराणा
ठाकर लेता धान समेत
दूध दही घी साग उडाता
गुरगा करता गरब गुमान
जिगमिग जनम्यौ राजस्थान

सैंस बरस री सडचौ सिकजौ
गळचा पेच करता चरडाट
सरळ मानखौ जुत्यौ जुवाडै
भुखमरिया करता करळाट
गळी बजारा घर-घर लागी
सडिये स्याम-धरम री हाट
देवत हुवा राज रा चाकर
पीर-पुजारा हिलग्या चाट
आजादी री आंधी आई
उडग्या जुलम रा साज समान
जिगमिग जनम्यौ राजस्थान

मूत्यौ लोक जगायौ सेठी
पथिक पथ री करी पिछाण
वीर जवाहर मख फूकियौ
माणकलाल चढाई पाण
जमनालाल सिपाई पोस्या
जैनारायण लियौ निमाण
बापू हाथ पूठ पर राख्या
विचलौ वरग लडयौ घमसाण
तेजावत री पळी तपस्या
सरळ मिनख रौ जीवण दान
जिगमिग जनम्यौ राजस्थान

आज अमावस गई अधारी
हुयग्यो सैचन्नण ससार
वोट मिळधा सारा मिनखा नै
वणगी जनता री सरकार
जन नायक सिर बोझ झेलियो
जो राजावा दियो उतार
राजा टाकर जुग-गत जाणी
राज दियो जनता पर वार
हुकमत दिया जगत मे वधग्यो
राज रावळा रो सनमान
जिगमिग जनम्यो राजस्थान

अव जनता री वेड्या कटगी
खुलग्या काम करण नै हाथ
जिण गत जुग जूझार जीविया
उण गत जीणो सगळे साय
भेळा दो हाथा रै वळ सू
दुनिया सँग भरीजे बाथ
अेक मनै जन-बळ रै सन्मुख
किसै विघन री चलै बिसात
जीवतडी जाग्योडी जनता रै
जीवट सू कुण वळवान
जिगमिग जनम्यो राजस्थान

रघड इण धरती रा धायल
कठण काम री करै कडाण
धीणा धन अेवड पूरण सू
घास-फूस रतना री खाण
मण-मण कणक रेत कण कण म
खेत-खाण गे भरी कमाण
चूनो ईंट मसाला गैरा
सव कारीगर चुतर सुजाण
अव मुदार गजधर रै गुण पर
विराव वणगी मैल-मुकाम
जिगमिग जनम्यो राजस्थान

जिण धरती रै कण-कण माथै
मूड कटाया लड़ता जूझार
जिण धरती गढ़-गढ़ माथै
चढ़या बिखरग्या कटक हजार
जिण धरती रै घर-घर माथै
जौहर करगी नाहर नार
माहेला उण त्याग भोम रौ
आज पड्यौ है था पर भार
अब देखा किण म पाणी है
कितरौ बळ है कितरौ ग्यान
जिगमिग जनम्यौ राजस्थान

राजस्थान दिवस, १६५६

जागौ रे जागौ लोकड़ां

जागौ रे जागौ लोकडा, सरजौ, सोनै रौ सुपनौ राजस्थान

गोरा गढ ढहणा, जनता रा नायक रूपाळा
ड्योढ्या पर थारै अलख जगावै सिरदार
त्यागौ रे त्यागौ तखत नै, रूडा राजविया रवदौ राजस्थान
जागौ रे जागौ लोकडा, सरजौ, सोनै रौ सुपनौ राजस्थान

जतन सू माग लिया सब राज
सप सू सुळझ गियौ सब काज
भागौ रे भागौ फूट सू, राखौ हिवडै मे हरचौ राजस्थान
जागौ रे जागौ लोकडा, सरजौ, सोनै रौ सुपनौ राजस्थान

जनता रै नायक परसेवा सीची इण री साख
जूझारा हदी माटी मे पाकी इमरत दाख
आजौ रे आजौ लोकडा, आगै मैणत सू जमसी राजस्थान
जागौ रे जागौ लोकडा, सरजौ, सोनै रौ सुपनौ राजस्थान

मुरधर माय

वीणती सुणो नी म्हारी मुरधर माय
थारै हिवडै थोडी दया चित लाय
दुखिया री बिखायत मे करज्यो सहाय
म्हारी हेलो सुणो नी म्हारी मीठी माय

सीयाळै उन्हाळै राखा मन मे हुलास
घणी वावा बाजरिया बीणा मोकळी कपास
तो ई फाटा चीथडा सू गुजारो करा
ठारी मे ठरतोडा बिना मौत ई मरा
वोहराजी लगायो नही हळवाणी रै हाथ
सेठाणी सैर मे जाव सेज गाडिया साथ
ठीकरा अडाणै बाजा घर रा धणी
भूखा मरता आख्या धसगी टाबरा तणी
सोनै हदी चिडिया सू सूनो हुयग्यो देस
बाणिया रै भोग लागै करसा हदा वेस
धानडो निपजावा म्हे तो डीला नै सुखाय
मरतोडा टाबरिया ताईं करा हाय हाय
वीणती सुणो नी म्हारी मुरधर माय

घर री धणियाणी नै मिळै नही चीर
फाटग्या घाघलिया नै रालिया लीरा लीर
खाय पीय नै लारै लागी रावळा री वेठ
रोटघा रा देवाळ हुयग्या हिडौळा सू हेठ
खेतडा जोतै नी कोई भणै नी गुणै
दारूडा पीवै नै म्हाटा मारूडा सुणै
निकमा निठाला बैठा ठकराया करै
धान रा कुबेर करसा भूख सू मरै
म्हारी मोटी माय म्हानै मारग बताय
सरणागत आया री दुख दाळद मिटाय
वीणती सुणो नी म्हारी मुरधर माय
थारै हिवडै थोडी दया चित लाय

कलम रौ उस्ताद

छाती पर अमरीका बैठौ
घर मे भूख, घणौ देवाळौ
चढता ईं सुध-बुध भूल्योड़ै
'ईडन' तळै हिलै है थाळौ

माथा देणा पड़सी

मुलक नैं मोटचारा माथा देणा पडसी
देस नै हुसियारा माथा देणा पडसी

बीत चल्यौ जूनौ बरतारौ, बदळ रह्यौ दुनिया रौ धारौ
जुग नैं हाथ लगावौ
मुलक नै मोटचारा माथा देणा पडसी

सिर सौदे री साख सपूता, पूरी किण विध होसी सूता
जागौ जगत जगावौ
देस नैं हुसियारा माथा देणा पडसी

मुरधर रा मूधा मानविया, काज सरै सिर सूधा करिया
रण रा साज सजावौ
मुलक नै मोटचारा माथा देणा पडसी

जुलम जोर री जड नै काटौ, फूट झूठ री खाई पाटौ
हिळ मिळ हाक लगावौ
देस नै हुसियारा माथा देणा पडसी

आवौ आपणौ देस उबारा, भारत मा रौ भार उतारा
सिर दे नाक बचावौ
मुलक नै मोटचारा माथा देणा पडसी

दरप देखनै

दरप देखनै, दरद दव्योडौ, फूट पडचौ, जद भरग्या नैण
किसी खाड री कोर लेआया, सैग मुलक नै म्हारा सैण

आजादी रा रळ्या सिपाई, सप सचाई स्यान गमाई
कटक चढ्या जद लोह मिनख हा, वै बाहेला हुयग्या मैण
दरप देखनै, दरद दव्योडौ, फूट पडचौ, जद भरग्या नैण

भण्या-गुण्या निकमा नख तोडै, कटक लड्या वै भूखा दौडै
बानै बिसर, वळौ कुरस्या रौ, कर-कर वण्या मुलक री दैण
किसी खाड री कोर लेआया, सैग मुलक नै म्हारा सैण

हुक्मत सू हिलता ई हिटग्या, गरब-गुमान गुणा नै गिटग्या
वोट दलाली परमिट गिटगी, सूरज गळग्यौ जीती रैण
दरप देखनै, दरद दव्योडौ, फूट पडचौ जद भरग्या नैण

चरखौ सादा लोक रुखाळै, पण खादी मोटर मे चालै
पग पूजै बापू री छिब रा, लागै जद वोटा री लैण
किसी खाड रौ कोर लेआया, सैग मुलक नै म्हारा सैण

पूत बाप पर घिसै कटारी, बेटा पर रख वळै पिता री
कटण-मरण रा साथ भायला, अब बयू वोनै बडवा वैण
दरप देखनै, दरद दव्योडी, फूट पडचौ, जद भरग्या नैण

सारौ जन हिल हाथ हिलावै, खोद बीज धड धन निपजावै
क्रोड मिनख हळ हाथ धरै जद, बजर मथीजै, उगळै फैण
किसी खाड री कोर लेआया, सैग मुलक नै म्हारा सैण

हाल समौ है, पुटला फेरौ, खोद काळजा, हेज अंवेरौ
सिर दीन्हा बानै मत बिसरौ, हेत करौ, जन नै सुख दैण
दरप देखनै, दरद दव्योडौ, फूट पडचौ जद भरग्या नैण
किसी खाड री कोर लेआया, सैग मुलक नै म्हारा सैण

हालौ आपरी अकल म्हारा देस

थारी सागडी सिधायौ परदेस
हालो आपरी अक्ल म्हारा देस

पूजिया घणा ई दाडा
माटी भाटा रा देवा
जूझिया पराई घाल्या
रूळग्यौ ससार, बिगडग्यौ वेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालो घर री अकल म्हारा देस

जुग-जुग थारौ मन मोयौ
थें इण रौ घणौ ईवोझ ढोयौ
पोटिया उचाया जिण सू
आख्या निसरगी, उडग्या वेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालौ आपरी अकल म्हारा देस

वेद नै पुराण लिखिया
आज ई इक्वार काढै
पूजिया पगर नै, ऊपर
पीढी-पड-पीढी बध गो वैस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालौ आपरी अक्ल म्हारा देस

मारग सू मोटौ बण नै
सागडी चीलै सू चूको
गाठ री घणी क्यू सूतौ
पेट पर पडै है जन रै ठेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालो आपरी अक्ल म्हारा देस

धवळा गाभा मे बीरा
धरती री मैल छिपियौ
बापू रै नाव ऊपर, ठाला
निवळा नै न्हाकिया पेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालौ आपरी अकल म्हारा देस

पीढिया सू लारै रळिया
थाडा दिन धकै पधारौ
निज री बुध बरतौ, दौडौ
खुद री आख्या नै खोल हमेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालौ आपरी अकल म्हारा देस

अणगिणिया गेहरा कमगर
रोटी गाभा नै रोवै
धन वाळा मौजा माणै
रह्यौ नी लाज री लवलेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालौ आपरी अकल म्हारा देस

घर रा नारा नै बीरा
हाथ सू चराया मरमी
गेला गोरी नै सूप्या
खेती-खडा री मिळसी नेस
थारौ सागडी सिधायौ परदेस
हालौ आपरी अकल म्हारा देस

सीख

मिटिया सू गुलक बणै कोनी
दिवलै री जोत मती बणजौ
मरियोडी पून जणै कोनी

गिटिया सूं रतन गळै कोनी
रण रा जूझार मती वणजौ
डरिया सूं काळ टळै कोनी

अडिया स आग झिलै कोनी
सिर दे सिरदार मती वणजौ
सडिया सूं हाथ हिलै कोनी

कलांमां सूं कूटी नवी जिंदगांणी

कलामा सूं कूटी नवी जिंदगाणी
अलामा री आदत में गुमनाव गळगी
गुलामी म्‌ छूटी मुलक री जवानी
किसी पाळ चढता किसै ढाळ ढळगी[1]

हुवौ पिंडता नैं अकल रौ अजीरण
कनक रैं कसालै रथी राड रूधा
मिनख नैं बिछायौ, चढयौ सीस आसण
सयाणा रैं स्यापैं हुवा सत सूधा[2]

भरी भीड धवळै दिवस धाड धाई
लफगा री लिछमी, लगावै पलीता
सरम सौझ्योडा सिरकग्या सिपाई
चढया पच चौकी चुगल चोर चीता[3]

दलाला री डोढचा ढमक ढोल वाजै
वणी भाड भाभी सवाळा री सीता
कलाळा री कौडी चडी चग गाजै
झकाळचा री बकझक बणी आज गीता

१ नवी पाल चढता किसी ढाल ढलगी
२ सरीफी रैं स्यापैं हुवा सेख सूधा
३ चढ्या गांद चौकी चुगनखोर चीता

सियाळचा सिकारा करै, मेर सूता
चुतर लूकड़ी नै मिळी न्याव गादी
अधेटै ही थाका, बळद साढ हूता
हळा सू हटी नाड टिगटा दबादी

कुबद कागला री गुरडजी नै गिटगी[1]
तबेला री ठाकर वणी वेलदारी
गधेडा बधै, ठाण मे राख रळगी
तुरग तेजणा पर पडी भीड भारी

हिडक हेकडी रौ हुक्मत मे ठागौ
चुतर चाट मागै, भलौ लोक भागै
निजर-नारदा रौ नवौ नेग लागौ
कनक कामणी, कूड रौ काम आगै

दगै सू दव्योडी जवानी रौ पाणी
उतरग्यौ नरक नाळ मे, लाज वैहगी
सिलामा सू सडती नवी जिंदगानी
गुडक्णा गुलामा री गिणती मे रैहगी

कलामा सू कूटी नवी जिंदगाणी
अलामा री आढत मे गुमनाव गळगी
गुलामी सू छूटी, मुलक री जवानी
किमी पाळ चढता, किसै ढाळ ढळगी

आजादी री जीत कठै है

सुख समता री रीत कठै है
आजादी री जीत कठै है
तन रौ जळ आमू वण वेहग्यौ
हलक मूखग्यौ गीत कठै है
आजादी री जीन कठै है

1 कुबद कागला री गयाणा नै छगगो

कान सुणै पिण निजर न आवै
वो वरदान किसी सुख लावै
सुणता मन बिखरै, उण सुर में
जीवण री सगीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

जूना आगीवाण वडेरा
सेता छोडया नवा वछेरा[1]
पिण सादा मिनखा रै मन में
पागी री परतीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

ठग राजी, जन रौ मन सीझै
लोक लडयौ पिण जात पुजीजै
जन खाधै पग मेल सिखर पर
चढाया, वारी नीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

जीवण ज्यारी मैणत मागै
दळ दाळर वारा सिर भागै
पूत रमै कादै सू होळी
सग लडै जद प्रीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

राड वधै है, ध्यान हटै है
भाव चढै है चीज घटै है
जन हाक्म आजाद मुलक रा
अटक करै, वै मीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

उछळ-कूद नित करै वछेरा
पिण क्यू उछळै आप वडेरा
जुग मारग री चौपड मार्थ
रण रूळयो रणजीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

१ नित रा पार्न नवा बछरा। नित रा मोलै नवा बछेरा

हाक्म हक सूं हेत वधावै
जन दिन दूणौ धन निपजावै
अेक मनै वधतै जन बळ री
पथ रूंधै वा भीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

१५ अगस्त, १९५७

राज बदळग्यौ म्हांनै कांई

इण दिस सुख री पडी न झांई
राज बदळग्यौ म्हांनै कांई

नेता बोलै राज आपणौ
अगरेजां सूं लार छूटगी
साधक घोखै निमौ नारायण
दुख दाळद री नाड तूटगी
बाण्यां रै पौबारा पडगी
पौरायत री आख फूटगी
गोवरिया भावी रै घर सूं
भरयां पेट री याद रूठगी
साधक जीमैं दूध मळाई
गोवर कूकै म्हांनै कांई
इण दिस सुख री पडी न झांई
राज बदळग्यौ म्हांनै कांई

भण्यां गुण्यां भगतां में भिळग्यां
वडौ हुक्म खादी में वडग्यौ
नेतां री निबळाई लारै
मुजरा खोर मुसायब पडग्यौ
देस भगत चौराय आगळी
वण जूझार सिरां पर चढग्यौ

टूळ धण खड़तौ सादौ बेली
बोझौ झेल जमी मे गडग्यौ
नवा साब नै खीर निवारै
वडियौ झीकै म्हानै काई
इण दिस सुख री पडी न झाई
राज बदळग्यौ म्हानै काई

बापूजी री फौज बिखरगी'
तेरा तीन हुवा बाहेला
चदा-चोर चढ्या सिर माथै
फन्दा-खोर हुवा सब भेळा
धधाखोर धाडवी बणग्या
सूदखोर नित करै झमेला
रणबका नर कियौ किनारौ
आगीवाण हुवा मद गैला
नेताजी रै मोटर आई
नूरचौ बागै म्हानै काई
इण दिस सुख री पडी न झाई
राज बदळग्यौ म्हानै काई

जन-सेवक सूरतिया बणग्या
निवड्या नाहर जीव रा काचा
खेत गमाय किया हाथा सू
सिटपिटिया रा सपना साचा
गेहणै पडी कमाऊ दुनिया
कलम-सेठ रा खाय तमाचा
बाबूजी दो दिन सू निरणा
सूखौ पेट, बैठग्या बाचा
कवर सेठ रा खाय मळाई
मुन्नौ रोवै म्हानै काई
इण दिस सुख री पडी न झाई
राज बदळग्यौ म्हानै काई

गाधीजी री फौज बिखरगी

दम पीढी री खरी कमाई
कागरेस बाण्या रै विकगी
धन-लालच सू जन नेता री
मत खेता मे गोडी टिकगी
नकद नफै री भरम भाड मे
कमतरिया री काया सिकगी
पिडतजी पोथी नै पटकै
वेमाता खत खोटा लिखगी
आडम्बर नै भेंट सवाई
जनता झीकै म्हानै काई[1]
इण दिस सुख री पडी न झाई
राज बदळग्यौ म्हानै काई

कूड कपट कण कण मे रमग्या
भली चाल भाडा मे भिळगी
कमतरिया री कठण कमाई
बाण्या री डाढा मे झिलगी
रुळता फिरै समझणा सावत
अणबूझा नै गादी मिळगी
धनवाळा री धीग धाक सू
बळवाळा री जीभ निकळगी
सेठा रै घर नकद कमाई
लोक रडीकै म्हानै काई
इण दिस सुख री पडी न झाई
राज बदळग्यौ म्हानै काई

आ कैडी आजादी

लोग कैवै सूरज ऊग्यौ, पिण कठै गियौ परकाम
हाय हाथ नै खावण दौडै, किण री राखा आस
मुलक री आ कैडी आजादी

१ जनता जोवै म्हानै काई

पूत पितर में मच्यो छिनाळो, चारू दिस बरबादी
मुलक री आ कैडी आजादी

मिनखपणै रो राम निसरग्यो, ओर पुजीजै भेस
दळ स्वारथ सू जन रा नेता, कियो पागळो देस
सिपाई हाथा धूळ उडादी
कितरा तो टुकडा पर टुळग्या, बाकी गाठ गवादी
मुलक री आ कैडी आजादी

हिळमिळ काम करण री वळा, बटवाडै री राड
मन मैला बातैला पाडी, जन रै धन पर धाड
बण्यो है सगळो मुलक विवादी
देस भगत स्वारथ मे सडग्या, ईस्वर हुयगी गादी
मुलक री आ कैडी आजादी

मोटा मगर मिनख नै खावै, निबळा भुगतै डड
बापू रो बरदान बिसरनै, मत हुआ सो खड
सयाणा सेठ बण्या सतवादी
खादी छोड, झपडी वणगी, जन जुग री सहजादी
मुलक री आ कैडी आजादी

नीचै जनता रगत बिलोवै, खावै करवो राब
ऊपरला माखण खा जावै, जन री गरदन दाब
मुलक री माडै नीत डिगादी
बिचलो वरग गधेडो दौडै, लिया दोस री लादी
मुलक री आ कैडी आजादी

जन सेवक झगडा सू थाका, सत रो घटग्यो भाव
खादी धार लबाळो जीत्या, जन-हुकमत रो दाब
सैत मे सिर दीन्हा उनमादी
जन-जीवण मे मैल बध्यो है[1], माथै चढग्या सवादी
मुलक री आ कैडी आजादी

---

१ फूट बधी है।

तिकडम री तिर जाय सिलावा, भलै लोक पर भीड
फूट फिकर सू थक्या गजा रै, कीडा धरै घमीड
समझ री सगळी स्यान सडादी[1]
इलम हुनर री आदत माडै, मरजीदान मयादी
मुलक री आ कैडी आजादी

मूढ मिनख पिडता नै हावै, कळावत नै भाड
लोक कळा रै मेत चरै है, रखवाळा रा माड
कठै जद कूक करै फरियादी
जन रौ जीवण खड्यौ कटघरै, न्याव करै अपराधी
मुलक री आ कैडी आजादी
पूत पितर म मच्यौ छिनाळी, चारू दिस बरबादी

तड़कौ तगत तपावण लागौ

अमरजोत म कीडा पडग्या
जन मारग अधरावण लागौ
अजर कळप रा पाना झडग्या
जन-जीवण मुरझावण लागौ
तडकौ तगत तपावण लागौ

अै रजथानी रिडमल रुळग्या
जै मतग्यानी साधक सुळग्या
बापू रै बळ बुगला पळग्या
कोडी कनक कमावण लागौ
तडकौ तगत तपावण लागौ

बौ पौरायत पडवा फाडै
आ जोडायत चढगी धाडै
सकट सैंग टका मू टळग्या
गाडयौ मरग सिधावण लागौ
तडकौ तगत तपावण लागौ

१ अकल री सगळी स्यान गमादी

अै जन सेवक जोखम जोड़ै
वा दळ दुरग दलाली दौड़ै
सरम सभाता सुरजण सडग्या
आघौ अगन उजावण लागौ
तडकौ तगन तपावण लागौ

औ सतगरू सापा नै पाळै
वौ चेलौ पडग्यौ किण चाळै
छिपिया छतर छिनाळै छळग्या
मुगनी सरम सभावण लागौ
तडकौ तगत तपावण लागौ

कनक चढी कचनिया राजी
औ आमण कद आवै बाजी
सुपना रौ मैमर घट मुळग्यौ
तडकौ तगत तपावण लागौ
जन मारग अधरावण लागौ

अहिसा बोल अहिंसा बोल

बिकै क्यू मिनखपणौ बेमोल अहिसा बोल अहिंसा बोल
पातळौ पडग्यौ मत रौ घोळ, अहिसा बोल अहिसा बोल

परदेसा पिंडत रौ परचौ, पच सीळ परवाणौ
पिण घर में मामूली हुयग्यौ गोळचा जीव गमाणौ
मिनख रौ कारतूस भर तोल, अहिसा बोल अहिसा बोल

क्यू निकमा माईत आज रा, छोरा नै धमकावै
दो पीढी औ पाठ पढायौ, अब क्यू खोट बतावै
सचाई अब क्यू छोरारोळ, अहिसा बोल अहिसा बोल

भणता नै बापू छेड्या, सडका रौ सख बजायौ
बयालीस मे तोड फोड, नेताजी नव-जुग लायौ
जुगा रा बधण नाख्या खोल, अहिसा बोल अहिसा बोल

नवै खून सू वासण लागी, बापूजी री खादी
दस पीढी रै बळिदाना री, सगळी सुगध गमादी
उतरग्यौ जन-सेवा रौ झोळ, अहिसा बोल अहिसा बोल

ले बापू रौ नाव चलावै, गुरगा चोर बाजारी
धवळ भेख रै धोखै पडगी, डूबी जनता सारी
मुलक रौ सुधरै किण विध डोळ, अहिसा बोल अहिसा बोल

अब गादया पर घर रा वेली, जुलम करै करवा दो
आ जूठण अगरेज उगळग्या, अब यानै चरवा दो
चलण दो लोक राज मे पोल, अहिसा बोल अहिसा बोल

करसा नै भरमाय बळद ले, गुरगा चढग्या गादी
औ बळदा रौ दोस नही माडाणी छाप लगादी
जमादो धाडविया रै धोल, अहिसा बोल अहिसा बोल

बिहार रै विद्यारथी आदोलन टाणै, १९५७

घर मे वड़ग्या चोर

रुखाळा झेरा मे झखझोर
मैंध मार जन रौ धन लूटै, घर मे वडग्या चोर

हेत-प्रीत सू हाड-वैर नै मैणत रौ मन वैरी
अकल अजीरण, फिरघा भोगना जोखम झिझक घणेरी
सँत मे सूत्या मूड लुकोर
घर मे वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझोर

अनुभव बोल, अमोल वडा रा, लालटेण जीवण री
मूटो समझ बाधली सावळ, आळम जिद अणबण री
बिगडग्यौ आदोलन रौ दौर
घर मे वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझोर

डाखी मिसल डरै डकै मू, जूथ जोर भय भागै
वध-वध वाता करै भरम री, मरम चोट कद लागै
जमावै जन माथै ठग ठोर
घर मे वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझोर

वण्या धरम-धज परमिट पथी, ठेका रा ठग दानी
जद पग पग पिडत परचावै, कमगर री नादानी
चरावै चरवाहा नै ढोर
घर म वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझोर

धिक धिक धरती धन वाळा नै देय जवाडा भागै
पिण चदो या चोर ठगा सू इकर डावल्या मागै
जीवणो जिण सू वधग्यो जोर
घर मे वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझोर

बुध, सकर, सुकरात, गजाळी, लाओ पथ पुराणा
मिनख पूजणी लत रा पडग्या, मारकमवाद मे थाणा
वध्यो है सूत्रवाद रो सोर
घर मे वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझार

अकल भणाई मिनखी-चारो, अेक-अेक रै ठेकै
घर फूली री फिकर नही, परका नैणा तिल देखै
अधारो अहकार रो घोर
घर म वडग्या चोर
रुखाळा झेरा मे झखझोर

आथड़िया सौ आज अछूत

नवै राज मे सडवा लागा
ज्या सुपना पर पळ्या सपूत
सूता मो सिंघासण चढग्या
आथडिया सो आज अछूत

वै कूकै परताप वणायौ
अै वाधै जैसिंघ रै मोड
जद आयूणा कमधज कडकै
दुरगदास सू कुण लै होड
इण जुग रा जूझार रळै
मुडदी बाता पर घणी मरोड
नै ज्या राजस्थान वणायौ
बै रखडै ढोरा री जोड
कळकळ करै कळा रा कूकर
निरभै चरै साड नै सूकर
उलझ गयौ सब काचौ सूत
आथडिया सो आज अछूत
नवै राज मे सडवा लाग्या
ज्या सुपना रा पळचा सपूत

पुळकै पल-पल करै परकमा
हाट कचेडी महल मकान
अग पर उडदी देम-भगत री
परमिट पनपै गरब गुमान
बण्या चौधरी नवा खिलाडी
मिनखपणै रौ मरग्यौ मान
तिकडम री तरवारचा तीखी
सतवाळा री सडगी स्यान
सैध सरम री सीवण उधडी
जन रौ धन गैला री गुदडी
लूट रह्या धन धोक्ळ धूत
आथडिया सो आज अछूत
नवै राज मे सडवा लाग्या
ज्या सपुना पर पळ्या सपूत

रात छुरी पुरखा रै मारी
तडकै नगर जिमायौ भात
धन धोबळ दो वार जीमग्या
जन रा रण-रघडा नै लात

पौबारै बारी जो हुकारै
सत नै झूठ दिवस नै रात
मिनख जूण रा गीध कागला
नाचै जद तक भरी परात
राखै गाल थपड सू राता
पगा हेट धरती कण ताता
आखडियोडा करै अणत
आथडिया सो आज अछूत
नवै राज मे सडवा लाग्या
ज्या सुपना पर पळ्या सपूत

परगट मे निबळा रा बेली
भरै सँग सेवा रा साग
गाधी कँप जवाहर जाक्ट
ढीलो बुडतौ डोढी लाग
सत्य अहिंसा चढ्या जीभ पर
राज चलावै डोगी डाग
वाण्या री थैत्या मे गमगी
जनता री रोट्या री माग
जन रा सँग सिपाई सूना
धुडग्या गढ सेवा रा जूना
जन-धन लियौ दलाला सूत
आथडिया सो आज अछूत
नवै राज मे सडवा लाग्या
ज्या सुपना पर पळ्या सपूत

दादा डर ड्योढी मे दुबक्या
लल्ला दौडै बिना लगाम
वोट दलाली मे धन बरसै
जन-सेवा मे नही छदाम
सुगरा रौ ससार बिखरग्यौ
सिखर चढ्या है नमकहराम
लल्ला छाप लिलाड लगावै
रात दिवस लल्ला गुण गावै

गुरगा गजर कमाऊ पूत
आयडिया सो आज अछूत
नवै राज में सड़वा लाग्या
ज्या सुपना पर पळया सपूत

लल्ला बीच बजारा खोली
राज काज री नवी दुकान
परिया आप धरण पर उतरी
त्यागी इन्द्र सभा अभमान
खुद लल्ला मतमत समझावै
परियां दै सतिया नै ग्यान
गळो फाड लल्ला जस गावै
सब महफिल रा मरजीदान
राग नवी पिण बात पुराणी
चढै नही उतरयोडो पाणी
झूठो रै जनवळ जमदूत
आयडिया सो आज अछूत
नवै राज में सडवा लाग्या
ज्या सुपना पर पळया सपूत

पयरा रा बापू नै पूजै
ढेरया धरै समाधी फूल
उणरो नाव अगाडी करदै
जद-कद हुवै छिपाणी भूल
राज चलै आथूणै चहीजै
गाधी मारग हुवो फिजूल
रघडा नै रासण जद मिळसी
लल्ला टप्पो करै कबूल
काका कुड़तै नाग रमाया
वै काटण रघडा नै धाया
पिण कद मरै जीवता भूत
आयडिया सो आज अछूत
नवै राज म मडवा लाग्या
ज्या सुपना पर पळया सपूत

सूता सो सिंघासण चढग्या
आथडिया सो आज अछूत

१७-३-५६

निकमा इमरत पीवै क्यूं

धन-धोकळ कतरै नै वेंतै
सारी जनता सीवै क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवै क्यू

धरती खोदै अन-धन काढै
बीजै पावै निंदणै वाढै
पण जद वौ जन हिळमिळ हालै
तद लूक सियाळया डाढै
जद नवळचौ नेता नै बूझै
लूक सियाळचा जीवै क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवै क्यू

मुलक-मुलक मिनखा सू मातौ
चाम तळै सब लोई रातौ
स्वामीजी रै सब रग सरखा
चेला चरै परायौ भातौ
जद भोळचौ भगता नै बूझै
मुफत चरै सो जीवै क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवै क्यू

पाळ स्खाळ भणाया सोटै
भईजी ब्याव चढाया कोटै
वणग्या वाप सवाळा होठा

रहगी संग जवानी टोटैं
जद भवरचौ भोजी नैं बूझैं
बूझ बूझागड जीवैं क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवैं क्यू

भीना नैण छिनकता प्याला
कचन चमकैं हाथ सवाळा
पिण ज्या हाथा घण कूटीजैं
वैं दो दिन म आप अटाळा
जद घण गोविद धण नैं बूझैं
म्हे कूटा सो जीवैं क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवैं क्यू

उण चईनैं सायब रा चाकर
इण चइलैं नेता रा नौकर
दोना रैं मझ जुग जागै है
भागै चुणै धकावैं भाखर
जद धरती भाटा नैं बूझैं
भार वणै सो जीवैं क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवैं क्यू

उण जुग राज चलाता डडा
इण जुग राज चलावैं झडा
जन जीवण जाग्या री पुठ तक
जन रौ धन चरमी मुरतडा
जद जागण जीवण नैं बूझैं
सूता रहै सो जीवैं क्यू
अरट खडचा सो तिरसा मरग्या
निकमा इमरत पीवैं क्यू

साठ सयाणा जात वणाई
जिण दिन सू आजादी आई

सिर दीन्हा सो गिया सैंत मे
जात पनपगी मरी भलाई
जद धूळचौ धीगा नैं बूझैं
झूठा झागड़ जीवैं क्यू
अरट खड़चा सो तिरसा मरग्या
निक्मा इमरत पीवैं क्यू

राज करै खादी-खड वाळा
ऊपर धवळा मन मे काळा
करसा रै घर रामा रैहगी
वळद चोरग्या टोपी वाळा
जद नाथ्यौ खेता नैं बूझैं
हळ छोडैं सो जीवैं क्यू
अरट खड़चा सो तिरसा मरग्या
निक्मा इमरत पीवैं क्यू

आंख्यां तरसण लागी

अै आख्या तरसण लागी, बै वीर निजर नी आवै
अै फूटया कान अभागी, सीयाळचा कूक मचावै

जद प्यादा पुलिस तलबिया, जरवा सू राज चलाता
गोरा रा चुटिया चाकर, दिन धाड लूट लिजाता
जद धरती रै घायल नै, ठाकर पटवारी खाता
निरभै वेगारा लेता, मिनखा नैं ढोर बणाता
उण घोर अधारै जुग मे, ज्या जीवण जोत जगाई
पिण लल्ला राज करै, क्यू दद्दा बण्या विरागी
आ कुण कवि नैं समझावैं
अै आख्या तरसण लागी, बै वीर निजर नी आवै

सव उडदी सज पुराणा, कुछ नवी चिलक अलवत है
है सागै आप लिफाफा, सुथरा पिण खोटा खत है

करणी कथ नै ले डूबी, कहणी करणै री लत है
दद्दा री दो दमडी री, लल्ला कहदै सो सत है
इण कळा-कूकणै जुग मे, कूकण री कळा लगाई
जनता तौ यू ही रळै है, किण घेड डूबग्या त्यागी
चौथ्यौ जीवण कुरळावै
अै फूटचा कान अभागी, सीयाळचा कूक मचावै

वै वेडचा पहर पगा मे, हमता घडिया घमकाता
वै घाण्या मे जुतियोडा, आजादी रा सुर गाता
बारा माईत लुगाया, टावर भूखा मर जाता
वै निरभै खाली हाथा, छाता पर भाला खाता
इण लोकराज रै जुग मे, कय रळता फिरै सिपाई
सै वीण्या फळ बिखरै है, वै छिपग्या क्यू निरभागी
सै माल मसखरा खावै
अै आख्या तरमण लागी, वै सेर निजर नी आवै

जूझारा तणी तपस्या, अभिमान अहम् मे अडगी
नेतावा री निबळाई, मोटर बगळा म वडगी
सादा मिनखा रै सुख री, सजोई सगवड सडगी
रण-रघडा री सुगराई, लल्ला दळ रै चित पडगी
इण लफग लबाळी जुग मे, हुडदगी हाट जमाई
बोली रा ढोल घुरै है, पिण डकै दुनिया जागी
हाथा मू कान दबावै
अै फूटचा कान अभागी, सीयाळचा कूक मचावै

जन रा रण-रघड सूना, जन नायक घेरा घिरग्या
लचकीला लल्ला लस्कर, सब ओळा-दोळा फिरग्या
दुख रा माध्या नै भूल्या, जाणै पाक्या फळ खिरग्या
जनता देखै वा डूबी, नेता जाणै वै तिरग्या
इण खोट चिळकणै जुग म, टोटै रैगी सुगराई
जद मिनखपणो रिमरै है, क्यू मारग पडग्या बागी
म्हनै बडो अचभो आवै
अै आख्या तरसण लागी, वै सेर निजर नी आवै

परमिट पथी पूजीजै, ठेका रा ठग ठाकर है
दरबारचा री मैफल, साचा मिनखा री डर है
निरधन रा नायब ईस्वर, धनवाना रा चाकर है
लल्ला री पाचू घी मे, धोळी टापी सिर पर है
इण झूठ झागड़ जुग मे, कळदार करै करडाई
दिन-दिन पाणी उतरै है, दिन दिन जनता व्हे नागी
धन-धोकळ धूम बजावै
अै फूट्या कान अभागी, सीयाळचा कूक मचावै

जुग-जीवण रण-रघडा रै, काधै पर भार धरैला
वै नेता नै घेरा सू, काढैला तत भरैला
जूझारा री रणजोरी, सै मिनखा मे उतरैला
उडदी उग दिन ओपैली, जनता खुद राज करैली
इण अमर अगाडी जुग मे, जन जीवण ली अगडाई
अब सरळ मिनख सुधरै है, झट वार चढैला पागी
ललना मत खाज रमावै
अै आख्या चमकण लागी, वै वीर सग्योडा आवै

होली २०११/९ ६ माच १९५५

वूझ-वुझागड़ चढ़िया घोड़ी

वूझ वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

मुलक पगा मे पडचौ पताळा, जद वूझागड चाल चलाई
परदेसी धन लूट लिजाता, वा जनमत मे वात जमाई
हुडदग कर सिर भीत फोडणी, आदत पडगी राड निगाडी
वूझ-वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

कागाई रा पलट गूदडा, सतियाग्रह री फौज वणाई
सिर सौदागर कायर वाज्या, तकली सू तरवार डराई
मुळक-थिरक महाभारत लडवा, नाजुक नरम नवेल्या दौडी
वूझ-वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

मोटर चढ महला मे रमता, गाडा भर कागद लिख पढनै
लोक लडाई लीडर जीत्या, कमतरिया रै कांधै चढनै
सिर दीन्हा सो सुपना रैग्या, धनवाळा चित पडगी कौडी
वूझ-वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

आजादी आडत मे मिळगी, सोदै सू सिरकार वणाई
पैल वची वा कीमत दूणी, निवळा सादा मिनख चुकाई
थैली ठाकर चढचा तिजोरी, जन जीवण री नाड मरोडी
वूझ-वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

अगरेजा सू मिळी वपौती, राजडड वुझागड हाथा
भाहेला नै याद घणी है, जगत भलै री जूनी वाता
पिण वुझागड वण्या देवता, उडै अकासा धरती छोडी
वूझ-वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

गुणणौ व्है तौ गुणौ सयाणा, पल-पल परौ जमानौ जावै
जीणौ व्है पग धरौ न पाछा, जीवै सो जुग साथै धावै
औ जीवण रौ चोरस्तौ है, जीत मौत अेकण सू जोडी
वूझ-वुझागड चढिया घोडी, घणौ हगामौ हिकमत थोडी

तौ भायाजी जोर पड़ैला

अबकी वार पकड मे आया
तौ भायाजी जोर पडैला
घडी-घडी गवजी वाका नै
हेला दिया वात विगडैला

वाप भणाया करण कमौरी
पिण भायाजी सावै लाया
नाजुक नखरा अजब उमीरी
नरम हाजमै स्वाद भरोमै
गळद आवरा रोट चरचा तौ

औगण व्हैला लत उघडैला
अबकी बार पकड मे आया
तौ भायाजी जोर पडैला

सूठ गाठियौ जद ले आया
काकाजी रै हेज फूटियौ[1]
रोळ रमत मे वेद वणाया
पिण सार्गे रोगी मरग्यौ तौ
लेणा रा देणा पड जासी
चाम बचाता स्यान सडैला
अबकी बार पकड म आया
तौ भायाजी जोर पडैला

जद हुक्मत भाया रै आई
चकाचूध म डैळ चूकगी
विसरी सैंध तणी सुध आई[2]
मिनखपणौ मोटर मे मरग्यौ
कुरसी पर करडा गुल खिलिया
दीस गया अै पग उखडैला
अबकी बार पकड मे आया
तौ भायाजी जोर पडैला

थें जाणौ नादान धणी है
ओछी याद करडी वतळावण
जनता नरम कठोर घणी है
थें सारा लटका कर लीजौ
पिण आंकस उखडयोडी जनता
पलक मारता नम पकडैला
अबकी बार पकड मे आया
तौ भायाजी जोर पडैला

---

१ दादा जी रै हेज फूटियौ
२ बिसरी न्यात तणी सुध आई

करड देव है कुबद करो मत
सिखर कनै है, सबर करौ कुछ
भाया हाथ कुमौत मरो मत
जन-बळ पर नखरा नही चालै
घणी समझ मे गुण गळग्या तौ
पुट्ठा पर जन लात जडैला
अबकी वार पकड मे आया
तौ भायाजी जोर पडैला

रुळग्या लड़वाळा

नवै खून रे नेताजी री सगळी मैफल रोगी रे
हुक्मत मिळता चोरबाजारी चौडै होगी रे
रुळग्या लडवाळा
हेर रुळग्या लडवाळा, ठेका रा ठग निछमी भोगी रे
रुळग्या लडवाला

नवै खून री नरक नाळ सू, साचा मिनख निसरग्या रे
परमिट पथी वोट मिळचा जद बात बिसरग्या रे
रहजो जागतडा
हेर रहजो जागतडा, औ बळद बापडो भूखा मरग्यो रे
रहजो जागतडा

नवै खून मे जन-जीवण री ऊखरडया रा कीडा रे
दिन-दिन मे सौ रग करै, इसणा गोहीडा रे
अळगा ई रहजो
हर अळगा ई रहजो, औ खेता रा चर जामी बीडा रे
अळगा ई रहजो

बापूजी री निरमळ खादी, छोड झूपडी भागी रे
परमिट पथी पैर लिवी जद, बासण लागी रे
महला मौज करै

काका रात सिराये मेली, कूची चुपके लाला लेली
कचन वेचण गिया बजारा, कुण छानै-सी कोट कतरियौ
अरे बाप रे ! औ काई करयौ, पुन्न कमाता पाप पसरियौ

जद लाला पूरण नै घाटौ, तोल धरयौ घिस्योडौ भाटौ
सैं पेढी री साख सडादी, कुण पग पकड काठ ने धरियौ
अरे बाप रे ! औ काई करयौ, पुन्न कमाता पाप पसरियौ

लाला कियौ चोवटै हाकौ, अबै डोकरा रौ दिन थाकौ
पिण काका नै छीक आयगी, ठोकर लागी अजळ ठरियौ
अरे बाप रे ! औ काई करयौ, पुन्न कमाता पाप पसरियौ

कुण लाला नै चग चढायौ, वारै कठ काळजौ आयौ
सीग सवट पोटा कर भाग्यौ, धड क्यौ साड, चौर मे चरियौ
अरे बाप रे ! औ काई करयौ, पुन्न कमाता पाप पसरियौ
हुचक लालजी करी उतावळ, मुगट पैरता माथौ फिरियौ

घणा दौडिया घरै पधारौ

घणा दौडिया घरै पधारै, लाला आगै घोर अधारौ

बाळी उमर हाथ पग पतळा, काची सुध-बुध किरतब कवळा
गिटग्या रतन जीव सू जामौ, सूळ चुभैला मारग अवळा
न्हाया सो ई पुन्न विचारौ, घणा दौडिया घरै पधारौ

इण रस्तै हाऊ खा जासी, भूतणिया भुरकी भुरकासी
अगत जूण रा भूत मिळैला, जद थारौ कुण जीव बचासी
वस निकामी वाता मत मरौ, घणा दौडिया घरै पधारौ

भाया वण सारै दिन रमिया, पुळ परगटिया पुळ आथमिया
राज कमायौ काज गमायौ, जिण छिण लाधा उण छिण गमिया

ढेर रमकडा टमटम लेली, धाप भायला भेंटा मेली
अब पठाण पीसा नै आसी, रोवण लागा उण रै पैली
पर-सिर पटकौ जोखम सारौ, घणा दौडिया घरै पधारौ

टावर हौ ढूल्या मू खेलौ, थें क्यू जग रौ झंझट झेलौ
खूब चरौ नै साड चरावौ, दो दिन जीणौ लावा ले लौ
चूप चुका ! बोझा नख मत मारौ, घणा दौडिया घरै पधारौ

इंद्र सभा रा बिसरौ भटका, अमर जवानी इमरत गटका
इण मैफल मे निपट निकामा, पाख-कटी परिया रा लटका
जेवा भरलौ जलम सुधारौ, घणा दौडिया घरै पधारौ

पिण लाला बा थाळी बाजै, दादा डोढी नोबत गाजै
ग्वाडी लौडा लाल जलमिया, ज्या मे जुग रा भाग बिराजै
अब मत निक्मा पून पसारौ, घणा दौडिया घरै पधारौ

भूल करी जननायक भारी

भूल करी जननायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी
गुण ममधण निरभै गुणकारी, कागरेस है जाट सभा री

गीध कागला रा भरमाया, नवा नाय नै खादा लाया
हळ खडता कन्धा रै माथै, अेक जात करली असवारी
भूल करी जन नायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी

अब चौधरिया हाट सजाई, करी विरोडा री भरपाई
गीध कागला पळै अेठ न, लूटै धन इज्जत जनता री
भूल करी जन नायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी

अंलबार आठानी खावै, जेळ पडै बे रिजक गमावै
अे करदै दो मोड कांकरी, बणै मिनिस्टर चोर बजारी
भूल करी जन नायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी

सिरलावौ गाधी-नेहरू रो, कागद आयौ जात-गत रौ
नगरा नै जगळ कर देगा, घर-घर कळण मिटावा सारी
भूल करी जन नायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी

क्यू लड भिड आजादी लाया, क्यू म्हारा खोळा बदळाया
पोदा करै धडू कै खोदा, अैठ अरोगो सारी-वारी
भूल करी जन नायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी

सब जाता नै अेक बणावो, अेक जात री रील हटावो
जो जनता सू टळ नै हालै, उणरी आग बुझण दो सारी
भूल करी जन नायक भारी, चरै गधेडा केसर क्यारी

२६ जनवरी १९६५

रोक रिपियौ अेक लेसी

रोक रिपियौ अेक लेसी, काम सारौ देख लेसी
सेठ है, धनवान है, बोपार-वाटी सेक लेसी

महातमा री सीख, करमी अेक रिपिये पर गुआरौ
मूप पेढी सीरिया नै, पूरसी पिरवार सारौ
सत है, सत री धजा है छोड माखण केक लेसी
रोक रिपियौ अेक लेसी, काम सारौ देख लेसी

मोटरा बगळा हवेली, वाग घर रा त्याग देसी
कस्ट काया झेलसी, पिरवार बधता भाग देसी
चतुर नर है, जेब तर है, भगत भिळतौ भेख लेसी
रोक रिपियौ अेक लेसी, काम सारौ देख लेसी

सागडी भगवान मिळग्या, आज उरजण भाग जागा
'यतो कृष्ण, ततो जय' रा जोर सू भव भरम भागा
कनक चसमै री चिलम चमकाय, मारग नेक लेसी
रोक रिपियौ अेक लेसी, काम सारौ देख लेसी

वात सुण औ त्याग मूरत, अणविलोई छाछ पीजै
मळ-मुसद्दी स्वाद सखरा, साडिया नै साख दीजै
देख मन री खोट, हसतै होट, मारग छेक लेसी
रोक रिपियौ अेक लेसी, काम सारौ देख लेसी

देस भगता री गुळाचा, देख रै दुनिया दिवाणी
वाज मिकरा ठाण ठाडा, बार छोडै माम खाणी
सत सेवण मान री मरजाद, मायौ टेक लेसी
रोक रिपियौ अेक लेसी, काम सारौ देख लेसी

धवळी टोपी धूळ उड़ाई

सादा मिनखां करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई
अगरेजा रौ राज गियौ, पिण सूम-सेठिया हाट जमाई

पहलौ वीर तातियौ टोपी, जिण नाना सग कार अलोपी
माथा दिया मुलक री खातर, पिण जीवण री जोत जगाई
झासी री राणी महाकाळी, कुवरसिंघ करडौ वगाली
तन मन धन धरती पर वारचौ, सिर मोडै री सडक सजाई
सादा मिनखा करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई

आडा मिनख आण पर अडग्या, सुभट सूरमा निबळा पडग्या
डूब गई मारी सिरदारी, पण सासळ मजबूत बणाई
चारू दिस अधारौ छायौ, जद बीडौ वगाल उठायौ
घर घर मे प्रगटया रण चका, हस हस फासी गळै लगाई
सादा मिनखा करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई

हलचल सुण जाग्यौ पजाबी, गदर पारटी गरदन दाबी
अगरेजा री ओख्या निसरी, चारू कूट अगन फैलाई
मन चवदै जरमन जुध जाग्यौ, गोरा रौ गढ डिगवा लाग्यौ
सूम सेठ रळियार राजवी, अगरेजा री मान बचाई
सादा मिनखा करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई

खुदीराम, अरविंद, बिहारी, दळ बाध्या चाली ववारी
दसभगत घाणी मे जुतिया, पिस जुलमा री नीव हिलादी
भगतसिंघ आजाद चेतिया, राजगुरू, असफाक नैतिया
तिल-तिल कटया मुलक री खातर, कागरेस पिण करी बुराई
सादा मिनखा करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई

जयप्रकास दळ-वळ ले धायौ, बयाळीस म उधम मचायौ
विन मे वडग्या सत सयाणा, जुध री वेळा पूछ दवाई
आज राज सता रै हाथै, दमन चलै वीरा रै माथै
राजा ठाकर सेठ मुसद्दी, वटमारी री राह चलाई
सादा मिनखा करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई

कागरेस सत मारग मेल्यौ, बाण्या री सरणौ अव झेल्यौ
निकळ गया दूजा दळ सार्थं, आजादी रा सँग सिपाई
राज करै वाण्या रा वेली, सूम पुजीजै देवा पैली
गाधी टोपी और गरीवा री, मिट चाली सँग सगाई
सादा मिनखा करी कमाई, धवळी टोपी धूळ उडाई
अगरेजा री राज गियौ, पिण सूम-सेठिया हाट जमाई

मत ना दो जनता नै झासौ

बै पड भागा, थें ई जासौ, मत ना दो जनता नै झासौ
जन-विराट रौ पग मत चीथौ, नीतर निकमौ जीव गमासौ

अगरेजा री पैठ पुराणी, लरडी नार पियौ मिळ पाणी
पिण जद बात समझ मे आई, जाग गई जनता धणियाणी
हिंद तणी पौबारै पडगी, गोरा रौ पुट पडग्यौ पासौ
बै पड भागा, थें ई जासौ, मत ना दो जनता नै झासौ

ज्यारी जडा पताळा पूगी, पल भर म बद हुयगी पूगी
झटकै जीव छोड दी जागा, बोल पडी जद जनता गूंगी

जन रै जागण री तप लागी, तद गोरा री गळचौ गडासौ
वै पड भागा थे ई जासी, मत ना दो जनता नै झासौ

सैंस वरस जूना रजवाडा, जुलम जोर रा जबर अखाडा
जन-हाकल सू नीव खिसकगी, अपणै आप उलटग्या गाडा
अब वारा सावत पीवै है, धरण त्याग री वडवौ घासौ
वै पड भागा, थें ई जासौ, मत ना दो जनता नै झासौ

दळ बाधौ, मत दळद कमावौ, तत विना क्यू सप घटावौ
जिण जनता विसवास कियौ है, उणनै क्यू मन सू बिसरावौ
जनता जिण पुळ निजर फेरसी, तडकै बिगड जायला रासौ
वै पड भागा, थें ई जासौ, मत ना दो जनता नै झामी

राज करौ सुख झूला झूलौ, थाका ही सुख सेजा सूलौ
गिणती रा थावर बाकी है, क्यू इण बात नै सपनै भूलौ
सडी नीव रा मैल धुर्डला, थाभा डिगिया धूड दब जासौ
वै पड भागा थें ई जासौ, मत ना दो जनता नै झासौ

मुलक रा मचकै मत मोट्यार

मुलक रा मचकै मत मोटयार, अत मे उथलैलो इन्याव
पडधा कद पडपची जुग पार, दरप लै डूबैलो दरियाव

दब्यौ दरद इक दिन फूटैला, गळियारै सू जग ऊठैला
जन अपणे बळ नै जाणैला, उडसी सै अटकाव
मुलक रा मचकै मत मोटयार, अत मे उथळैलो इन्याव

उखडधाडो जीवण ऊठैना, तिकडम रा ताना तूटैला
चमन्देडा रूप दिन फिर जासी दळ टूटैला दाव
मुलक रा मचकै मत मोटयार, अत मे उथलैलो इन्याव

कपट कूड री जडा कटैला, आज चढ्या वै थाल हटैगा
दरबारिया रा दिन दब जासी, जन रा मिटसी घाव
मुलक रा मचकै मत मोटयार, अत मे उथलैलो इन्याव

न्याव निभावै हेज चुकावै[1], भेळो भुजबळ बध कटावै[2]
सिर चढियै जन रै ग्रायक रा, जद उखडैला पाव
मुलक रा मचकै मत मोटचार, अत म उथलैलो इन्याव

आडावळ रा भोमिया

आडावळ रा भोमिया घर रा गुण मती गमाजो रे
नीव निरोगी राखजो, घर चुणता इलम जताजो रे

अणगिणिया जुग पार, हरखता हार, जीत स हठ राखी
विपता री भरमार, थका हूकार, हुळस परगट राखी
आजादी रै बाग नै, जूझार पसीनो पाजो रे
आडावळ रा भोमिया, घर रा गुण मती गमाजो रे

सुख दुख नै सम जाण, थिरकता प्राण, निरत मे न्हावै है
दाळद देता डाण पुराणी पाण, गीतडा गावै है
जुग-जुग जीवण साभियो, बा राग मती बिसराजो रे
आडावळ रा भोमिया, घर रा गुण मती गमाजो रे

आपस री तक्रार, तीर-तरवार, कटारा नै धरदो
पाडौस्या मे प्यार, समझ नै सार, हिया हरिया करदो
कारीगर नै पायजो, हाळया मे हेत बधाजो रे
आडावळ रा भोमिया, घर रा गुण मती गमाजो रे

नवजुग रा वरदान, हुनर नै ग्यान, मिळै सो ले लीजो
घर-घर म धन धान, मुलक रो मान, बधै सो पथ धीजो
सुख रो मारग सीखनै, घर कानी ई वळ जाजो रे
आडावळ रा भोमिया घर रा गुण मती गमाजो रे

---

१ सत्य सभावै, धन निपजावै
२ वारा से बधणा कट जावै

लख जोड़्या री साथ, हुनर नै हाथ, मुलकड़ी मागै है
कमतर भरता बाथ, समै नै नाथ, भीतिया भागै है
रन आयोडी रेत नै, पुरसारथ सू परणाजौ रे
आडावळ रा भोमिया, घर रा गुण मती गमाजौ रे

हिम्मत सू हुसियार, खरा हकदार, खरै मारग लागौ
दारू नै दुतकार, मैल नै मार, बुराया सू भागौ
सुध-सूरज रै चानणै, डूगर नै सरग वणाजौ रे
आडावळ भोमिया, घर रा गुण मती गमाजौ रे

जिण राजस्थान वणायौ

औ दवमी नही दबायौ, जिण राजस्थान वणायौ

पीथल तणै कटक मे कड़क्यौ, गोरी रा पग दिया उखाड
सागा री सिनिया मे सभियौ, बावर लीवी कपट री आड
औ सादौ सिरदार भोम रै, जुग-जुग सीस चढायौ
औ दवसी नही दबायौ, जिण राजस्थान वणायौ

पड भाग्यौ जद हार हुमायू, सेरसाह दिल्ली पाई
सात वरस जाळौर जूझियौ, छळ सू गढी हाथ आई
इक मूठी भर बाजरडी म, उण कितरौ कटक कटायौ
औ दवसी नही दबायौ, जिण राजस्थान वणायौ

चद्रसेन राठौड जूझियौ, राख पूठ पर इण रौ जोर[1]
महाराणा प्रतापसिंघ नै, कठण समै कुण दीनी ठौर[2]
हळदीघाटी मे जिण अपणौ, असली रूप दिखायौ
औ दवसी नही दबायौ, जिण राजस्थान वणायौ

---

१ राख पूठ पर किण रौ जोर
२ कठण समै दी भीला ठौर

मुगल पातळा जद पड चाल्या, चढ्यौ मराठा नै अभिमान
राज राजवी छिपवा ढूका, निबळया पडग्या राज निसाण
इण खेडा रुखवाळा सू, धरती रौ डाण चुकायौ
औ दवसी नहो दवायौ जिण राजस्थान वणायौ

गदर मच्यौ सवत् चवदै मे, दिया राजवी गोडा टेक
अेक रह्यौ आउवौ ठाकर, कमधज धरी लेख पर मेख
सादा मिनख हाथ सिर लीन्हा, जबरौ जग मचायौ
औ दवसी नही दवायौ, जिण राजस्थान वणायौ

बुधवळ सू बाण्या रा बेली, दिल्ली गढ री दाबी नाड
थैल्या रै झटकै मू छिपनै[1], आबू ऊपर न्हाकी धाड
अभिमानी सिरदार+ भूल सू, सूतौ सेर जगायौ
औ दवसी नही दवायौ, जिण राजस्थान वणायौ

बिजौळिया पर मच्यौ मोरचौ, इगरेजा री हिलग्यौ पाट
नवल करी खेडा बारदोली, सिरदारी रौ जमग्यौ ठाट
आबू पर अभिमान उतरसी औ डिग जासी पायौ
औ दवसी नही दवायौ, जिण राजस्थान वणायौ

आबू परबत गुजरात मे सूप्यौ उण टाणै सन् १६४६

जाग राजस्थान जीवण

जाग राजस्थान जीवण, लोग जोवै बाट थारी
जाग रे जन बळ पुराणा, इण धरा पर बिखौ भारी

जिण धरा री ख्यात सू पैली पुराणा गीत गाया
क्रोड छप्पन कट मरया, जादव रह्या इण भोम आया
ख्यात मे रजपूत, सेख, पठाण, मैणा, भील चमकै
आज थारी ऊध मू इण भोम माथै कस्ट छाया

१ थैल्या रै बल बर्तै पर वै
+सरदार बल्लभ भाई पटल

रळ रह्या सादा मिनख, सिरपच ठावा आण हारी
जाग रे जन-समझ सूरज, इण धरा पर विखौ भारी
जाग राजस्थान जीवण, लोग जोवै वाट थारी

गुळ गिया सिरदार, सूरज चाद सू सगपग बतावै
सेख श्रौर पठाण, पाकिस्तान री अब बिड्द गावै
भील मैणा भूत बैठा सूरता रा माज सारा
सेठ, पिडत, पच दिल्ली स्यान रा सौदा पटावै
आज कवि नै साच सू सिणगार माथै भीख प्यारी
जाग रे जन-मान गौरव, इण धरा पर विखौ भारी
जाग राजस्थान जीवण, लोग जोवै वाट थारी

धन-धरम स्याती पुराणी, मोह-स्वारथ गुर बणायौ
सिर दिया सादा मिनख पिण राज नै धन-बळ दबायौ
राजबळ मद चाख, आगीवाण वणग्या मस्त हाथी
बिसरग्या सादा मिनख नै, न्याव माटी मे मिळायौ
बळ चढ्यौ गुजरात नै, आवू सिखर पर धाड मारी
जाग रे जन जोर जागट, इण धरा पर विखौ भारी
जाग राजस्थान जीवण, लोग जोवै वाट थारी

आज आगीवाण थारा, सैंग जन-बळ नै बिसरग्या
राजमद रे मोह मे वै भीख मागण नै निसरग्या
चेन सादा मिनख थारौ घर बळै घर रा दिया सू
मेंठिया री फूक सू सै रूख पीढ्या रा पसरग्या
आज आवू जा रह्यौ, आडावळा री काल वारी
जाग रे जन-तेज जीवट, इण धरा पर विखौ भारी

सिर चढ्या अणबूझ, जूनी सायवी पर फिरयौ पाणी
ज्यू अळूझै सूत काचौ, काम हुयग्यौ धूड-धाणी
लाय लागी चौवटै, सिरपच मैं सितरज खेलै
हाय ! घर री फूट सू इण मुलक री रळगी दिवाळी
जीवतौ नरसिंघ सूतौ, खाल गीदडला उतारी
जाग रे जन बळ पराक्रम, इण धरा पर विखौ भारी

आवू परबत गुजरात मे मूयौ उण टाणै, सन् १९४६

जाग रणवंका सिपाई

जाग रणवंका सिपाई
आपणो ससार न्यारो, जीवतो मरुदेस प्यारो
रळ रह्यो निकमा पगा मे, धूळ आपा रो जमारो
आज राजस्थान थारो, ग्यान गुण अभिमान मारो
सिखर सूनो, वेजगा म, गिर छिपावे वण विचारो
उण घडी मे वेर क्यू वीरा लगाई
जाग रणवंका सिपाई

जिण रमायो भील मैणो, सूरमो रजपूत मैणो
आज उण आडावळा रो, हाय गमग्यो सीस गैणो
फेर थारो नींद लेणी, ख्यात सू विपरीत वहणो
छोर ले जीवण तळै री, छोर माथै बैठ रहणो
क्यू गमावै सँग पीढ्या री कमाई
जाग रणवंका सिपाई

आज सादै आदमी नै, और अक्कल री कमी नै
राख आडा दे दिलासा, जीमग्या जवरा जमी नै
रघडा री बेगमी नै, माझिया री मरदमी नै
भूल नै देखै तमासा, भून लाग्यो हाकमी नै
राज री कूची दलाला नै दिराई
जाग रणवंका सिपाई

बाप नै बेटो छळै है, रुख काटा रा फळै है
आज दुसमण है गळी मे, घर दिया सू घर बळै है
सूरता गम मे गळै है, पथ मारग सू टळै है
राज मद री घट चढी म, पाप रा पूळा पळै है
भूलग्या सरपच नियळा सू सगाई
जाग रणवंका सिपाई

हेत मे हडताळ अडगी, द्वेस म सुख चाल गडगी
खूसड़ा री खायगी मे, खेत-खड री खाल कढगी
समझणा री साख सडगी, वीरता वेमार पडगी
लीडरा री लायकी मे, बाणिया री बास बडगी
नायका री रीत सू हटगी भलाई
जाग रणवंका सिपाई

घाव गूटी सत मोवैं, पथ भूरा तत म्हावैं
साग घोटी घाल घ्रत मे, निवळ रो लोई निचोवैं
देख, आडो मिनख रोवैं, रगत सू धरती भिजोवैं
देस रा अवळा समा मे, आज थारी वाट जोवैं
जाग वीरा जीत युध-थळ री लडाई
जाग रणबंका सिपाई

सीस टोपी हाथ झोळी, चोर चढो पूर नोळी
देख दिन रा चानणा मे, रात राकस रमै होळी
साधवां री सग टोळी, भीड नै भरमाय भोळी
राजबळ रा मद घणा में, साथियां नै मार गोळी
देस भगता सरम सगळी गमाई
जाग रणबंका सिपाई

आज रा सस्तर नवा है, धार सू अक्कल सवा है
सॅग सुध-बुध सभ रहणो, इण जमानै री हवा है
आपरी अक्कल गवा है, अर जमानै री रवा है
जद भर्‌ये मैदान वहणो, इण जमानै री दवा है
आज जाग्ये सीम में स्रस्टि समाई
जाग रणबंका सिपाई

आबू परवत गुजरात म मूध्यो उण टाणे, सन् १९४६

ऊग रे मरुदेस सूरज

ऊग रे मरदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर
रे करारा भील मैणा
सावता रजपूत सैणा
रे जमी रा जाट गैहणा
सेख, सीधी लीक वैहणा
ऊठ, ढाणी धाड पडगी, साड धडूकै स्यान ऊपर
ऊग रे मरदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर

रमक रे रण-राग-रसिया, रगत फुहारा ऊर सरवर
नर-तुरग रै माल सोई
सू, नरा धिरती भिजोई
सिर दिया री धण उजोई
दीइना री धाय रोई
गमक, घर में धाड़ पड़गी, घर-बऊ सू मिटगियो घर
ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर

फेन सतमत ऊफना गज, उमड मान भवर सागर
बुध बडेरा री भमूडी
वणी, सत री पोड कूडी
जैर री जड जाय ऊंडी
लोगटा री फिरै हूडी
हूटग, दुसमण दळ चढायो, भोम तिरसी, पूर खप्पर
ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर

चमक रे इतिहास दिनरज, भामिया रा वाग भास्कर
जाय आबू सिखर वाल्हो
आमुवा सू गात आल्हो
राग मत तन नै सवाळो
कमर कसनै कर उछाळो
रिडक, हिवडो चाक करले, काळजै पर राख पत्थर
ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर

भिमर, थारो सीस खोसै, येह सूता जाग नाहर
उबळ जनरग, रगत वनचर
वास लडग्या, बळै डूगर
भिडक दळमत मस्त सूवर
हिडक रे हुसियार हळधर
बरस, घर परलाय लागी, आडावळा रा नाथ जळहर
ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर

आबू परवत गुजरात म सूप्यो उण टांणे, सन् १९४६

हाथ घणा थे दो हथियार

नेहरूजी रहजो हुसियार, हाथ घणा थें दो हथियार

पैली घर री जनता नाथी, धोखा देय डुबाया साथी
अब मरणें री मन मे आई, आकस देय जगाया हाथी
अेक चाहीजें खडा हजार
हाथ घणा थें दो हथियार

जो चीणा रण मे मर जासी, वैं सब लासा पीळचा खासी
गीध सियाळचा निरणा रहसी, पडचा हाडका जरख चबासी
मरसी पीळा मिनख अपार
हाथ घणा थें दो हथियार

रग-रग लेवं रगत उकाळा, भुज री नाडा करै उछाळा
इण माओ रा दुस्करमा नैं, भुगत भुगत मन पडग्या छाळा
जावण दो मत करो अवार
हाथ घणा थें दो हथियार

लाल चीण री चोट समाणी, जोबन री मरजाद निभाणी
मैं मोटयारी चढो मोरचैं, जद उतरैं पीळचा री पाणी
हा हाजर सगळा नर-नार
हाथ घणा थें दो हथियार

वर चीता सू बाता प्यारी, समझ्या नत मिटगी हित्यारी
पूठ फोरता तुरत चलादी, पसवाडैं मे छुरी-कटारी
अब डूबण दो काळी धार
हाथ घणा थें दो हथियार

मुख सू कहता भाई-भाई, जद हमनै री जुगत जमाई
लात पडी छिन मे उड जासी, कूड कपट सगळी चतराई
रावड करगा अब बवार
हाथ घणा थें दो हथियार

अब आया नेफा मे आगा, ढबता पाण धाकग्या ढागा
घटक हिंद री चोट पड़ी जद, पेकिंग रा पड जामी पागा
पीळघा पडमी परवत पार
हाथ घणा थें दो हथियार

भारत चीण जुद्ध रै टांणै, सन् १६६

साथैं पग भई, आगै पग धर

साथैं पग भई, आगै पग धर
भरी जवानी, वूवघा पाटै, हल रे वेनी हेमाळै पर

हेकड हिडक्या, अगनी छडकै, घाडा गडकै परवत पार
भैरू भिडग्या, काळघा कडकै, रग रग रडकै रगत अगार
हल रे हळधर, हल जगळघर, हाथ चहीजै हल रे कळधर
साथैं पग भई, आगै पग धर

चाकर चीणा, मुग्र मू झीणा, करम कमीणा, पीणा साप
चरग्र चबीणा, सतमत हीणा, यारै कुण भाई कुण बाप
हल दळथभण, हळदुग्र भजण, हेमाळै हठ चढघा निसाचर
साथैं पग भई, आगै पग धर

रगत रगीला, तन मन पीळा, गुण मे गीला रगिया मोर
जीभ लचीला, कलम नुकीला, असत उकीला, झगडाखोर
हलता परता[1], धिम्मा सागरमल[2], हल रै चुन्नी हाथा सिर धर
साथैं पग भई, आगै पग धर

इण घर धीणा, कोठा कीणा, न्याव नमीणा, भलो सुभाव
अक्ल अजीणा, पर घर खीणा, तसकर तीणा करै कुभाव
हल रे रिडमल, हल रणमडळ, करै उदगळ मिनख जिनावर
साथैं पग भाई, आगै पग धर

---

१ सहीद प्रतापसिंह बारहठ
२ जोधपुर राज्य रा सहीद

भगतसिंघ, असफाक, राजगुरु चोटचा चढचा करै पुकार
हाडी राणी, लिछमी बाई, हजरत बी हुयगी घर नार
हल रे जन जन, हल रे जन मन, हल रे जोबन गवरी सफर
साथै पग भई, आगै पग धर

हल जळ थळ, आभै रा रघड, रगता होळी रमै जवान
हल नाहर आजाद फौज रा, हल नेताजी रा अभिमान
हल रे तन मन धन जनता रा, सख बजायो वीर जवाहर
साथै पग भई, आगै पग धर

कड़कै कटक करारा रा

सीवाडै बाढेत्या भळकै, कड़कै कटक करारा रा
हाट चावदै धूसा धड़कै, भुज फड़कै मादधारा रा
आ धग धग धरती धूजै जद कोट कागरा गूजै
अै रण बका हूकार करै, जद जूय चढै जूझारा रा

पोळ पीळिया करै गमोळा, मकर करै मनवारा रा
सिखर हिमाळै लाय लगादी, फैल करै खुरदारा रा
अै झूठा हेत झिकाळी धोखै सू धरण दबाली
अै असुर पूठ पर चोट करी जद, आळस उडग्या मारा रा
सीवाडै बाढेत्या भळकै कड़कै कटक करारा रा

गाठ बधी गुदडी मे रहता, ऊधा सोर विचारा रा
सैंस जुगा री सैणप सडगी, तूटा तार तुमारा रा
अै पीळा सुरख कसाई घर बैठा मौत बुलाई
अै रग-रग उरजण भीम रमै, खड़कै खडक खगारा रा
सीवाडै बाढेत्या भळकै, कड़कै कटक करारा रा

कमरा कस रण समरया निसरी, नेह तज्या घरबारा रा
रेख रेख सू रघड उपज्या, हठ हुळस्या हकदारा रा
मै तन मन भेंट चढावै जैहिंद गूजता गावै
सुमत चढी सेठा री सैणप, ढेर लग्या कळदारा रा
सीवाडै बाढेत्या भळकै, कड़कै कटक करारा रा

उलड आयदयौ जन रौ जोबन, मारग मिळया कतारा रा
भणिया अणभणिया, अणगिणिया, असवारा रा
जुग रौ जन बळ जागै सगरया उण पैली आगै
आगै वधतौ अेक थकै जद, हाजर डीन हजारा रा
सीवाडै बाढेत्या भळकै, थडकै कटक करारा रा

दोनू कविताआ भारत चीण जुद्ध रै टांणै, सन् १६६२

जद हांग हिडकतौ आवै है

लाल धजा रौ रग चीण मे, पीळौ पडतौ जावै है
लाल फोज रौ रोग पीळियौ, घर जनता नै खावै है
लेनिन रौ नाव लजावै है जद हाग हिडकतौ आवै है

रग रग मे चोज हुलाकू रौ लोई तातारी है
धाडविया रा ढग मदा सू चीणा री मक्कारी है
मचूरी मरियल मूरखता, पर घर जाळ बिछावै है
पण घर रा पग उळझावै है जद हाग हिडकतौ आवै है

मारक्सवाद री माटी बिगडी, माओ री मैफल मे
सीख लिया लटका लेनिन रा हिटलर राज करै मन मे
माओ री चगेज चाल सू, साम्यवाद मुरझावै है
जुग रौ जीवण सरमावै है जद हाग हिडकतौ आवै है

साम्यवाद मू अवसर सरायौ, लाल रूस हथियार दिया
हुकमत चढता चढी हेकडी, तातारी रग त्यार किया
आज रूस नै माओ-चाऊ, मारक्सवाद समझावै है
कोरा गाल बजावै है जद हाग हिडकतौ आवै है

जद जद चीण करारौ दीसै, घर जनता पर भीड पडै
पीळौ ताव चढै हुकमत नै पाडोस्या मू सैंत लडै
पीळौ पक्कौ रग पुराणौ, रातौ रग उडावै है
जीवण नरक बणावै है जद हाग हिडकतौ आवै है

घणै मान सू मिनख बणाया, भेळप राखी भूल भरी
कड लगाता नैण हस्या, पण हाय पूठ पर चोट करी
पूरव मे पढी पर पडिया, दुस्मण सू डर जावै है
सैणा रा कठ दबावै है जद हाग हिडकतो आवै है

नरम बात निबळाई समझ्या, छाती चढतो आवै है
धरा चीण म धान नही, पाडौस्या नै धमकावै है
सावत पोलमपोल घणेरी, पोला ढोल बजावै है
गप्पा रा गोट चलावै है जद हाग हिडकतो आवै है

घर जनता रोट्या नै रोवै, लाल फोज नै घी-बाटी
फूट झूठ नै लूट मौत री, जनता उतर रही घाटी
मीला थमगी, खेत उजड्या, पर घर फौज चढावै है
माडाणी मौत बुलावै है जद हाग हिडकतो आवै है

भारत चीण जुद्ध रै टाणै, सन् १९६२

माओ, साओ चौ-यन लाई

जोग जवानी रै तणग्रल पर
छोरा छोरया पूछै घर-घर
वरण पीळियौ रातौ ग्रापण, हेमाळै हठ लागो कुण
लात पडी जद भागो कुण
माओ, साओ, चौ-यन लाई, हिडक चढी जद मौत बुलाई

मुरख रगपोडा मटमैला पर
हियडे बिम्ब, मिसरी ज्यू मितर
हृम हयाई पर चढवाळो, कपट भेग्र मे वागो कुण
कवळो काचो धागो कुण
माओ, माओ, चौ-यन लाई, अक्ल मडी जद दुग्गध आई

हाय कटारी, हसी होठ पर
इजगर चढग्यो हेम कोट पर
इण घरडै मरियल मुरगै नै माड लडावै, पागो कुण
किसो सागडी ढागो कुण
माओ, साओ, चौ-यन लाई, लोक-वळद अै तीन कसाई

भिडक धड कै साड सडक पर
नीत जीभ मे हुयगी टक्कर
मडक सीगडा धूड उडावै रण खेता सू आगो कुण
भरी सभा मे नागो कुण
माओ, माआ चौ-यन लाई, पोटा करता करै लडाई

टिरै नही अपणी वाता पर
कढण ऊदरा खोदै भाखर
खिस्टी री धवळी चादर पर, जन लोई रौ दागो कुण
फूटचा ढोला ठागो कुण
माओ, साओ, चौ-यन लाई, पूरब खड री वात गमाई

भारत चीण जुद्ध रै टाणै, सन् १९६२

सुणजै रे चौ-यन लाई

सुणजै रे चौ-यन लाई, अेसिया मे बात गमाई वे
पचसील री वेल कटाई, थारी अेडी लुगराई वे

हिन्दी-चीणी पास-पडौसी सदावत रा भाई
सौ पीढी मे कदै न आपस मे तलवार चलाई
हे थू ई पैली पूठ छुरी पधराई वे
हे हाथ छुरी, होठा पर भाई भाई वे

हे सौ जगती री ख्यात वतावै कदै न करी चढाई
हे पाडौसी सू प्रीत पाळणी मा रै दूध सिखाई
हे नेह निराळा हिन्दी लोग लुगाई वे
हे मिनख जात सू पाळै सीळ-सगाई वे

अब कितरा ई मीठा बोलौ बिगडी नही वर्णीली
पीढी-पीढी चाऊ रै धोखै री बात भर्णीली
हे बात बदळ नै रसना री साख घटाई वे
हे हिन्दी जन रै मन मे पडी खटाई वे

हे अब था पर बिसवास नही रत्ती भर ई पिंडत नै
जूना सँग करार तुटग्या फाड वगावौ खत नै
हे लोक-सनेही पुळ नै तोड वगाई वे
हे सारै जुग मे हुयगी लोक हसाई वे

भारत चीण जुद्ध रै टाणै, सन १९६२

फोड़ छालौ, मार नस्तर

ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर धावर
रे करारा भील मैणा
सावता रजपूत सैणा
रे जमी रा जाट गैहणा
सेख, सीधी लीक वैहणा
सभळ, ढाणी धाड पडगी, साथिया सू मिळगियौ घर
ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर धावर

ऊठ रे इतिहास इचरज, भोमिया रा वाम भाखर
राख मन तन मे सवाळो
थाम रैफल फैंक भालौ
दरद सू दाधै हिमाळौ
पौन वरणौ कुळै छालौ
हिडक, दुरजण डाण मांगै, सै चुकादै, आज औसर
ऊग रे मरुदेस सूरज, जाग थळ रा धीर धावर

उफण, हळदी घाट री रज, हुळस छप्पन भाखरा नर
नर-तुरग रे लाल लोई
भू नरा धिरती भिजोई
सिर दिया जद धण उजोई
दौडग्या री धाय रोई
कडक, उण धर फौज बडगी, लूण पाणी नै मुरग मर
ऊग रे मरदेस मूरज, जाग थळ रा धीर थावर

चेत, सतमत ऊवता गज, जूझ मारू, सबर सागर
जैर री जड जाय ऊडी
पच खाई चोट भूडी
न्याव सत री फोड कूडी
गाडिया री फिरै डूडी
गरजतो सुणलै हिमाळो, फोड छालो, मार नस्तर
ऊग रे मरदेस सूरज, जाग थळ रा धीर थावर

भारत चीण जुद्ध रै टाणै, सन् १९६२

क्यू जनम्यौ इण देस

दूवा

रे कवि कठण कलाम रा, क्यू जनम्यौ इण देस
जीणो व्है तो झेल लै, जिडद गावणौ भेस

इण धरती मे अेकलौ, थू क्यू करै कडाण
जद जन-नायक झेलिया, ठग-विदिया रा ठाण

कळावत नै कोयडा, दरबारचा नै दाम
मोल मिळै वै मिनख है, कविया रौ के काम

विदिया हुयगी बावळी, ठोठ ठगा रै ठाव
अधभणिया नै अकादमी, अणभणिया रौ नाव

अणभणिया री आलमी, अणघड हुवा उमीर
अधभणिया ऊतारसी, सरसत हदौ चीर

लोक कळा लूटीजगी, जाचक पहरचौ झोळ
बिकै धडाधड काचरा, मिणका मोत्या मोल

लखै नही कुछ लोवडौ, समझै सो सिरदार
जवराई री जीत है, लोक-कळा री हार

इण जुग रा इकबार

दूवा

रण धूसा रजथान रा, वै जूना इकबार
इण जुग आडा पसरग्या, लोभ किया लाचार

रगत राळ नै राखता, कलम बह्यो री काण
डूम दलाली में दबी, इकबारा री आण

जन-मन ज्यानै जाणतौ, जुग-जीवण पतवार
पूछ वध्या गोडा घिसै, विग्यापण री लार

इकबारा रै आगणै, नकटा बाजै नेक
अक्ल अडाणी रावळै, टुकडा टुळगी टेक

रळै राज मे रोवता, दर-दर देखै दान
डर दळ-दळ मे डूबगी, सपादक री स्यान

खोटी खबरा नित घडै, निमग करै बोपार
आप कहो ज्यू छापदै, देखै दम कलदार

महाराजा रा सोरठा

पुरग्रा वचन प्रमाण, मिळण मोद सू मन मढचौ
परतख पडी पिछाण, पूछ-परख पारस तणी

पारस प्रबळ प्रवास, परस लोह कचन करै
कठण पूगणौ पास, अपणै बळ सिरकै नही

किरतब बिना कलाम, गरज घणी, बिरखा नही
किणरै हाथ लगाम, कमधज कुळ केहर तणी

दीमण दिल दरियाव, मनवारा मोटी घणी
दातारी रौ दाव, दान विहूणौ तडफडै

पलक बधावै हाथ, पल मे पाछौ खाचलै
बा मूरा रौ साथ, सुपनै ई देणौ बुरौ

पल देखावै दात, पल मे मूडौ फेर लै
वा पुरसा री पात, सुपनै ई मत बैठजौ

किणनै करा सिलाम, प्रणवीरा रीती धरा
कमधज तणा कलाम, भार बिना उडता फिरै

निपट नही परतीत, रे कवि भोळा बावळा
राजविया री रीत, बात करै पाछा फिरै

काका संग भतीज

दूवा

काकौ केहर काज रौ, गायक गुणी गभीर
भूमण भणै भतीज मे, सुवरण सुगध समीर

पगल्यै प्रथम पिछाण मे, पुळकै परगट प्रीत
जुग जुग जग मे जिगमिगै, जुगल जोड री जीत

धग धग धूजै धरस्टता, धूरत धरदै धीज
दुरजण डरपै देखता, काका सग भतीज

औ सगत री सेवरौ, वौ रगत रौ राव
पूरण पनपी प्रीतडी, पगत पडता पाव

चार दिसा मे चानणौ, चद्रभाण री चाह
रगत म रळियावणी, रूप राम री राह

सोरठा

काका कठण कबाण, भरवौ भेस भतीज रौ
चद्रभाण री काण, नेगम राखी रूपसी

हाट चोवटै गाव, हरखै निरख भतीज नै
काकोसा रौ नाव सूरज ज्यू दिव दिव करै

नवै नैता नै

सोरठा

जन पद करू प्रणाम, पद पाच्या उण पूत नै
जन जुग तणी लगाम, जिण मुख झेली रग है

दूवा

वै चावै उण पथ मू, जावै सो पत खोय
हसनै वहदौ माथिया, जिण पुळ जाणौ होय

खोगरिया खडबड करै, सैणप डूबी मोय[1]
लोक पथ मे लाज रा, लिया लूगडा धोय[2]

थाणै चाकर चिडचिडै, लाख-लाज री हाण[3]
धुण राखैला कवरजी,[4] लोक राज री काण

१ सैणप रहगी रोय। २ भर्‌य चोवटै लाज रा, दिया लूगडा धोय
३ लाज हुरब री हाण। ४ धुण राखैला साथियां। धुण राखैला लालजी

ऊचौ पद, डीगा वधौ, औसर घणौ अमोल
चढ़ग्या लाख छवाम है, चढ़ण-वधण रौ तोल

इज्जत है इन्याव री, स्वारथ रौ सनमान
रुळियारौ है राज मे, आछा रौ अपमान

तिकडम ताने ताकडी, विकै परायौ माल
सीयाळया रै सीर मे, नकटा हुयग्या न्याल

तिकडम करलै सो तिरै, भिनखपणौ मर जाय
गीध कागला गाय लै, सुर सायर मिट जाय

पैठ पराई पोळ मे, आधा करै उछाळ
पीढ्या करसी पागळी, दळ-बळ तणा दलाल

नाहर नथग्या नोट सू, उडै अकासा ऊठ
जच्चा झोखै राव नै, साड्या साधै सूठ

माता मणगा मोज मे, काम करै कवाळ
धनवाळा री धूद मे, धन होमै कगाल

हेत पचीसी

सोरठा

जोयलै आख्या खोल, जन मन राजस्थान रा
गजब गुळाचा गोळ, नतावा रै न्यात री

आपस रा अपराध, निसरै पिण विसरै नही
जनता तणौ विसाद, गादी चढता गुण गिणै

पगा पडै सो 'पास', समता सू सगपण नही
बडै हुकम रा दास, जन नायक रै चित चढ्या

अणचाही औलाद, साथीड़ा मे कस कठै
'घणी खमा' रौ स्वाद, डाढ लग्यौ छटै नही

दरबारचा रा दाम, इण जुग मे चोखा वटै
हिवडै हेत हराम, रण रघडा रै रग सू

लोक तणी विसवास, सिर दे सच्चौ सूरमा
तिकडम करमी नास, सत मत समदा डूबसी

सतमत हटग्यौ जोर, मिर गादचा सूनी पडी
चवडै चढग्या चोर, जन नायक रै जोर सू

रण रघडा री साथ, पगै हालता ओड रौ
आछा अलग अनाथ, तखत मिळचा, डोफा डफर

ज्या खाधा पग राख, सिर नायक सिखरा चढचा
पाक गई जद साख, ठोकर दे अळगा करी

रिसवत हदी राज, पूजा परमिट पथ री
ठेका रा ठग आज, चढै चढचा चुणाव मे

मोल मिळै मरजाद, छळवळ रा भाटा तिरै
डाढा लग्यौ सवाद, मुफ्त माल री चाट री

गादी तणी गुमान, भरम भूत सो सिर चढचौ
जनमत हदी मान, सिखर चढचाडा क्यू करै

दूवा

सुणनै तौ समझै नही, समझै तौ टळ जाय
सुण समझण रा साग मे, मुळकै नै वळ जाय

धाडैती धरमातमा, मूरख चतुर सुजाण
नेताजी रै नेह री, नाडी कियो मिनान

गोटी, लाठी, हथकडी, कूड कपट रो राज[1]
बापू थारै मुलक री, लाटी लूटै लाज

---

1 गोरी माठी हथकड़ी मोहनराज रा माज

त्याग बतावै वाणिया, सता हाथ वदूक
हाथा सिर भाटा चुण्या, जन नायक री चूक[1]

काकौजी नै कूटिया, घर सू दिया नसाय
सुणता घर मे लगन री, बिना बुलावै जाय

जद कहता इण राज रा, रखवाळा मे खोट
लोटपोट री चोट सू, हुयग्या सग निघोट

पिरसू कहता देवता, काल बताता चोर
पल मे पासौ पलटग्यौ, चोर हुवा सिरमोर

जूनी वहिया वाळ दी, विसरचा सेंग कसूर
ढुलमुलिया री ढील मे, जन रौ गळचौ गरूर

होठा हस निकमा करौ, हेत प्रीत रा खेल
कठै गाज रै काज रौ, मिनखपणै सू मेळ

आज लडावौ ठाकरा, धाडेत्या रा लाड
क्यू जनता रै नाव सू, मुफ्त मचाई राड

थे लडभिड भेळा हुवा, जनता भूली चेत
किणनै समझै देवता, अर किणनै कै धाडेत

राड बधै जद रावजी, तेडै सकल जहान
मतौ करै जद मेळ रौ, जनमत जहर समान

धाडेती धरमातमा, कियौ सातमौ सीर
घर रा घर मे सलटग्या, परमेसर नै पीर

1 जनमत हदी चूक

मिनख-मिनख सू मेळ

दूवा

उतराखड मे आवती, लेहरा रही अनेक
हूण यवन हबसी अरब आर्य हुवा सब अेक

जुग-जुग भेळी भारती, सौ रग हुयग्या अेक
जात जनमता डूबगी, मिनखपणै री टेक

जात-पात रै जुलम सू खाधै चढगी छूत
टुकडा हुयग्या मुलक रा, वैर विखरग्या पूत

निबळी पडगी भारती, हाय हाय नै खाय
जात-पात री जामकी, दीन्हौ घर सिळगाय

आर्य मुलक री हाजमो, मध जुग हुवौ खराब
इस्लामी आया जदै, उतर गई सब आब

जुगा जुगा सू रळ रह्यौ, रगत रगत मे भेळ
इण जुग करलो चाव सू, मिनख मिनख मे मेळ

सब अडचण अळगी करौ, तजौ फूट रा खेल
हरख निरख हिवडै धरौ, मिनख मिनख सू मेळ

सीख रा दूवा

हिळमिळ हलता सैण स, जग मिळगी भरपूर
खिलखिल गुण जन जाणगी, कोरा करै फितूर

लोक हगाई लोक मे, किया क्रोध छळछद
परखा रै इन्साव नै, गहता वधै सुगध

माफ करै सौ मिनख है, भिड़कै सौ ई ध्राव
बदळौ लेणी भावना, नीच मिनख री नाव

घर आता हसती मिळै, मुधरी मिळै जवान
जिण घर नारी सुलखणी, वौ घर सुरग समान

किरियावर नैं बिसरजौ, भूलौ मत उपकार
भइसा री आसीस है, नित दूणौ सुख प्यार

अगन पुसप री पाखडी, काठ तणौ सिर सूळ
राख करैली काठ नैं, बणता-बणता फूल

आ उस्तादी उळझगी, अक्कल अडी अबोल
अबै अखाडौ उलटसी, ऊबड-खाबड ओळ

सत भणता अटकै नहीं, कडवा कवित्त बणाय
जन कवि पन पटकै नहीं, हठ चढता कट जाय

सहीद प्रतापसिंघ बारहठ रा मरसिया

सोरठा

रजपूता रै काज, सिर जूझार प्रतापसी
राणं पायौ राज, सोभा सारी जात मे

माथौ देय स्वराज, लीन्ही अजमेरी पते
इणरौ हुवौ अकाज, सेठी सिठग्यौ सोग मे

दोय हुवा परताप, रूडै राजस्थान मे
उणरा खावै धाप, इणरा रुळग्या रोळ मे

दूवा

अकबर दुसमण देस रौ, देस भगत परताप
किसैं देस री बात है, कै कुळ बारठ आप

राड सवाई मान म्, राणा रो रण भेस
कितरा कटग्या कबरडा, जात बची के देस

पूज बडेरा आपणा, दुरगा नै परताप
आन बचाई आपरी, रजपूती री छाप

व्यास जी रा मरसिया[1]

इण दिन तारो तूटियौ, इण दिन डूबी नाव
वरस बीतग्यौ लहम मे, रगत न रुकियौ घाव

दुख मे कदै न राखियौ, आगळ भर अळगाव
अंत समै क्यू आतरो, भायड ! भूल बताव

सकट साथै झेलिया, साथ मनाई जीत
जम सू सकट झेलता, कठै बिसरग्यौ प्रीत

लेम न लक्खण देम मे, भेस बिगाड्यौ भाव
लोक गमायौ काळजौ, दगौ जीतग्यौ दाव

पण जनकवि उस्ताद नै, इण दिन इतरी आस
सरग न ओपै अेकलौ, जुग जन-नायक व्यास

राम निसरग्यौ देम रो, भेस करै है राज
धरती री धायल गियौ, अब जीणो के काज

इण दिन तो ई पीड रा, आसू वहग्या आथ
कह जनकवि इण जगत मे, अब रहणौ के साथ

---

[1] १४ मार्च सन् १९६३ मे लोक नायक श्री जयनारायण व्यास रो सुरगवास। सन् १९६५ अक्टूबर २६ नै उस्ताद रो सुरगवास।

संतांनसी रा सोरठा

रूडौ राजस्थान, हिवडौ हिन्दुस्तान रौ
जिण जायौ सैंतान, वीर मुलक आजाद रौ

पाट-भगत पतवान, रजपूती जुग-जुग रही
जनता तणौ जवान, प्रथम भिड सैंतानसी

जुगजुग रा सिरदार, सिर पाया जुगधरम रा
जनता रौ जूझार, सिर मूरौ सैंतानसी

चरण चढाई भोम, रजपूता इण मुलक रै
हेमाळै सिर होम, साख भरी सैंतानसी

जुग पैली सिरदार खामद धन धरती तणा
फरजद पौरेदार, इण पुळ मे सैंतानसी

जुगजुग सू सिरदार, धरतीपत व्है जूझिया
जनसेवक जूझार, अमर हुवौ सैंतानसी

मोटौ भारत देस, क्रोड चवाळी मिनख रौ
भारत भरवौ भेस, सिरनायक सैंतानसी

चद्रसेण परताप, खाप धरम रा सूरमा
लोक राज री छाप, रगत रगी सैंतानसी

भाटी भड वळवान, सावत जुग रा सूरमा
हिन्दी फौज जवान, सिर मेजर सैंतानसी

त्यूंहार

दूवा

निजला अेकादसी

घर मूं गोरचा नीसरी, सज सोळै सिणगार
हींडा मूं हरखावणी, निजळा तणौ तिवार

राखड़ी पूनम

पिचरग फूंदी मूं जड़या, चार सूत रा तार
बैनड बाधी राखडी, वीरै झेल्यौ भार

रांगोली

मगळ पुळ मगळीक मन, सज्यौ सवारयौ द्वार
रागोळी रै रग मे, आवण री मनवार

गिणगौर

सजी-धजी मैं गोरडचा, गीतडला पर जोर
सरवर हाली चाव मूं, सीस चढी गिणगौर

भाई बीज

कूंकू भरता आगळी, सागर गियौ भरीज
बैन सजायौ थाळ नै, आई भाई बीज

दीवाली

दीवाळी दिवदिव करै, रागोळी रगदार
लिछमी री पूजा करै, घर लिछमी घर नार

बछ बारस

हाडी मीज्यौ गूगरौ, जीवत हुवौ निदान
बछ बारस नै यूं मिळ्यौ, भोळपणै वरदान

बडी तीज

हिळमिळ पूजै नीमडी, गावै मगळाचार
बडी तीज रै मोद मे, सजी सवागण नार

मेंदी

हिळमिळ हाथा हूळसी, वाता मे मनवार
आ मेंदी रग राचणी, जद जीवण रगदार

उस्तादां री आंण · कुडळियां

उडती बाता आपरी, सुणली इतरा मास[1]
अबै उखडगी भायला, न्याव मिळण री आस
न्याव मिळण री आस, नह मू रही न बाकी
भीड-पीड री भेळप, विटळचै सत मू थाकी
उस्तादा री आण, क्रिपा कोथळियै राखो
बद करो परचार, करो तो साची भाखो

आधी उमर सिधावियां, घात पडी जद बाप[2]
नुगराई उण सू करी, वै कद खासी धाप
वै कद खासी धाप, स्राप सू भसम हुवैला
वधतौ-वधतौ पाप, घडै री कोर छुवैला
उस्तादा री आण, दगै रौ डाम अटळ है
जुग जाग्यौ के मिळ जासी, करणी रौ फळ है

गलती की, घोडौ दियौ, मत चूकै असवार
बाबोजी नै तारिया, अब काकै नै तार
अब काकै नै तार, काटदै कुणबौ सारौ
सदावत सू मरदा रौ नुगराई नारौ
उस्तादा री आण, मार दै सेग वडेरा
थू अजीत[3] सू आगै वध, जन राज वछेरा

---

१ सुणली चवदै मास। २ चोट खायनै वार ३ अजीतसिंघ राठोड री भान जको दुरगादास खीची जैडा मार्ईत रै सागै नुगरापणो करयौ।

नैड़ी भीता निखरिया, आखर लीजौ बाच
धूवाड़ै नै चोरती, वा निकळी है आंच
वा निकळी है आंच, वायरौ चढाव पर है
सिखर चढ़ चोडा सुणौ, लाख रौ थारौ घर है
उस्तादा री आण, मागणौ व्है तौ मागौ
चिणगारी सू लाख-भवन उड जासी आगौ

पण फौलादी सारसा, जनकवि हृदा प्राण
जोर पड़ै ज्यू पग जमै, सघरसा री बाण
सघरसा री बाण, खुसामद करी न पाई
अबै आखरी मजल करू क्यू मूढ पराई
उस्तादा री आण, गिया ठावर नै राजा
अब जासी ठग राज सुणीजै कवि नै बाजा

सघरसा रै न्यावड़ै, पकी ठोकरी लोह
हक पर लडता सूर नै, माटी रौ के मोह
माटी रौ के मोह, करौ सासत नुगराई
लडता-लडता पडै, जीतसी अत लडाई
उस्तादा री आण, चढैला जम री घाटी
विख कीडा नै मार, सडक पर पडसी माटी

न्याता बाता आपरौ राखै अलग अवोग
पण वाता रै अत मे फाग रैवैला फोग
फोग रैवैला फोग, जोग है मारकेस रौ
अत डूबसी आप घात करै जो देस रौ
उस्तादा री आण, कुबद सू वधै रोग है
डूम-दलाली डूवसी, बस औ अवोग है

आजादी री आयग्यौ, अणचीत्यौ वरदान
साकळ कटता मोद मे, जनता चूकी ध्यान
जनता चूकी ध्यान, गधेडा धान खायग्या
जन समझ्यौ भगवान, हाथ मे कान आयग्या
उस्तादा री आण, पेट पर पडी दुलत्ती
गादी मिळता, गुण ग्यान री कटगी पत्ती

इण ग्वाडी रा बापजी, लियौ अमरफळ खाय
डोकर हुयग्या डीकरा, पडपोता परणाय
पडपोता परणाय, धरा पण भवरचा बाजै
धन हुक्मत पर बावौ, कूची लिया विराजै
उस्तादा री आण, कुटब औ अमर जोत है
जठै जीवणौ नरक, स्वयोडी उमर मौत है

सगळा मरग्या भायला, भीड़ दिया खपाय
आख मीच नै खोवग्यिा, खोळै लेता जाय
खाळै लेता जाय, जिका परमेसर मानै
चवडै माळा फेर, भरै धन फरजन छानै
उस्तादा री आण, कड़ूवै कचरी बासै
पण बावौजी अट कूचिया कसता खासै

हाथ पगा मे कस नही, सगळा खिरग्या दात
मूड हिलै पण डोकरा, पूरी करै न पात
पूरी करै न पात, भात री पोत पडै है
पूत बुझावै जोत, गोत सू दाव लडै है
उस्तादा री आण, अगम आभौ पड जासी
डाकर रहता पूत, चढ्या सैणप सड जासी

घर सायब री सायबी, जन सेवा री नाव
सोदै विकगी सायवी, चढग्या फूटचा ठाव
चढग्या फूटचा ठाव, नाव री कियौ नगारौ
कूट-कूट नै चूट चूट नै करग्या चटकारौ
उस्तादा री आण, गधा री किम्मत जागी
बिना हिलाया कान, पूठ पर हुक्मत आगी

नेहरू रहग्यौ अेकलौ, मरग्या सै दिगपाळ
लारै बचग्या भूखणा, के गिडक के स्याळ
के गिडक के स्याळ, देस रौ डाण चरै है
मैणत भूखै पेट, सेठिया पूठ भरै है
उस्तादा री आण चौचडा चिपग्या गादी
धन हुक्मत रै लोभ, कपूता स्यान गमादी

भान-भात री बानगी, भात-भात री आट
मोळै घोडा जोगिया, आठ दिसा मे बाट
आठ दिसा मे बाट, चलावै चाबक सोठै
चढ्या मसखरा हाथ करै, हांळै भई होळै
उस्तादा री आण, निजामा तुरग हकालै
आठ दिसा मे खेंच्यो रथ, तिल भर कद हालै

हुई राजस्थान मे, भात मिळी उगणीस
कागद माथै अेक है, हिवडा मे अड्तीस
हिवडा मे अडतीस, अेक री सिरैगच्छ है
नावै-नावै गच्छ गोटिया, मगरमच्छ है
उस्तादा री आण, पाप री नाव तिरै है
राज-काज मे अेक, भेम री आण फिरै है

रीत-भात री रावतो, यागी खाटी छाछ
धरम दूग री धाधळी, कुबध-कोप रा राछ
कुबध-कोप रा राछ, जुलम रा जबरा सस्तर
गवळ माड रा सींग, निबळ री नस रा नस्तर
उस्तादा री आण, करारा सू सब कापै
माथै मारै लात, तिका पग पिंडत चापै

ओछी हाडी पाव री, ऊर दियो अधसेर
आच लागता फूटगी, धान राख री ढेर
धान राख री ढेर, उछळग्यो पाणी तातो
जिण अग लागी छाट, दूखणो हुयग्यो रातो
उस्तादा री आण, निसरगी दूत-दलाली
बळी मूड पर खाज बताई, दाझ दबाली

निबळा पडग्या काळ सू, नाहर रा नख दात
भिडक गया सै भायला, सेंग बिखरगी पात
सेंग बिखरगी पात, तात लारै सै काची
जण-जण भरी जमात, भसूड्या जबरी माची
उस्तादा री आण, भसूडा बदळी खोळी
जनता री जै बोल, घुसै नै हेरै ग्योळी

डूम दलाली कूटियो, साच धरम रौ ढोल'
कूकण लागा कागला, जनता री जै बोल
जनता री जै बोल, मुलक नै लूटण लागा
खळ सू गुळ ले मोल, तोल नै देता धागा
उस्तादा री आण, लोभ नै कठै लाज है
कूड कपट इण जन हुकमत रा साज-बाज है

अेक सागडी ओपतौ, मेंग निकामी पात
हाजर सगळा हूकरे, ओटौ हुवा निरात
आटौ हुवा निरात, आग्र नै हाथ छळै है
समझै नहीं छदाम, अडब रा आक बळै है
उस्तादा री आण, पड्या दस बीस हाथ है
सगळा नै मगळा समझावै अेक साथ है

सोदै सत सजायग्या, आजादी री हाट
ब्याज-बिणज रा गादडा, माल गिया सै चाट
माल गिया सै चाट खाल जनता री सडगी
भाडै मिळग्या देसभगत, गोटी चित पडगी
उस्तादा री आण, बिक्या कोड्या मे मोती
नेताई रो नाव, पराई पैरें धोती

भगत कटाई आगळी, गिया चार दिन जेळ
नेहरू री जै बोलता, पिसन पाग्या छैल
पिसन पाग्या छैल, सेल मे खाय मलीदा
फेर कमालै कपडा सीता, काढ कसीदा
उस्तादा री आण, देख भगती रौ मंडल
रोळ रमत मे मुजरामल री जमगी मैफल

सैत गिया जो रण चढया, भारत रा रणबीर
सेठ कवर री छप गई, इकवारा तसबीर
इकवारा तसबीर, छप गई बात किया सू
मोल मिळै तरवार तोप, सगळी रिपिया सू
उस्तादा री आण, मरै माझी अण रोया
रिपिया दे दस-बीस, पाप सेठा सब धोया

ऊंची अचक्कन, टोपली, मूथण चूडीदार
ठप्पौ खादी छाप री, कोतल घोडा त्यार
कोतल घोडा त्यार, ठाठ मे ठोठ ठीक्करा
नवै राज मे नवा निकळिया साग भीख रा
उस्तादा री आण, सज्या है ठूठ निकामा
जठै गळै गुळ-खाड, उठै मिळ जासी साम्हा

डूम दलाली मौज मे, मत रै घर सताप
चोर चौक्कणै राज मे, खाय छिनाळी धाप
खाय छिनाली धाप, पाप री नाव तिरै है
सुध नै लागौ स्राप,[1] रोवती राड फिरै है
उस्तादा री आण, नाप नै नाल कठै है
कीडा रै दरबार, मिनख री मोल घटै है

आडावळ सू उतरिया, बचकानी कद भात
आ वैठा अणजाण मे, वडपचा री पात
वडपचा री पात, आत म पडचा अळूझा
धरचा जेव मे जीभ, करै गादी री पूजा
उस्तादा री आण, ठाण मे भरचा खोपरा
निसग चरै अणजाण, काकरा करै कोप रा

काग्रेस रै काळजै, बसै वेंतिया देव
दिल्ली मे सजीविया, जैपुर मे हरदेव
जैपुर म हरदेव, टेव रा टावर दीसै
लोक न मानै पाव, भलाई दस मण पीसै
उस्तादा री आण, पीमनै करै चापडी
छतर सिंघासण थका, पातमा वर्ण कापडी

'मुजरी मा' री मैक्ला, नवा नवाबी ठाठ
गज नाहर रा जोर सू, स्याळ सवाई लाट
स्याळ मवाई लाट, हाट रा सीरी फोडै
इण उण रा नख दात, चरै दो पगता जोडै
उस्तादा री आण, चिळक है टिनोपाल री
नाहर पलटचा खाल, खटीका जोग स्याळ री

---

१ कविता लागी स्राप

नख सू मिख नाटक भरया, खरा फाटकै बाज
निजर चोर, नुगरा, मुधर, नग पाला पुखराज
नग पोला पुखराज, सराफै बटै न टक्कौ
माई मे ई साह वरै कद सौदौ पक्कौ
उस्तादा री आण, पितळणौ अजब चामडौ
जद कद आसी ढाळ, गमासी पेर गामडौ

टिनोपाल सू टोपली, धुप-धुप हुई सफेद
धवळ भेख मे दब गया, गुप-चुप काळा भेद
गुपचुप काळा भेद, छेद जन रै कोठारा
नफाखोर रौ नाव, दळद दळ री सिरकारा
उस्तादा री आण, हुई सब री बरबादी
परमिट ठेका पव, पैहरली जद मैं खादी

सेंग धडा रा धाडवी, जितरा जोडीदार
कागरेस री छाप मू, चढग्या सात सवार
चढग्या सात सवार, सबा रौ मारग न्यारौ
जन रै हित रौ नाव आपरौ स्वारथ सारौ
उस्तादा री आण, जीभ इतगी कवळी है
बापू रौ जस बेच, तखत पर चरै छळी है

बापूजी रा लाडला, बच बिगाड्यौ देस
तिकडम तोडा विक रह्यौ, बापूजी रौ भेस
बापूजी रौ भेस, कोम अळगा सू बासै
खोबरिया री 'रेस', अैंठ गिडकडा ग्रासै
उस्तादा री आण, आज कविराज भाड है
कविता खेता चरै, रुखाळा तणा सांड है

बापू सिर रौ सेवरौ, नेहरू कचन सूत
लारै रळगी पीढिया, निपज्या पूत-कपूत
निपज्या पूत-कपूत दाम पर दूत-दलाली
डाणत विकगी मोल-तोल, सै देग्या ताळी
उस्तादा री आण, डाण अणजाण भरै है
धवळ भेख री काण, कपूता पाण मरै है

सरगा सत सिधायग्या, सडगी सगळी ओठ
चेला हदी चामणी, निमरी पतळी घोळ
निसरी पतळी घोळ, झोळ मूं लोक छळै है
सेवा रै मिस जन-छाती पर मूग दळै है
उस्तादा री आण, जाणता हुवा अजाण्या
कोड्या निकम्या पूत, जूत फटकारै बाण्या

सता रा सळ नीसरया, बापू करग्या काम
हुक्मत हिलता हुय गियो, हक मूं हेत हराम
हक मूं हेत हराम, निकामा नाव कमावै
ज्या खाधा पग मैल चढया, वै धक्का खावै
उस्तादा री आण, दगै रा दाम पटै है
बापूजी सूं लोक तणो विसवास हटै है

बापूजी थें मर गिया, धिन धिन थारा भाग
दो दिन ओरूं जीवता, डाकण जाती लाग
डाकण जाती लाग, त्याग री स्यान बिगडती
हुक्मत हदो दाग, लाग मताई भिडती
उस्तादा री आण, आज मैं जन ऊपर हो
दो दिन वेग सिधाया, इणी सूं आज अमर हो

बापू थें तो पूचग्या, सरगा पल्ला झाड
लारै पमगी लोक री, नागफास मे नाड
नाग फास मे नाड, नाग चादर मे पाळ्या
ज्यानै समझ्या सर, निमरग्या सेंग सियाळया
उस्तादा री आण, निपूतो मिनख सभागो
आड पूत के काम, लगावै चादर दागो

वडै बाप रा डीकरा, दो कोडी री साख
बापूजी रै नाव पर, पोत रह्या छै राख
पोत रह्या छै राख, धूतारा धरली खादी
तकली री पतवार, धूड म नाव चलादी
उस्तादा री आण, धरी घोडा पर लादी
खचरा सिर पग मैल गधेडा चढग्या गादी

आजादी रै जग मे, करी मुलक सू घात
अधबिच मे छिटकायग्या, जनता तणी जमात
जनता तणी जमात, रात रा माफी मागी
सेंग विटाळण फौज, मुलक री सोगन भागी
उस्तादा री आण, दगौ अब खाय धाप है
वागरम मे आज, इसा ठग आपताप है

मुख पर राखै अेकता, मन मे राखै रीस
अेक चुणीजै हेत मू, दगै चढै उगणीस
दगै चढै उगणीस, सयाणा ठोकर खाई
गळै लगाता लफग लाट, करग्यो चुतराई
उस्तादा री आण, करा किण भान सुधारौ
हाथ-हाथ नै खाय, अजब है भाईचारौ

अेक पुराणी गूदडी, ओढण वाळा सात
खोदा घालै सीगडा, राली समझ कनात
राली समझ कनात, घात मे गिंडक ताकै
ऊपर नीचै आसपास, पग माथा झाकै
उस्तादा री आण, वासग्यौ सडची अथाणौ
गूदड बचै न सूत, किता ई खेंचौ ताणौ

राजविया री अेकता, पडदै रौ चितराम
पडदै पाछै लोक रौ, चूथीजै है चाम
चूथीजै है चाम, रगत चूसै चमजूवा
कीडा बणग्यौ काम, मुलक रा माझी मूवा
उस्तादा री आण वासग्यौ सेंग अथाणौ
दो टुकडा नै मात पेट भर चावै खाणौ

तवली टेरा मूरमा, कूवा करणी फौज
इण उण री जै बोलता, कूट लिवी कन्नौज
कूट लिवी कन्नौज, विकया टुकडैल आगला
सठ हुवा सिरमोड, हजूरी गीध कागला
उस्तादा री आण, चोज मे चढग्या गादी
लखपतिया रै लाभ, करै जन री बरबादी

चरखौ चढ़ग्यौ मोरचै, जीभ लगायौ जोर
हाका सू ईं जीतग्या, वागा रणथभोर
वागा रणथभोर, जम्योडी गादी मिळगी
रूसी जरमन रगत दियौ, जिण मू छड हिलगी
उस्तादा री आण, जरै तकली टर्रावै
सडधै सूत नै तरवारा सू तेज वतावै

करणी-मरणी कूकता, धिनडा कियौ वळाप
वोवाडचा घर आयगौ, हुक्मत चरखा छाप
हुक्मत चरखा छाप, दिवस नै रात वतावै
जन रै घर सताप, धापनै धूरत खावै
उस्तादा री आण, पाण पडपच चढी है
ढोर चरै पक्वान, लोक रै थाळ कढी है

रखवाळा रा साडिया, जनता हदौ खेत
जड मू चरग्या घास नै, अब चाटै है रेत
अब चाटै है रेत, लडै है तिणका मार्थै
वौ आवै है काळ, रुळैला सगळा सार्थै
उस्तादा री आण, मिळैना नही ठिकाणौ
जनता जागत पाण, ठगी री धुडसी थाणौ

हुक्मत चुगग्या कागला, जन री वाजै राज
पेट पूठ पर लोक रै, मार्थै ऊपर ताज
मार्थै ऊपर ताज, लाज लुच्चा लूटै है
नौकर-चाकर राज-धणी री सिर कूटै है
उस्तादा री आण, जिसी पुळ पूठ हिलासी
मार्थै ऊगा सीग, सियाळचा रा खिर जासी

दो वगळा, दो मोटरा, ठाट बाट तरतीब
हुवा मिनिस्टर जीभ मू, इतरा थका गरीब
इतरा थका गरीब, चलै है चोर वजारी
भाई वेटा चरै, साख जनता री सारी
उस्तादा री आण, निसरमाई री हद है
गजब गरीवी अजब, हुकमत री पदम्द है

इमरत बरसै आव सू, होठा माथै हेत
रात पडी थे लूट लै, पाडोसी री खेत
पाडोसी री खेत, चैन नै दिन रा हारै
तिल भर करै न काम, मैंत जस माल कमावै
उस्तादा री आण, चार दिन हूकमत करलै
नव मिलता ई सबै बाप री जेब कतर लै

नुगराई नित मू रह्यो, राज-धरम री राछ
राजस्थानी ख्यात नै वाच सकै तो वाच
वाच सकै तौ वाच, खपादै मैं भायेला
मामता री पथ, मसाणै पाडै हेला
उस्तादा री आण, धान जद गादी करली
दो माथी के भार लोयडा लादी भरली

मोटा राजा मारिया, बापू चदरसैण
गादी लेता धात मू नाव न भीज्या नैण
नाव न भीज्या नैण, म्यान सागै दुसराई
मरण ममै पण लैर न छडी पूत-कमाई
उस्तादा री आण, अरै पण गैन न छोडी
दाग मिटावण नाव, बेचवा पकडी आडी

नेता नोटिस काढियो, ढोल ढिंढोरी फेर
चोपड माथै तेडिया, सभा-मच रा सेर
सभा-मच रा सेर, ढेर भर लेक्चर झाडै
इण-उण री जै बोल, गळा चदै नै फाडै
उस्तादा री आण, तमामो हुवो विखरग्या
जमा खरच मैं त्यार, सिनर आक जिसरग्या

कहदै चदो मागता, सैंग मुलक री लाभ
मोर माडर्द सेलडी, मुफ्त मिल्योडो डाभ
मुफ्त मिल्योडो डाभ, भाव मे लागै सस्तो
खातै मडचो गुलाब, हजारै री गुलदस्तो
उस्तादा री आण, बचत नेता रो हक है
चदे री वळदार, भगतजी तणो रिजक है

हुकमत विचर्ल वरग री, धन रौ बळ महाराज
वोट नोट रै वस पड्यौ, सेठ सुधारै काज
सेठ सुधारै काज, ब्याज जिण रै सिर आवै
पैली करै उधार, सौ गुणौ लोग चुकावै
उस्तादा री आण, बणै निरधन 'अेमलै'
सौ मे अेक लगाय, सेठजी सट्टा खेलै

अरथ अलूणी घोसणा, लावा चवडा बोल
भाडै आया भायला, कूटै फूट्या ढोल
कूटै फूट्या ढोल, अळूझी फेर अळूझै
वावू लडै चुणाव, सेठ रा साझ्या जूझै
उस्तादा री आण, नोट री चमत्कार है
इण चुनाव नै उस्तादा री निमस्कार है

गोठ करै है गीधडा, वोटा तणौ तिवार
कूड-कपट रा नैंतरा, रासन सेंग उधार
रासन सेंग उधार, करज ले दिखणा देवै
धाड चढ्यौ व्योपार, अेक रा हजार लेवै
उस्तादा री आण, रायती जात-पात रौ
काठ-वटी रौ घाण, लोक सू घणौ आतरौ

नेहरू री जै बोलता, खादी रौ सिणगार
तकली लेली हाथ मे, देसभगत है त्यार
देसभगत है त्यार, पावली दिवी पराया
नोट उडावै सेठ, भगतजी बोत कमाया
उस्तादा री आण, गाठ मे पड्यौ घाटौ
सेठा रा मद भाग, भगतजी निसरया भाटौ

चदौ दियौ चुणाव मे, खटमल लाटै लाद
जन-लोई रा सबडका, लेवै कर-कर स्वाद
लेवै कर-कर स्वाद, बाद मे मसवा मारै
घर बैठा परमिट ठेका रा काज सवारै
उस्तादा री आण, आण दो वोट-तिंवारी
चदौ दे जन री छाती पर करा सवारी

कूडी भरियौ खाखली, जळ सू भरी पखाल
तूंडै मे कुछ लाल है, लोक राज री चाल
लोक राज री चाल, पडै जळ तिरै खाखलौ
कचरौ गादी चढै, ओढलै बोट-भाखलौ
उस्तादा री आण, खाखलो गळ जावैला
सूर सुखामी नीर, लाल ऊपर आवैला

लोक राज मे धर-धणी, जनता री सिरताज
गोडा घसता सीखमी, कीकर करणौ राज
कीकर करणौ राज, लाज लाठा सू रखणी
घर मे माया फोड, लखैला इमरत-चखणी
उस्तादा री आण, वधैला धर मे दगा
जद तक खासी माल, लवाळी चोर लफगा

तिकडम तोलै ताकडी, राखै दोवडा तोल
मोटा रै भर ताकडी, छोटा रै रख पोल
छोटा रै रख पोल, मोल रा मितर न्यारा
लाठा नै दो भार, निवळ नै हळका भारा
उस्तादा री आण, धाक री राज अजब है
भरचै वजारा लूट, साज रा काज गजब है

कुदरत करगी मसखरी, गजा नै दे ताज
ताज पेरिया बापडा, कीकर खिणसी खाज
कीकर खिणसी खाज, ताज री दाझ करारी
पीड चढासी खीज, सीझसी जनता सारी
उस्तादा री आण, लाज नै खाज खिणण दो
बिखरै जितरै गजा रौ, लोई बिखरण दो

गरड बाज मैं टाळिया, कठ लगाया काग
मळ री काळम ढाकली, छळ-मावण रा झाग
छळ-मावण रा झाग, काग नुगराई खेली
नेह दियौ जद पूठ, छुरी जननायक झेली
उस्तादा री आण, अमगळ कियौ बाप रौ
चवडै देता बाग, धुपै कद पाप स्राप रौ

माझी इण मरुदेस रा, मगळा मरचा निपूत
पाग बाधली कागला, गीध बण्या है दूत
गीध बण्या है दूत, निजर लोथा पर राखै
मरची मास मिळ जाय, उठै ई डेरा न्हाखै
उस्तादा री आण, कागली मैफल सारी
दुरगधा रा दास, सडादी तक जनता री

जनता हदै बाग री, माळी भागी बाड
चौकीदारी चूकगी, गिडक घुसग्या ग्वाळ
गिडक घुसग्या ग्वाळ, हाडका घर म जोवै
चूल्है पर मळ न्हाख, तिखडै चढनै रोवै
उस्तादा री आण, खडाखड करै ठीकरा
देख हूमै ससार, सत रा लडै डीकरा

रीवा गढ मे निपजिया, दूधा बरणा सेर
रूडै राजस्थान मे, कुदरत करी न देर
कुदरत करी न देर, धवळ कर दियो कागलो
काव-काव कर बीठा मू, भर दियो डागळो
उस्तादा री आण, गोठिया हम बतावै
पण कुबधा री बाण, बापडो कठै लुकावै

मुख गोरो मन सावळो, नखराळा नटराज
सेर खावता नेमिया, वननायक बनराज
वननायक बनराज, निजर आता ई गादी
तुरत-फुरत नाहर री, पूठा छुरी चलादी
उस्तादा री आण, बजावै काग छाजळो
मेट पोतिया फिरै, चार दिन हस बाजलो

हियो फूटग्यो हस रो, गळै घालियो नाग
जन रा नायक सेर मे, गोद पाळियो काग
गोद पाळियो काग, सीर है नाग-काग रो
कूड-कपट मृ घूड माजनो, कियो बाग रो
उस्तादा री आण, हम पर बिपत नाग री
नायक बणया करै, उतावळ काग पाग री

परम प्यार सू पोखिया, मेंग गिग्राया दाव
ऊपर चढता नीसरचा, कपट कोढ रा घाव
कपट कोढ रा घाव, साव सडग्यौ गत सेता
पळ भर बिना पडाव, नाव नरकासर लेता
उस्तादा री आण, अक्ल नै झेर आयगी
हुकमत हदी छूत-सखणी पूत खायगी

जन-लोई री जूट मे, जन हुकमत रौ सीर
दूत, दलाली वाणिया, जन रौ खाय सरीर
जन रौ खाय सरीर, भेळ दो धूड धान मे
अफसर मीच्या नैंण, रिजक री भणक कान मे
उस्तादा री आण, हाकमी किणनै कैवै
टाग अडावै तौ चुणाव मे धन कुण देवै

नवौ खुल्यौ है मैंकमौ मेटण भ्रस्टाचार
मोटा मगर वचावता, छोटा मारण चार
छोटा मारण चार, मार पडसी निवळा पर
नेता अफसर निसग, चलासी छुरी गळा पर
उस्तादा री आण, मोज मोटा माणै है
नवौ मैंकमौ वडै लोग रौ बळ जाणै है

वडी वैन री नणद रै देवर रौ दामाद
हुवौ मिनिस्टर ल्होडकौ, सगपण री मरजाद
सगपण री मरजाद, वेलिया जैपर हालौ
हाकम वणवा हकदारा नै मार हकालौ
उस्तादा री आण, नौकरी करी राज मे
निवळा रा हक मार, नोटडा भरौ छाज मे

खाता-खाता खोपरा, पाडा गिया अघाय
लीलौ चारौ रोवता, टसका करता खाय
टसका करता खाय, मिनख तरसै टुकडा नै
रूळवै राज मे रो न सकै, निवळा दुखडा नै
उस्तादा री आण, अवै धरती धूजैला
लोक जागता ठग ठाकर रा पग सूजैला

अगरेजा रा लाडला, अफ्सर आई सी एस
होळी करता मुनक री, निरभै करता अैस
निरभै करता अैस, चलाता जन पर गोळी
जुगा-जुगा तक घर जनता री छाती छोली
उस्तादा री आण, आज ई बण्या सेवरा
नवी हाकमी नै क्रोडायत करै नवरा

झगडै झगडै बापजी दो दळ री दरकार
बाबूजी निरपक्स है, दोनू दळ सू प्यार
दोनू दळ सू प्यार, पेसगी मिळी बराबर
जीत हुवै के हार, मलीदा बाबू रै घर
उस्तादा री आण, हार नैं ओगी करदै
बाबूजी री नेग, जीत वाळो दळ धर दै

भेळ करै है वाणिया, जीवण हुवो अनाथ
ब्यारी कर दी नाम री, हुक्मत हाथोहाथ
हुक्मत हाथोहाथ, घिरत मे तल मिळावै
रोक करै तो अफसर नैं ओटो धमकावै
उस्तादा री आण, फिरै ठग लिया टोकरी
वडा लोग रै निजर करै धन-धान छोकरी

नदिया बहती दूध री, माखण हुती उछाळ
उण धरती रा धायला, खावै तेल उबाळ
खावै तेल उबाळ, वाणिया घिरत बनावै
हाईड्रोजन री भेळ करै नै जहर जमावै
उस्तादा री आण, मुनक रो माणस भाळो
कपट किरागी तेल भेळ रो कियो गरोळो

तेल काढियो सेठजी, घाणी पूर कपास
धीरत नैं रोगी कैवै, बनस्पति रा दास
बनस्पति रा दास, जहर इमरत कर वेचै
जन-तन रो कर नास, रोग देवै धन खेंचै
उस्तादा री आण, ढोल दरबार बजावै
अै पईसै रा दास, घास नै घिरत बनावै

पूज वडेरा आपणा, वे चारण कविराज
वीरा तणै बखाण मे, कविता करी सुकाज
कविता करी सुकाज, हालता रण म आगै
इण जुग रा कविराज, ढोल सुणता घर भागै
उस्तादा री आण, बखाणै जस हुक्मत रा
कीडा कुरव वधार, वाकरा करदै पत रा

रे कवि मत गा बावळा, सिखर चढधा है काग
काव-काव री कूक मे, कुण सुणसी आ राग
कुण सुणसी आ राग, जीभ सू झाड अगारा
पनपाया विख-झाड, राख वै करदै सारा
उस्तादा री आण, खाल वाणी री ताळौ
मिटै अधारौ घोर, लोक नै मिळै उजाळौ

रे कवि अब जीवै मती, कविता कुरब गमाय
घर कीडा री सायवी, घर वाळा नै खाय
घर वाळा नै खाय पालणै पूत पराया
पडपची पतवार, पकड पीडै पोचाया
उस्तादा री आण, खावरया साड धड्कै
माथै चढिया राड-भाड, गिडका ज्यू कूकै

रे कवि अव जीवै मती कविता कुजस कमाय
भलौ डुवोयौ देस नै, विख रा रूख लगाय
विख रा रूख लगाय, वायरै मौत भरी है
कीडा तखत चढाय, राग नै राग करी है
उस्तादा री आण, मोद रै कोढ उघडग्यौ
मिनखपणै रौ मान, मवाली गढ मे सडग्यौ

पैली बिकती छोरिया, आज विकै है पूत
खरच भणाई भीख नै, दडवड दौडै दूत
दडवड दौडै दूत, मिळै कोई धनदाता
रूप रग नै कुण देखै, वळदार कमाता
उस्तादा री आण, दलाली लेयगी वाटौ
सोनै सू सिणगार, मैलगी छाती भाटौ

समता जुग मे चाहीजै, सौ हाथा म काम
जिण घर ठाली देविया, उठै कस्ट रौ धाम
उठै कस्ट रौ धाम, दाम मुलक रा बावू सेवै
दस मूडा दो हाथ, भरण पैरण कुण लेवै
उस्तादा री आण, पढै बी ए मे छोरी
लगन दलाल्या फिरै गुणा री भरनै बोरी

गोडा घसता सीखमी, जनता करणी राज
नवी हाकमी हाथ मे, सिर फोडण रौ साज
सिर फोडण रौ साज, निकाळै वैर पुराणा
थोडा दिन इन्याव, ठगी रा रहसी थाणा
उस्तादा री आण, समझ मिर फूट्या आसी
धीरै धीरा पचायत सवरी बण जासी

बावूजी री डीकरी, पढण गई कालेज
कपडा पैरै ऊजळा, पढण लिखण म तेज
पढण लिखण म तेज, चढी जोवन री दैळी
प्रेम तणी पारख करी, परणीज्या पैली
उस्तादा री आण, ग्यान रा गुण अपार है
नवौ भागसी पथ, छोकरी समझदार है

भला घरा री डीकरी, पास कियौ कालेज
युनिवरसिटी पूगता, तेजण हुयगी तेज
तेजण हुयगी तेज, जोमिया लगन मिळावै
नवी नार पण उण, आधै मारग कद जावै
उस्तादा री आण, पळी आजाद हवा म
वयू झाकै दुरगधा देती सडी हवा मे

दिन रा जावै डीकरी, सज-धज नै कालेज
घर मे आता डोकरी, सूध बतावै हेज
सूध बतावै हेज, करै लगना री वाता
अतै-ऊतै पतिवरता रा गुण ममझाता
उस्तादा री आण, कठै जुग चाल पिछाणी
नवै पथ मे घाल, सिखावै हलण पुराणी

सुपरडट री लाडली, हुयगी वी अे पास
उण सू नानी धीवडी, बस लारै दो क्लास
बस लारै दो क्लास, डोकरी करै उतावळ
उडणो सीखण मेल, घालणी चावै सावळ
उस्तादा री आण, अजब गत अैलवार री
करी भणाई हाट लगन रै रोजगार री

करी सगाई बापजी छोरी हुई जवान
अैमैं पडगी सैंस मे, अैसीसी कप्तान
अैमीसी कप्तान, चाद तक उडणी चावै
डाकर डोफा परणावण री दवा बतावै
उस्तादा री आण, छोकरी बाजव नटगी
बराबरी रै जुग री, परथम हुडी पटगी

जूनी सीवड उघडगी, जुग जोवन आजाद
नर-नारी रै नेह नै, नवी मिळी मरजाद
नवी मिळी मरजाद, जात कै नर कै नारी
पडी पुराणी पोपापुर री पोथ्यां सारी
उस्तादा री आण, चाव नै करै सगाई
ओठा बधणा पैर, बणै कद गाय पराई

कपडा पैरै छोरिया, जुग-जुग म जुगभात
जुगा जवानी जोय नै, डोकर पीसै दात
डोकर पीसै दात, पुराणै पथ रा पडा
करता आया बधतै पग रै पथ अफडा
उस्तादा री आण, सेक्स नै सब क्यू मारै
जोवन रै बरदान, रूप नै क्यू न सवारै

हलै बीजळी चाल सू, इण जुग मे विग्यान
कूट-पीट नै क्यू करौ, मैला री मैमान
मैला री मैमान, सेक्स रै बधण पडसी
बा अणु जुग मे बधी, चदरमा कीकर उडसी
उस्तादा री आण, सेक्स तौ आप धरम है
भगत लगाई इण मारग हसियार परम है

रूप सवारै तो रडै, अग वस तो राड
होठ नखा पर रग करै तो डोकर मारै धाड
डोकर मारै धाड, करै भाखर खस-खस रो[1]
माथ पडै पण बात किया टीको अपजस रो[2]
उस्तादा री आण, घूघटै रखणी चावै
नवी हवाईज्हाज वळदिया जोत हलावै

जुग जोबन जीवण तणो, खेल खुलै मैदान
डिगता ईं देखै सुणै, ओड नैण नै कान
ओड नैण नै कान, सुणै सगळा रग देखै
पाप पुराणा करै, लिखावै किण रै लेखै
उस्तादा री आण, लाज घर रा ई ले लै
सुसरा, देवर, जेठ, अधारै अटी खैलै

परण्यो पूत पधारग्यो, कोप कियो भगवान
घर रा घर म गाठ लै, विधवा हुई जवान
विधवा हुई जवान, जेठ देवर नै सुसरो
ओसर आता पाण, अेक सू आगै दुसरो
उस्तादा री आण, पढघोडी छोरी चूकै
पडदै पळतो पाप, धरमधज बण नै कूकै

गज भर लाबो घूघटो, ओड छिपावै पाप
पडदा वाळी ड्योढिया, सवटै सगळा स्राप
सवटै सगळा स्राप, साध बामण के गोला
बहू, धीवडी, भैण करै घर माय गबोळा
उस्तादा री आण, लडै गूजर सू ल्होडी
सास-बहू मे सीर, वछैरी रै सग घोडी

---

१ करै डूगर राई रो
२ हुम रमै तो नांव कमावै हरजाई रो

आणै आई बामणी, जोबन में भरपूर
साजन चढग्या चाकरी, ड्योढी डूबी हूर
ड्योढी डूबी हूर, नूर कद दबै दबायौ
पकड़ै गिंडक सूर, जनानी ड्योढी आयौ
उस्नादा री आण, कार जोबन भागै है
घर आना मिट जाय, जवानी भख मागै है

मगर पच्चीसा डावडौ, चवदै बरसा नार
माईता परणा दिया, बनडा रै नकरार
बनडा रै तकरार, जण्या दो-तीन बरस में
जोबन हुवौ फरार, फिटकडी पड़गी रस में
उस्तादा री आण, जवानी टोटै रहगी
बामण तणी कडाण, पोतडा धोता बहगी

अस्पताळ री पोळ रै, साम्ही लगी कनार
बाबूजी साइकिल खडै, साथै तीन सवार
साथै तीन सवार, डोकरी हुई लुगाई
बरस बीससौ चार, जण्या नै पाण गमाई
उस्तादा री आण, चढ्या दो हेन्डल माथै
थैली सीम्या मन, लियोडी घरणी साथै

समाजवादी देस म, सब रै हाथ कवाण
आभै उडती बामणी, कद बाचै रामाण
कद बाचै रामाण, कमाडर डाक्टर सीता
कद बाचै मिस्त्री, सावित्री जम री गीता
उस्तादा री आण, अरथ के बराबरी रौ
नर-नारी दो जात, मेळ मन में उतरी रौ

पतिव्रत स्त्रीव्रत सीरखा, ताकडली रा पाट
बाड मूतणै मिनख री मरवण जासी न्हाट
मरवण जासी न्हाट, ठाठ मू घर कर लेसी
जनम-जनम रा बंधणा नै अळगा धर देसी
उस्तादा री आण, धुपैला दो कर भेळा
छैल हुवा गैला, पति परमेसर भटकैला

नेह विना नर नार री सावत टिकै न साथ
जुग जाण्यौ के तूटसी, धरम-भरम री नाथ
धरम-भरम री नाथ, सेवणौ सरग-नरक रौ
पड भागैला देख, ताजणौ नवै तरक रौ
उस्तादा री आण, मिनख बणसी नारायण
नारी जुग री जोत, नवी लिखसी सीतायण

सावित्री नै जानकी, गधारी नै धोक
कुती, रुक्मणा, सुरसती किण री मानी रोक
किण री मानी रोक, बीर सुत जण्यौ कवारी
पाच किया भरतार, बाप री सेज सवारी
उस्तादा री आण, काळ री चाल प्रबळ है
वेल वधण री भूख, कूख रौ डाण अटळ है

आस्रम रैती डावडी, सब री करती टैल
आता रैता मोक्ळा, किण री ऊगी वेळ
किण री ऊगी वेळ, वेल मे सूरज लागौ
पूत बध्यौ परचड, गोत रौ लगै न थागौ
उस्तादा री आण, पढण जद आस्रम आयौ
'मा नारी है' आ सुणनै गरू वेद भणायौ

पैहरायौ नै बाळदी, सतिया रौ सुध भेस
जाणै बळता पूतळौ, नारी हुयगी नेस
नारी हुयगी नेस, देस नै घमड घणौ है
जाणै जीती नार, बाळणौ मिनख पणौ है
उस्तादा री आण काटद्या मोह जाळ नै
सता करा दम-बीम, लुगाया मरघा बाळ नै

मझधारा मे बिगडगी, पारासर री नीत
मछवण री पत पाडली, धुडी धरम री भीत
धुडी धरम री भीत, प्रीत सू पूत रमायौ
वेद व्यास रै पाट, ठाट सू नाव कमायौ
उस्तादा री आण, कवारी पोथी पढगी
भीसम त्यागौ राज, पाट पर मछवण चढगी

घर नै धोवै रात-दिन, मळ बिखरघौ घर द्वार
जगा नहीं पग धरण नै, सै ग्वाडी मे गार
सै ग्वाडी मे गार, वारणै तारत वासै
घर-धोवण मळ पूम, गळी री सोभा ग्रासै
उस्तादा री आण, गिनानी मत अछूता
नरक नाळ मे ठाण, ताण नै खूटी सूता

चूरू हदी चासणी, चटक चीवणी चाल
भरम चोवटै भेटिया, गुडणा गुर-घटाळ
गुडणा गुर-घटाळ, ढाळता चालै पाणी
सीसै मे रग लाल, बतावै मद अणछाणी
उस्तादा री आण, वात मे आखर जोडै
नाव जागती जोत, अधारी चादर ओढै

गादी तकिया ऊजळा, मजौ सजाई हाट
नखरा सीखै नित नवा, नित रा बदळै ठाट
नित रा बदळै ठाट, चाट रा खटका खाली
चार टका रौ माल, रावळी हाट जमाली
उस्तादा री आण, बाण मे आटा मैला
चरै परायै ठाण, डाण सू दीसै छैला

पाप्या रा दिन पाधरा मोटर री मरजाद
सता थारै काज सू, मत री सड्यौ सवाद
सत रौ सड्यौ सवाद, मिनख री मौवन मिटगी
माता मरजीदान, ग्यान नै गधिया गिटगी
उस्तादा री आण, दलाली डाण आकरा
खीचड खायग्यौ नेग, देग मे बच्या काकरा

धिन भाया सैतानसी, धिन-धिन धळ री रेत
पाच मिनिस्टर पोहचिया, अत बतावण हेत
अत बतावण हेत, खेत सू अळगा-अळगा
जोधाणै री पाळ, मसाणै पाछा वळगा
उस्तादा री आण, खाण बीरा री जूनी
मरणै पर महाराज, जीवता नगरी सूनी

नेफा नैं लद्दाख सूं, बगालै कसमीर
नेगम-नेगम निजर में, राख रह्या रणधीर
राख रह्या रणधीर, मुळकता माथा देवै
घर-घर खाता खीर, पीर पड़ती जस लेवै
उस्तादा री आण, प्राण परधै रा सूधा
जन हुक्मत रै ठाण, डाण मिनखा सूं मूधा

हेमाळै री घाटिया, पौरै पर जमबीर
अडिग उजागर सूरमा, तोप चलै के तीर
तोप चलै के तीर, झेल लै साम्ही छाती
पिण ऐंठै जस काज, राजवी हुयग्या चाती
उस्तादा री आण, बिसरग्या तकली घर मे
सुध-बुध सैणप सँग सडी चरखा अबर में

मरदी बिरखा तावडै, ठेट हिमाळै पार
सीव सभाळै मुलक री, हिन्द तणा मोटयार
हिन्द तणा मोटयार, त्यार है सिर होमण नैं
ढोल वजैं जद यार, मिस्टर जस लूटण नै
उस्तादा री आण, बण्या है दाता डाणी
जूझारा री पाण, हलावै कोडचा काणी

रण खेता मे जूझिया, राजस्थानी नर
माडवाड मे लागगी, आधा हाथ बटेर
आधा हाथ बटेर, टेर टुचिया री टिरगी
टिनोपाल सूं तेज, टोपिया घर-घर फिरगी
उस्तादा री आण, काण कगला कूटै है
सिर दै सिंघ सपूत, दूत-दळ जस लूटै है

बापूजी री डीकरी, परणाई परदेस
सूनी करगी झूपडी, कर मैहला परवेस
कर मैहला परवेस, जेस मे देस विसरगी
कियो राजवी भेस, देस सूं दूर निसरगी
उस्तादा री आण, बीजळी करै भळाभळ
पेडचा करै पठाण, हळावण करै हळाहळ

काम कमाऊ लोकडी, हुयग्यौ लोई झाण
लत्तर-पत्तर लूगडा, रोटघा माथै डाण
रोटघा माथै डाण, हाण है कुसळ खेम री
हाथ काटली जेब, होठ पर बात प्रेम री
उस्तादा री आण, ठाण मे पडघा ठीकरा
पेट बधावै सेठ, वेठ मे रळै डीकरा

वधाऊडौ

निरत-गीत-रूपक राजस्थानी ओपरा

पात्र

वधाऊडौ
नरसा [कम सू कम चार]
लुगाया [कम सू कम चार]
गायक [मरद दो]
गायक [लुगाया दो]
[ढोलक, क्लेरीनेट, फ्लूट, हारमोनियम, घंटी के घूघरा]

चौक - १ देखाव - १

गाव री ग्वाड मे मरद गेहर नै लुगाया लूहर नाचै।

लुगाया हालो अे साथणिया आपा, लूहर रमवा हाला अे
जिण री धायल उण धरती पर घूमर घाला अे, आयो सीयाळो
हे'र आयो सीयाळो, रत री रमता रा रग रचाला अे, आयो सीयाळो
मोटधार दीवाळी रा दीवा साथी, मरदा री रुत लाया रे
ऊनाळधां रा हरया धान सू खतर छाया रे, आयो सीयाळो
हे र आयो सीयाळो, मरदा री मैंणत रा दिन आया रे, आयो सीयाळो
लुगाया रात पडी चदरमा चमकै, अरठ मानखा सेवै अे
हरचो हेम जावा मे तिरसो, इमरत लेवै अे, आयो सीयाळो
हे'र आयो सीयाळो, पाणत नै बयारा झाला देवै अे, आयो सीयाळो
मोटधार हथ मैंणत हिम्मत सू साथी, साख सावणी पाकी रे
ऊनाळी बावण रो सारो काम बाकी रे, आयो सीयाळो
हे'र आयो सीयाळो, मोटधारा रै हिम्मत री नाकी रे, आयो सीयाळो
लुगाया दिन चढग्यो दो पहर साईन्या, रोटधा सेकण हाला अे
थाकोडा मोटधारां नै, घी-दूध घाला अे, आयो सीयाळो
हे'र आयो सीयाळो, हाळधा री आळस मार हकाला अे, आयो सीयाळो
मारा सामल चार जोड रा, आठ हाथ सू, भरी भावळी घाळा ओ
मिनखा नै बळदा री जोडधा, सामल हाला ओ, आयो सीयाळो
हे'र आयो सीयाळो, मैंणत सू घर रा टाबर पाळा ओ, आयो सीयाळो

पड़दै पाछै सू बधाऊ आवै— बधाई निरत।

बधाऊ जागो लुगाई नै मोटधार, बधाऊ आयो जागण ले
सड़ै सू सारा रो सवार, बधाऊ आयो जागण ले
कोरस बधाऊ आयो जागण ले
बधाऊ हिळमिळ हळ झेलो भाई, भेळी कमाई करलो
सझा री ल्हाम करलो, माठा नै अळगी धरलो

भूलौ अळगाव रौ विचार, वधाऊ आयौ जागण ले
कोरस वधाऊ आयौ जागण ले
वधाऊ लालच परमाद हर नै, अन-धन निपजावौ सारौ
भेळा पुरसारथ कर नै, भाखर हिलाय मारौ
कळ सू वधावौ रे करार, वधाऊ आयौ जागण ले
कोरस वधाऊ आयौ जागण ले
वधाऊ सौ पग मजबूत पडता, धरती री छाती धडकै
सौ री हुकार सुणता, आभै री सीवण तिडकै
वाधौ पुरसारथ रौ परवार, वधाऊ आयौ जागण ले
कोरस वधाऊ आयौ जागण ले
वधाऊ धरती हथ मैणत साथै, करसण रा सझ सारा
सब री धणियाप भेळी, भेळा फळ मीठा खारा
समता सुख, जीवण रौ ससार वधाऊ आयौ जागण ले

चौक - १ देखाव - २

वधाऊ नै बीच म लेय अरधचन्दर निरत—जोडाजोड।

लुगाया हिवडै रा नवसर हार, गुण री बात सुणौ
सुगणा सिर रा सिणगार, गुण री बात सुणौ
औ घरै वधाऊ आवियौ, सुभ पथ वतावण त्यार, उणरी वात सुणौ
हळ वळद करौ हुसियार, गुण री बात सुणौ
औ घण सढै वळ मोकळौ, अै घणा मिनख कमतर करै
जद पुणचै-पुणचै भार, उण री वात सुणौ
जद धीणौ धान अपार, गुण री बात सुणौ
अै माठा धरती दावली, सौ लीरघा बटग्या खेतडा
करसण रौ कठै तुमार, उण री वात सुणौ
सौ जाव बध्या जैकार, गुण री बात सुणौ
धरती हथ-मैणत सीर मे, जीवण रा दुख-सुख सग मे
सगळा रौ साथ सवार, गुण री बात सुणौ
मढै वळ सुख रौ सार, गुण री बात सुणौ

चौक - १ : देखाव - ३

कोरस म्हे दस जोडा सीर करा ना, अेक खेत मे काम करा ना

अेक लुगाई   बाड़ हटासा बीस हाथ सू, सग मजूरी नै उतराला
कोरस   अेक खेत म काम कराला, म्हे दस जोड़ा सीर कराला
दूजी लुगाई   खरस्या साभो, भरो तगारी, खाड-खुणा में धूड भराला
कोरस   अेक खेत म काम कराला, सीर कराला, सीर कराला
म्हे दस जोड़ा सीर कराला
तीजी लुगाई   भेळी धरती लाभ मक्ळ रो, भेळा ई हळ हाथ धराला
कोरस   अेक खेत मे काम कराला, सीर कराला, सीर कराला
म्हे दस जोड़ा सीर कराला

बधाऊ ट्रेक्टर खड़तो आवै ।

बधाऊ   दस जाडा सू अरठ खडो, कळ रै बळ सू तगडा हळ हाको
दस जोडा रा बीम हाथ सू, काम करो, सागर मथ न्हाको
सो बाड़ा कळ सू कट जासी, भाटा बाठ जड़ा उखड़ासी
बिखरया खेत समद बण जासी, माटी कण मण मण निपजासी
थोक भाव सू बीज करारो, चहीजैला उतरो मिळ जासी
कळा ऊमरा ऊडा खडसी, थाको धरण नवो बळ पासी
अेक साख सखरी पाकै जद, को कळ वाळा नळ ले लीजो
बरस बीतता सो बेरा नाकै, तेल्योड़ा अजण धर दीजो
पण पैली दस लिछम्या मिळनै, हाळया नै झट ट्रेक्टर ले दो
मरद गळै रा फूल खोल दो, नै घरवाळ्या गहणा धर दो
दो साखा पाक्या दखोला, अेकमनी मेंणत फळ लासी
साखा सू सोनो बरसैला, गहणा लाट घरा मे आसी
जो भाई अळगा रहग्या हा, सुख मे साझो मैंग करैला
आखो गाव अेक हुय जासी, सो जोड्या भडार भरैला
गाव गाव मे जोत जगैला, पाडोस्या रो पथ उजासी
जगा-जगा गावाई करसण, कळ-बळ सू कर दळद गमासी

झोक - २   देखाव - १

बीच मे ट्रेक्टर मारै बधाऊ ऊभो । आजू-बाजू लोग लुगाई ।

बधाऊ   नवै वगत रा नवा जवान, भेळै धन सगळा धनवान
घर-लिछम्या हुय-बळ री हर, अन-धन री भडार कुबेर
भेळी सुध-बुध बधै विसात, बोलो अपणी-अपणी बात

लुगाया भेळै पुरसारथ सिणगारी, रत री साखा न्यारी-न्यारी
जौ-गेहू नैं कणक करारी, ऊनाळै आछी तरकारी
धन नैं चरावौ साथी, लीलौ लगावौ, धीणैं धायल धपावौ म्हारा भाई
कोरस समद जैडौ खेत बीजावौ म्हारा भाई [दुसरावै]
लोग कळ सू कमतर हळकौ लागै, भेळौ करसण दूणौ पाकै
घणै साथ सू डर पड भागै, घमकै काळ कमालो थाकै
अन-धन उपजावौ साथी, जग नैं धपावौ, भेळौ कमतर कमावौ म्हारा भाई
कोरस समद जेडौ खेत बीजावौ म्हारा भाई [दुसरावै]

चौक - ३ : देखाव - १

चार खुणा माथै चौथाई अरठ दीसै। अरठ पेडी माथै चार हाली झूलता दीसै। बीच म लुगाया इन्दरमूलो निरत करै।

पहलौ हाळी सूरज आथमग्यौ साथी आई सवी रात
दूजौ हाळी अरठ खडा रे साथी, हरचौ-हरचौ हेम निपजावा
लुगाया क्यारा नैं इमरत पावा, प्यारा नैं पनपावा
साथणिया सारी, पाणत नैं दौडी-दौडी आवा
दूजौ हाळी मुधरौ बायरियौ साथी, हिलै हरचौ धान
तीजौ हाळी निरख-निरख साथी, तिरमा नैणा री तिरम बुझावा
लुगाया क्यारा नैं इमरत पावा, प्यारा नैं पनपावा,
साथणिया सारी, पाणत नैं दौडी-दौडी आवा
तीजौ हाळी हरचौ रे समद साथी चन्द्री सारौ खेत
चौथौ हाळी हरचौ पाट दीसै साथी, जठी कठी निजर जमावा
लुगाया क्यारा नैं इमरत पावा, प्यारा नैं पनपावा
साथणिया सारी, पाणत नैं दौडी-दौडी आवा
चौथौ हाळी सग री मजूरी साथी, सग री धणियाप
सडै सारा रैं साथी, हाया रैं जोर सू कमावा
लुगाया क्यारा नैं इमरत पावा, प्यारा नैं पनपावा
साथणिया सारी, पाणत नैं दौडी-दौडी आवा

चौक - ३ : देखाव - २

लोग लुगाया खुरप्या नैं तगारचा लियोडी निनाण निरत करै।

लुगाया धोणायत धरण बुलावै अे, ऊगतडौ धान बतावै अे
सग री साथणिया धरती रै धायल नै रमालौ

कोरस निनाण करवा हालौ रे नानक्डौ धान सवाळौ रे
लुगाया सग री साथणिया, धरती रैं धायल नैं रमालौ
लोग क्ण-क्ण म जीवण जाग्यौ रे, पुरमारथ ऊगण लाग्यौ रे
सढै रा साथी कूटा खाची नैं राछ सभाळौ रे
कोरस निनाण करवा हालौ रे, ऊगतडौ धान सवाळौ रे
लोग सढै रा साथी कूटा खाचौ नै राछ सभाळौ
लुगाया चुग-चुग नैं चील उखाडौ अे जड तोड गोयलौ गाडौ अे
सग री सायणिया, बीरा नैं वैंरचा सू बचालौ
कोरस निनाण करवा हालौ रे, नानक्डौ धान सवाळौ रे
लुगाया सग री सायणिया, बीरा नैं वैंरचा सू बचालौ
लोग रळियार रायरौ बेरी रे, गुण चोर गोयलौ जैरी रे
सढै रा साथी क्यारा सू कचरौ सैंग निकाळौ
कोरस निनाण करवा हालौ रे, ऊगतडौ धान सवाळौ रे
लोग सढै रा साथी क्यारा सू क्चरौ सैंग निकाळौ
लुगाया माखा म रसक्स घाला अे, सुयरा क्यारा म पाळा अे
सग री साथणिया, हस हस हाळचा रौ भार वटालौ
कोरस निनाण करवा हालौ रे, ऊगतडौ धान सवाळौ रे
लुगाया सग री सायणिया, हस-हस हाळचा रौ भार वटालौ

चौक - ३ देखाव - ३

देखाव पलटैं, मरदा रैं खाधैं हाया लाठ्या, लुगाया रैं हाया गोफण, मगरा रैं काछोटा क्स्योडा कूकडाग निरत करैं।

लुगाया झरैं चादणी चदौ चमकैं, तारा छाई रात अे
क्वळी क्यारचा नवैं धान री, करैं जिनावर घात
कोरस हालौ खेता नैं सभाळौ, हाळी गोफणिया घूमालौ
हिरण्या-सूवर मैंग हकालौ, हरियौ क्वळौ धान सवाळौ
ढळमी कठण काम री रात, सहेल्या उण पाछै परभात अे
कोरस झरैं चादणी चदौ चमकैं, तारा छाई रात अे
क्वळी क्यारचा नवैं धान री, करैं जिनावर घात
लोग हरचैं समद मे हलैं वायरौ, ऊगण लागौ धान र
नवैं धान रैं दुसमी लाग्या, जागण करौ जवान
कोरस हालौ आळमियौ उडालौ, धोत्या काछोटा कसकालौ
हालौ हावैं धरण धुजालौ, वाया बुडता तणी चढ़ालौ

लोग   फळसी पुरसारथ रौ काज, माथिया कचन करौ कनात रे
लुगाया   झीणौ मुधरौ हलै बायरौ, पडै गुलाबी ठड अे
   जोर राखिया धान पकैला, साढया करै अफड
कोरस   हालौ हस-हम भार वटालौ, सेवौ मुथरौ धान सुगाळौ
   हालौ सूना ढोर हकालौ, घडिया पोहरै तणी वधालौ
लुगाया   पकसी ऊनाळी भरपूर, सहेल्या चार दिना री वात अे
कोरस   झरै चादणी, चदौ चमकै, तारा छाई रात अे
   कवळी क्यारघा नवै धान री, करै जिनावर घात
लोग   ओळा-दोळा फिरौ जाव रै, लाठचा का रै गेल रे
   रात जागता धान रुखाळौ, थोडा दिन रौ खेल
कोरस   हालौ धरती धान पकालौ, चोरधा करता नै चमकालौ
   हालौ हेतू हेम रुखाळौ, पाका धान गाहगै घालौ
लोग   भरलौ ऊनाळी कोठार, अगाडी आवै ना वरसात रे
कोरस   झरै चादणी, चदौ चमकै, तारा छाई रात अे
   कवळी क्यारचा नवै धान री, करै जिनावर घात

देखाव पलटै ।

अन-धन रा कीडा मर जासी, फूवारा छर छर छूटै रे
सै धान रोग नै धमकासी, धरती सू धवा ऊठै रे
ऊगै उण माथै जीवै, जड-डाळ पात मुळ जावै
साखा रौ लोई पीवै, जन री मैणत रुळ जावै
सै वधता बूटा मुरझासी, माटी रौ रसकस खूटै रे
जड खाय करै जबराई, लीलौ सै पीळौ पडसी
करसण पर डाढ लगाई, जद डाळ पानडा झडसी
हथ मैणत पडसी गळफासी, मिनखा नै कीडा लूटै रे

चौक - ४ : देखाव - १

ट्रक्टर बीचोबीच, आजू बाजू लोग-लुगाई, अग सचालण निरत ।

लुगाया   खड-खड करतौ ट्रेक्टर हालै, धरै धडाधड धान कटाय
   धड धड धरती हेम उछाळै, कण कण मोती बिखरधा जाय
लोग   बूटै-बूटै मण-मण पाक्यौ, दी करसा री भूख भगाय
   लोग-लुगाया दडवड दौडै, ढेर करै लाटा धन लाय

लुगाया बाया भर मोट्यार अवरै, लगी लुगाया मन हुळमाय
  पूळा बाध भरै गाडोला, ट्रेक्टर लाटा म ले जाय
लोग ज्यू लाटा म ढेर लगावै, झटपट म्हाकै धान कढाय
  भरै खाखलो ढोर धपावै, दूध दही घी टाबर खाय
लुगाया लोग लुगाया सदै करमण, अन धन दे कोठार भराय
  घर खावण रौ न्यारौ धरसी, बाकी लेसी दाम पटाय
कोरस म्हावट आली रेत करैला, सावण सारू खेत खडाय
  सवै अमाडा मेह बरसैला, नवी साख देसी बीजाय

चौक - ४ : देखाव - २

लाटा री परकमा करता लोग लुगाई ।

अेक हाळी लाटा पर ओटै रळग्यौ रे, अन ढिगला भरचौ अथाग
कोरस र अन ढिगला भरचौ अथाग
दूजो हाळी मग री पुरसारथ फळग्यौ, रे भेळप रा मोटा भाग
कोरस रे भेळप रा मोटा भाग
पैलो हाळी माठ उधेडी, जाव बधायो, कळ जाती, हळ बायो रे
  सवै सीधाळै बीज नखायो, डोरा खड-खड पायो रे
कोरस पनपायो राता जाग, रे भेळप रा मोटा भाग
दूजो हाळी मोट्यारी री चढी नाडगत, रमत तणी रत आई रे
  नर-नारया रा नैण गुलाबी, तन-मन मस्ती छाई रे
कोरस रग-रग राच्यौ रग-राग, रे भेळप रा मोटा भाग
तीजो हाळी ढळनी बहता करै मस्करया, चलती रा चुतराई रे
  छोरा छोरया ओला ताकै, लगन चढ्या ललचाई रे
कोरस बीनणिया भरचै सवाग, रे भेळप रा मोटा भाग
चौथो हाळी कामणिया सिणगारा लागी, मरदा मूछ छटाई रे
  आणायत रा छैलभवर, रणवासै राड मचाई रे
कोरस जौवण री जबरी लाग, रे भेळप रा मोटा भाग
पैलो हाळी घास बेल रूखा पर राच्यौ, रूप रिझाणो रग रे
  ढोर पखेरू मिनखा माथै, चवडै चढी उमग रे
कोरस नरनारी मेलै फाग, र भेळप रा मोटा भाग
दूजो हाळी उनाळो ओनै कर लीन्हो, रिजक दियो विसराम रे
  थाडा दिन री भन अधगैलो, मोट्यारी म राम रे
कोरस पाणी मे पनरी आग, रे भेळप रा मोटा भाग

चौक - ४ · देखाव - ३

देखाव पलटै, लोग लुगाई अरधघेर वधाऊ अेकलो पर्ने निरत करै ।

वधाऊ आगै पग भई, साथै पग धर
भरी जवानी, रूकया पाटै, घर मढै भई, उण सू कमतर
कोरस आगै पग भई, साथै पग धर
वधाऊ विचली माटा खोद वणादै, सेत वणादै समद समान
कोरस सेत वणादै समद समान
वधाऊ धरती री धणियाप नार री, सरखो हीलो सरखो मान
कोरस सरखो हीलो सरखो मान
वधाऊ जीणो सग, बराबर दरजो, समझ घणा री लाभ बराबर
कोरस आगै पग भई साथै पग धर
वधाऊ निपजावै वारा धन धरती, काम करै वारी सिरकार
कोरस काम करै वारी सिरकार
वधाऊ इण जुग मढै कमतर करता दो हाथा वाळा सिरदार
कोरस दो हाथा वाळा सिरदार
वधाऊ काम कड़ूवै घणा मिनख भई, सढै हाथ हिलादै भाखर
कोरस आगै पग भई, साथै पग धर
वधाऊ दवै अेकलो कमतर भारी, भेळो करसण वटती भार
कोरस भेळो करसण वटती भार
वधाऊ करडी धरण पताळा पाणी, वळ नळ अजण घणो करार
कोरस वळ नळ अजण घणो करार
वधाऊ घण सढै सुख-दुख वटै भई सुख जीवण रो भेळो वळधर
कोरस आगै पग भई साथै पग धर
वधाऊ छिटक पडै सो धरती खेंचै, पाणी ढळै जठीनै ढाळ
कोरस पाणी ढळै जठीनै ढाळ
वधाऊ पिण भेळा मिनखा रै वळ सू, ठेठ हिमाळै चढै पताळ
कोरस ठेठ हिमाळै चढै पताळ
वधाऊ घडली घडनी हवद भरै भई, घण टोपा भर जाय समदर
कोरस आगै पग भई, साथै पग धर

धरती-उतरण

निरत-गीत-रूपक

सुख भरी सांझ री वेळा
मद भरी हवा लहराई
बासंती मद छकयोडी
रत चढी, धरण मुस्काई
मैणत मूं थाका करसा
लै बळद चल्या घर कानी
आखै दिन चावड चरती
मैं गाय भैंस घर आई

वै खेत समद सोना रा
सिमजर सूं निवती डाळी
गैं घास बेल रूंखा पर
या पुसप गंध मनवाळी
रतमैळा चिडी चिडकला
रूंखां पर गीत सुणाता
ढळताडो सूरज चमक्यो
जिगमिगती सोवन पाळी

उण सांपत अन रै जीवण
रा कण-कण रुणमाता हा
मदछकिया मिनख जिनावर
मस्ती रा सुर गाता हा

ऐड़ा मन-हरणा गैहणा
रुतवन्ती धरण सजोया
छिण भर थमवा आथमतै
सूरज नै ललचाता हा

हवळै सू तणवा लागी
रजनी री चूदड़ काळी
घुरिया मे गिया जिनावर
पखेरू डाळ सभाळी
हवळै-हवळै वन डूगर
सून्याड बधी जाती ही
गढ गाव नगर ढाणी म
घेरदार दीवटा वाळी

सूरज करग्यौ अधारौ
जद जिग्या चाद नै तारा
जीवण री रग-रग फडकै
मन लूम-झूम मिनखा रा
उण पुळ कुरजण नै उणरी
सायणिया घूमर घाली
रणकण लाग्या पायल नै
पैंजणिया रा झणकारा

धरती माथै जिण सायत
कुळ कवरघा रमत रचाई
जोबन थिरकण नै लाग्यौ
जीवण री तिरस बधाई
उण सायत मरगापुर रा
दो देव उड्या जाता हा
वै झणक सुणी जद उतरया
देखत ही सुध विसराई

देखाव - १

अेक बगीचै म कुरजण अर उण री सहेल्या नाचै।

कुरजण जीवौ जीवण जोर जवानी, तन री तडपण द्रिग रौ पाणी
कोरस जीवौ जीवण जोर जवानी, तन री तडपण द्रिग रौ पाणी
कुरजण जीवौ नर-नारी रौ प्यार, हिवडै-हिवडै रौ व्यौपार
कोरस पीड तकरार, जीत नै हार, मेळ मनवार, ऊमर नादानी
जीवौ नर-नारी रौ प्यार, हिवडै हिवडै रौ व्यौपार
कुरजण जीवौ परवत वन जळधार, धरती आभौ समद सकार
कोरस जीवौ परवत वन जळधार, धरती आभौ समद सकार
कुरजण जीवौ रग विरगा फूल, निरमळ नवळ नदी रौ कूल
कोरस गाड नै मूळ, सुफळ नै सूळ, चिमन नै झूल, सुगध मिजमानी
कुरजण जीवौ बाग बगीचा खेत, धरती रौ धन ग्याभण रेत
कोरस जीवौ बाग बगीचा खेत, धरती रौ धन ग्याभण रेत
कुरजण जीवौ धूप छिया बरसात, झिलमिल मिझ्या नै परभात
कोरस दिवस नै रात, डाळ नै पात, वनपाती जात, जुगत असमानी
कुरजण जीवौ नैण निजर सनेन, छिण छिण राग रिसाणा हेत
जीवौ मस्त मदन उनपात, मुधरी मुळकण मीठी वात
कोरस प्यार री रात, मदन री मात, अळसता गात, सुघड मनराणी

नाच मगन किन्यावां मस्त है। ऊपर आकास मे उडता दा देवत सरीर नाच सू विभोर हुय अटकै। नाच पूरण होता पाण कुरजण बगीचै म अक मकराणै री कुरसी ऊपर बैठै अर उणरी सहेल्या पसवाडै हरयै घास ऊपर बैठ आडी हुय जावै। अक देवत सरीर कुरजण रै रूप माथै मोहित हुवै अर अटक जावै। देखाव पलटै। हवेली री चानणी कुरजण अक पिलग माथै अर सहेल्या पसवाडै गदरा माथै सूती, दोनू देवत सरीर पाधरा ऊभा।

नाच री गत धीमी व्हिया, पडदौ पडण लागै।

पैली देव इण धूड भरी धरती माथै, पूनम री चाद लिया साथै
तारा री टोळी रै मझ मे, किण कुळ कवरी सेज लगी
दूजौ देव इण सुरग नरक रै जीवण मे, जुग जागण तान विसम सम मे
धरती अकास रै मगम पर, जगमग सोनै री ढाल टगी
पैली देव जद नैण फस्या तन-वचन मे, हिवडौ हुलस्यौ, वपण तन मे
मन अटम रह्यौ, प्रतिभा तणगी, पग पूठ पडै अभिलास जगी
अब गगण चढू धरती उतरू वै मिनख जात रौ रूप धरू
नै प्राण घुट्या, कठै अटक्या, मन जोबन ज्वार अपार जगी

नाच री गत धीमी व्हियां, पडदौ पडण लागै।

देखाव - २

स्थान—अमरलोक सुरगपुरी । पैलो देव नाच मगन होय मुरातो गावै ।

पैलो देव अब किण विध सुरग सुहावै, म्हारी कुरजण कद घर आवै
तन बिन मन-चळ बण्यो बापडो, निरबळ बुध बिसरावै
अमर लोक मन तिल-तिल मिळगै, धण धरती घबरावै
म्हारी कुरजण कद घर आवै
प्रमादेवी अेकाअक प्रगटै अर आख्या म
आसू अर लालसा भर चुपचाप ऊभी रोवै ।
देव जूण मे भरो भावना, तन बिन मन तडपावै
धरती जीवण निपट निघोटो, हस हस खेलै खावै
म्हारी कुरजण कद घर आवै,
दूजो देव प्रेमादेवी रै अपूठो प्रगटै अर प्रसन्न मुद्रा म ऊभो रैवै ।
देह नही पण अमर जवानी, मन ई मन समझावै
हाड-मास री कुरज पूतळी, सीस चढी सतावै
म्हारी कुरजण कद घर आवै
प्रमा अर दूजो देव अदीठ हुवै ।
अमरापुर री सुधर आयगी, बुझी अगन मिळगावै
जूण भुवन री जुगत जुडै जद, दो तन अेक समावै
म्हारी कुरजण कद घर आवै
पडदा रै लारै ।

दूजो देव साची सखरी कामना, साची मन री पीड
साची तन री चावना, निकट नदी रो नीड
पडदा रै ओलै नाच गीत चालै दूजो देव नाचतो गातो आवै ।

दूजो देव जीवण जागण सार सयाणा, चलती रो ससार
मूळ भावना कारण जीवण कारज डील करार
अेक करै दूजो पा लेमा, झडपा बाह पसार
सयाणा, झडपा बाह पसार
मुदरा पलट वडै घर चाला, कथन करा विस्तार
थोडा दिन मोटयार बणासो, अमरापुर सिरदार
सयाणा, अमरापुर सिरदार
दानू नाचता-गाता जावै पडदो पडै ।

देखाव - ३

स्थान—इन्द्रलोक। देवराज री दरबार। देवराज सिंघासण माथै विराजमान।

कोरस सज्यौ है अमरापुर दरबार, सयाणा सुरग तणा सिरदार
पैलौ देव भूत बिहूणी दसू दिसा मे, ऊपर नीचै, दिवस निसा मे
प्रेमा देवी भरी भावना अन्तरतममे, बिना भार आकार
कोरस सज्यौ है अमरापुर दरबार, सयाणा सुरग तणा सिरदार
दूजौ देव साथ चलै भावुक जीवण मे, सिरपति कामना दोनू मन म
पैलौ देव छिण भर में सै जीवण बीतै
दूजौ देव पल मे देर अपार
प्रेमा देवी अमरलोक जीवण इकरगौ, निरमळ माणस सुध-बुध चगौ
कोरस जगत जीव, तन सू मन प्यारौ, मन सू मन रौ प्यार
सज्यौ है अमरापुर दरबार, सयाणा सुरग तणा सिरदार
नाच म पैलौ देव ढालम ढालौ प्रमा अर दूजा देव माथै
उणरी परछाई पडती देख, दवराज नमझनै मुलकै।
देवराज द्रिग मैला मुख सावळौ, चचल चित्त उदास
भीड पडी किण कारणै, क्यू लो दोरा सास
पैलौ देव म्हाराजा म्हानै घणौ ई सुहावै सा
दूजौ देव सुख भर सुरग समाज
सुखदाता म्हानै इचरज आवै सा, धरती पर काया हुदौ राज
चाव चढचौ काया तणौ, दव सुधारौ काज
गिणिया दिन धरती बास री मया हुवै महाराज
देवराज इण दिन सू इक्कीस दिना लग औ जोखम सिर थारै
नर देवत जो जठै कामना औसर बुध चीतारै
कोरस थिरक थिरक धुन' ऊपर निरत। पड़दौ पडै।

देखाव - ४

राजधानी पाटनगर री अक बद सिघद्वारौ। दोनू देवता मिनख भेस मे आवै, दूजी बाज अर जवान माथर अर चार हथियार बद सिपाई घाडवी तक्सक नै बाध्या लावै।

नायक [किवाड माथै थापी देवै]
तक्सक द्वारौ खालदौ, महाराजा रै नाव
न्याव करा तक्सक तणौ लूट लिया दस गाव
स्टेज आदम—आडो होतै हालै खुलै इत्ता तान म तक्सक नै मिनखारूप दवता चौनिजर हुवै। तक्सक सुरत झटकौ देय बध तोड न्हाकै अर जुद्ध म देवता

तस्कर री मदत करै। इतरै मे बारणै विगन बाजण रै मागै दस सिपाई आवता देख तस्कर भाग जावै। सिपाई अर नायक दोनू देवतावा रा हाथ पकडै।

नायक देवत ज्यू दिप-दिप करै, डील पराक्रम तेज
राजद्रोह कर बाळ सू, विरथा घालो हेज

दूहौ सपूरण व्हिया पैली पर्छा अदीठ हुवै अर पडदौ पलटै
स्थान बजार—चूरण वालौ आय खूमचौ जमावै फेर मिठाई वालौ दूजी कानी खूमचौ जमावै। लोग फिरता घिरता। दोनू देवता आवै।

चूरण वाळौ लाला ! चूरण खालौ आय, खाता भाखर देवौ गुडाय
म्हारौ चूरण खाटौ मीठौ, लका लूटी हणमत दीठौ
चढग्यौ लका चूरण खाय, अगद दीन्हौ मुकट गुडाय

पैलौ देव चूरण रै खूमचै झुक'र ऊभौ।

मिठाई वाळौ दिन ऊगौ भाई करलौ कुल्ला, नरम नरम खालौ रसगुल्ला
जो थानै डरपावै अैबी, चाराना री चरौ जळेबी

दूजडौ देव मिठाई माथै झुलमै अर अेकाअेक दोनू जणा
अेक मूठी चूरण माथै अर दूजौ दो नग मिठाई माथै
मारै। हाका दडबड मे देवता अदीठ पडदौ पलटै।

स्थान—बजार रौ दूजौ नाकौ। दोनू देवता अेक कानी स आवै नै दूजी कानी लोकाचारिया आवै। आगै-आगै सिणगार करियोडी अेक अधजवान लुगाई, माथै ऊपर चूदडी नै टीकौ। हाथ मे नालेर। दो जवान लडका चार खाधिया।

रैण नीद लेणी व्है घोर, जद भई गिटलौ दस दम ठोर

दोनू लडका हाय काका ! कठै चाल्या, गडचा धन री बात गिटनै हाय काका ! कठै चाल्या

कोरस राम नाम सत्त है, सत्त सू मुगत है

लुगाई हाय परण्या कठै चाल्या, कामणी तन बाळवा नै
हाय परण्या ! हाय परण्या !

कोरस राम नाम सत्त है, सत्त सू मुगत है

दोनू देवता दोनू बाजू रथी पकडै।

पैलौ देव हे भाई ! आ कचन काया डोरया सू क्यू बाधी है
गियौ जीव पाछौ आ जासी, पण काया कुण साधी है

अेक बेटौ [धक्कौ देवै] किण दुनिया रा ढोर मिनख हौ, इतरौ थानै ग्यान नही
जीव गिया काया माटी है, इतरी जाण पिछाण नही

लुगाई धक्कौ देय आगै बधै अर पैला देवता रा पग पकडै।

हे भगवन रा प्यारा मिनखा, इमरत थारी बानी मे
मुडदौ जद तक पाछौ आवै, म्हनै लुकालौ झोळी मे

हुल्लड जागै, लुगाई भाग जावै, देवता अदीठ
हुवै अर सीढ़ी चालण लागै अर पडदौ पडै ।

स्थान—बजार रौ दूजौ नाकौ । अेक कानी सू दोन
देवता प्रगटै नै दूजी बाजू सू अेक जान रौ मजमौ आवै ।

लुगाया आइजौ म्हारा बनडा, थें आइजौ
होजी म्हारी गळिया में धूम मचाइजौ
म्हारा बनडा, नवी हवेली वाळा
थारा दादोसा नै घणा ई पियारा
म्हारा बनडा, पियारा सुख लाडला
नवी हवेली वाळा

दूजौ देवता अेक जानी रौ हाथ पकडै । हाकौ मचै ।
सिपाई दौडता नावै । देवता अदीठ । पडदौ पडै ।

देखाव - ५

स्थान—नगर रै बारै रौ बगीचौ, दोनू देवता
थाक्योडा सूता । प्रेमादेवी प्रगटै । नाच गाण ।

प्रेमादेवी पलक भर चैन न पाऊ, पिव-पिव करै मन-मोर
सजन किण विध समझाऊ, सोक लियौ चित चोर
अमरापुर गैघट घट-जीवण, आणद हौ झकझोर
मिरतलोक री कामण हर गई, अमर जवानी रौ जोर
सजन गिया सुरगापुर सूनौ, दुख रौ ओर न छोर
कचन काया सू कामण बण गई, कथ काळजै री कोर
सजन किण विध समझाऊ, सोक लियौ चित चोर

धीरै धीरै दूजौ देवता उबासी खाय आलस मोड जागै, धीमै-धीमै उणरी निजर
प्रेमादेवी ऊपरा पडै । उणरी मुद्रा बदलै अर निजर मे कामना-निरासा दीखण लागै ।

दूजौ देव प्रेमा प्रेमल बावळी, क्यू चित करै उदास
देवी है कै मानवी, प्रेम पडी कै ग्रास
प्रेमादेवी सजन सभाळण नीसरी, सरग तणौ सुख त्याग
बादळ लारै दौडस्यू, हिवडै लागी आग

प्रेमा अदीठ व्है जावै, दूजौ देवता जोवतौ रैवै ।

दूजौ देव [मन-मतै]
माथी मीठौ प्रेम नै तनक न मन मे आस
पण इणरी निरमळ छिब, मन उपजाई प्यास

मन उपजाई प्यास, आस रहसी चित भारी
छिण छिण अंतर माय, अचळ छिब प्यारी-प्यारी
जीवन में रस नाय, भवँ चित, नहीं ठिकाणौ
इण भव गभव नाय, प्रेम प्रेमा सू पाणौ

पैलौ देवता उबासी लेवँ आलम छोड़ उठँ बँठे अर अठी-उठी आडया पाड़ जोवँ ।

पैलौ देव मिरतलोक मुतलब तणौ, मुतलब जीवण सार
आणद फीकौ, दुख बिना पीड़ प्रेम-पतवार

दूजौ देव जग-जीवण कितरौ विचित्र है, जीव अेकलौ लाख चित्र है
रोग, सोग है, मौत पीट है, नदिया है पण निकट नीड है
टक्कर है, गत है, सगत है, पण काया है जद रगत है

पैलौ देव अेकदम उदास व्है जावँ अर थोड़ी ताल अबोलौ रेय गावण लागँ ।

साईना रे काया बिना कस नाही जगत मे, कस बिना सरवस नाही
अमरापुरा रौ भावुक जीवण, सुख सगवड परछाही
पीड बिना सब सुख बिसवादी, छूत बिना रस नाही
माग्ये तन सू सपति अधूरी, दुविधा दुख मन माही
अमरपणौ अळगौ मेल्या बिन, कुरजण परवस नाही

दूजौ देव लो जद हाला अमरलोक मे, देवराज रै द्वार धरा
सुख-दुख सखरी काया मागा, अमरपणै री भेंट धरा
परिवरतण रा बणा बटाऊ, सदा सुखी जीवण त्यागा
पग बिन जठै न काटी भागै, उण जीवण सू पड भागा

दोनू जावँ ।

'थिरक-थिरक चल धुन', पड़दौ पड़ै ।

देखाव - ६

स्थान—सुरगलोक । पैलौ दवता निरत गान मगन । दूजौ देवता अर प्रेमादेवी विपरीत बाजू सू प्रगटै । पैला देवता री मुद्रा गभीर ओल् तणी । दूजा देवता री प्रेमा कानी निराग तणी अर प्रेमा री पैला देवता कानी जाचक तणी ।

पैलौ देव डिगग्यौ प्राण रौ आधार, पडग्यौ जूण-बधण भार
मिनखाजूण री सिरदार, कुरजण चरण चढग्यौ प्यार
पछी तन बिना लाचार, ऊपर अमरता री मार
बिछवै मे अळूझ्या प्राण, भूल्यौ भाण, निसरग्यौ सार
डिगग्यौ प्राण रौ आधार, पडग्यौ जूण बधण भार
उण री आख मे तस्वीर, उण री आख री तासीर
दीसै कामना रौ तीर, पछी जूण सू दिलगीर

देवराज थें पग धरची अकास पर, म्हानै मिळची उजास
मागौ, मन भर मागलौ, सुख-दुख सुध परकास
पैलौ देव मन मिनखजूण रस मागै, हौ देवा रा राजा
दूजौ देव मन मिनखजूण रस मागै, हौ देवा रा राजा
कुछ करचा धरचा विन हाकौ, इण अमरपणैं सू थाकौ
औ जम ऊपर वस मागै, हौ देवा रा राजा, जम ऊपर वस मागै
जद दुख सू मिटी सगाई, जद देवत देह गमाई
औ मासळ अतस मागै, हौ देवा रा राजा, मासळ अतस मागै
म्हानै मिरत लोक चितारै, सुख-दुख सरखा स्वीकारै
औ डील-डोळ वस मागै, हौ देवा रा राजा, डील डोळ वस मागै
देवराज अपणी बुध बरती जद पावौ, सुख दुख सरखी काया पावौ
दोनू देवता दडौत कर जावण लागै इतरै में प्रेमा नाचती गाती आवै ।
प्रेमादेवी जगत सारौ जोऊ तौ, रुदण कर रोऊ तौ
कोई सुणै नाय, हा ! हा ! कोई सुणै नाय
प्राण पिया धरती धन प्यारौ, उण दिन जीवण कटक सारौ
चिमकू अधरतिया जागू, सोऊ बैठू के भागू
निपट अडोळी लागू, दिव्य सेज माय, रतन म्हैं तौ जोयौ सा
जतन सू जोयौ सा, देवलोक माय, सारै इन्द्रलोक माय
राजन म्हारौ नेग चुकाज्यौ, जगत प्रीत री रीत निभाज्यौ
साजन बिसराया ज्यानै, इमरत विस लागै वानै
सुख नै सताप मानै, सुध नै नमाय
कोई सुणै नाय, हा ! हा ! कोई सुणै नाय
देवराज करणी मन भरणी करौ, मन मे राखौ जाम
द्रिग भीज्या धक देवपण, धक-धक अमर विलास
प्रेमादेवी . जगत सारौ जोऊ तौ, रुदण कर रोऊ तौ
कोई सुणै नाय, हा ! हा ! कोई सुणै नाय
पड़दौ पड़ै ।

देखाव - ७

स्थान—कुरजण री हवली री छात। कुरजण पिलग माथै सूनी। सहेल्या ओल्-दोल् जाजम माथै सूती। दोनू देवता अर प्रेमादवी पिलग रै चारू कानी निरत करै। पडदै पाछै सू धुन चालै।

धुन थिरक-थिरक चल रिमझिम पग धर
छिण-छिण, पल-पल, मधुर निरत कर
मत कर अचपळ, आचळ मत धर
प्रेमादेवी अमरपुरी आनद घट, चिंतामणि घट माय
मन प्यासौ मन पी रह्यौ, अगति तनिक नी नाय
धुन धुन निरमळ जळ री गत वळ-वळ
रति चित चचळ, मुख मति मगळ
अधर सुजळ थळ, पर रति सुन्दर
प्रेमादेवी रतिपति परगत अलपती, स्नेही चतुर सुजाण
भरम भूल बस बिसरग्या, नर देवत रौ भाण
धुन थिरक थिरक चल, रिमझिम पग धर

इण निरत म प्रथम देवता री लालमा-रली निजर कुरजण रै पिलग माथै पिलर्ल अर प्रमा प्रथम देवता कानी जाचक तणी निजर लिया नाचै। दूजौ देवता प्रेमा कानी विमाद सू जोवै। धीमै-धीमै कुरजण जागै नै उणरी निजर दूजा देवता माथै जमै। पडदो पड्या पैला चारू जणा आप आपरै प्रेम पात्र माथै लालसा भरी निजर जमावै। निरत लगो-लग धीमौ अर गत मदी व्हैती जावै। पडदै पाछै सू।

समझ रे जग जीवण रौ मोल, जगत मे सुख-दुख सरखौ तोल
हिवडै कसक कामना तिरसी, पग-पग पीड विजोग
पण इण जग जीवण अणमोली, मिनखजूण सजोग

निरत री गत धीमी पडै, जिण रै सजोग सार्थै पडदौ पडै। धुन चालती रैवै अर धीमै मधुरै सुर सू सपूरण व्है।

राखडली

गीत - नाटिका

१

आगीवाण   जागी धींवड नवैं हिंद री, नव जुग री परभात है
  जो घर इण री मारग रूधैं, उठै अधारी रात है
कोरस   जो घर इणरी मारग रूधैं, उठै अधारी रात है
आगीवाण   जुगा-जुगा सू सूती सगरया, घूमी सुणता जाग गई
  जुगा जुगा री लदी गुलामी, जाग हुई के भाग गई
  पीढया सू पिछडथोडी मरवण, आज डबल पर दौडै है
  भूल गई पडपच पुराणा, काज मुलक रै लाग गई
कोरस   खेत मील मे, रण सेता मे, आ हाजर दिन रात है
  जो घर इणरी मारग रूधैं, उठै अधारी रात है
आगीवाण   इण जुग री बैनड री राखी, कवच बणैली वीरा री
  बीत्या दिन जद घर-घर राखा, बारा चढती हीरा री
  भम्तर ले भारत री बेटी, आज मारचै चढ चाली
  अब इण रै मन हिचक नही, तोपा तरवारा तीरा री
कोरस   धडदै नै अठगाव तणी, अब सीरालीर कनात है
  जागी धीवड नवैं हिन्द री, नव जुग री परभात है
आगीवाण   जद राखी ही नैन वैण री, भीडा वीर बुलावण री
  आज कवळ री बणी मूदडी, सागै रण चढ जावण री
  अब सून्यां बीजळिया बणगी, बधणा तोडया, गीग गई
  जगो मिठै मो जीवण री, हाप मगै मो गावण री

कोरस आज कामणी रै मुख पर बदूक बमा री बात है
जो घर इणरौ मारग रूधै उठै अधारी रात है
आगीवाण आ धरती माता री बेटी अब किण सू इ मुडै नही
धरती पर पग रोप खडी है बजर पडया इ गुडै नही
आज मुलक री सीव रखाळण सागै चढी जवाना रै
इणरी नीव पताळा पूगी किणी जोर सू धुडै नही
कोरस हाथा म बदूक पावडौ नस्तर कलम दवात है
जो घर इणरौ मारग रूधै उठै अधारी रात है
आगीवाण साथ खडी राखी बाधैली सूधै हाथ जवाना रै
सस्तर घडता मिस्तरिया रै हळ खडता हळवाना रै
मोटर रेल हवाई ज्हाजा घडता खडता हाथा रै
भीड पडी तेडया पैनी मदत चढया मिजमाना रै
कोरस नवै हिंद रै नव जीवण म अेक भारता जात है
जो घर इण रौ मारग रूधै उठै अधारी रात है

२

भारत री बेटी मुलक रै भेंट चढया म्हारा भाई बधावै कुण राखडली
म्हारा रखडीबध वीरा दादा नै जाफर भाई
दोनू ज्हार कहग्या सला पर देह चढाई
सागै ई सागै हुयग्या जूझार दोनू भाई
बधावै कुण राखडली [रोवण लागै]
भारत माता लाडसर बेटी आखौ हिंदुस्तान थारौ भाई बधावै थारी राखडली
सिणगार बेटी सगळौ मुलक थारौ भाई बधावै थारी राखडली
थारा जवान वीरा, हाथा सिर धरिया जागै
कोरस हाथा सिर धरिया जागै
भारत माता जम ई चढ जाय तौ हथियार सभाळै साम्हा भागै
कोरस हथियार सभाळै साम्हा भागै
भारत माता पाहरै कछ नेफा लद्दाखा कस्मीर थारा भाई
बधावै थारी राखडली
कोरस बधावै थारी राखडली
भारत माता कळ पर मैणत सू कारीगर सस्त्र बणाव
कोरस कारीगर सस्त्र बणावै
भारत माता मरदी विरखा तावडियै करसा खेता हळ बावै
कोरस करसा खेता हळ बावै

भारत माता मोटर नै रेला, ट्रेक्टर खडै है थारा भाई, वधावै थारी राखडली
कोरस वधावै थारी राखडली
भारत माता वीरा जवान री रैंफल री नाळा बधसी राखी
कोरस रैंफल री नाळा बधसी राखी
भारत माता ट्रेक्टर हळ कळ रा हैंडल बारा पर बधसी राखी
कोरस हैंडल बारा पर बधसी राखी
भारत माता मुलक रै हाथा री करार थारौ भाई, वधावै थारी राखडली
कोरस वधावै थारी राखडली
भारत माता म्हारै सीवाडै पर चढ जाय उणरी चटणी करदै
कोरस चढ जाय उण री चटणी करदै
भारत माता रण रा कोठारां मे अन, पैरण नै हथियार भरदै
कोरस पैरण नै हथियार भरदै
भारत माता आभै जळ थळ मे लादै ले जावै थारा भाई, वधावै थारी राखडली
कोरस वधावै थारी राखडली
भारत री बेटी म्हारा जूझार वीरा, अेक रा अपार करग्या
कोरस अेक रा अपार करग्या
भारत री बेटी हिम्मत हाथा रै बळ सू मा रा भडार भरग्या
कोरस मा रा भडार भरग्या
भारत री बेटी जठी नै जावू हजार हजार म्हारा भाई, वधावै मारा राखडली
सारा लाडेसर वैणा, आखौ हिंदुस्तान थारौ भाई, बधावै मारा राखडली

३

कोरस नेफा लद्दाखा कछ करमीर वगारै सीवाडै पर
हाजर हुसियार खड्या छै, भारत माता रा लाडेसर
भारत री बेटी आधी पर उडती आई, सागै राखडली लाई
वीरा हिंदी फोज जवान र, भारत रै भुज वळवान र
कोरस . हिंदी फोज जवान रे, भारत रै भुज वळवान रे
म्हारी राखडली वीरा, हिवडै रै तारा पोई
वीरा जवाना रै मन भुजवळ री जैंकारा पोई
भारत री बेटी बादळ पर चढती आई, हिवडा री हरख-वधाई
वीरा जनता रै अभिमान रे, जुग जोवन रै दिनमान रे
कोरस जनता रै अभिमान रे, जुग जोवन रै दिनमान रे
म्हारी राखडी मे वीरा, जन हिवडा री धडक भरी छै
जुग-जुग सिर दीन्हा, वा जूझारा हाळी कडक भरी छै

भारत री बेटी पळकै री पूठ झुकाई, बीजळिया रात जमाई
वीरा, मझ खेता मैदान रे, इण काठै हिन्दुस्तान रै
कोरस मझ खेता मैदान रे, इण काठै हिंदुस्तान रै
म्हारी रखडी म वीरा, जुग-जोवन री राग नवी छै
नेह पुराणो वीरा, गीत नवौ छै राग नवी छै
भारत री बेटी उडदी वदूक सभाई, हेमाळै हाथ लगाई
वीरा चढी मोरचै आन रे, आ छेद करै असमान रै
कोरस चढी मोरचै आन रे, आ छेद करै असमान रै
म्हारी रखडी म वीरा सौ पीढी रा नेह निचोया
बाध बधावै उण रै तन मन रा मैं मैल धोया
भारत री बेटी सजीवण करनै लाई, आसीसा सदा सवाई
वीरा, भारत रै वरदान रे, इण हिंदी फौज जवान रै
कोरस भारत रै वरदान रे, इण हिंदी फौज जवान रै

जूझार-घुडलौ

निरत - गीत - रूपक

१

पैली छोरी म्हारा दा बीरा कछ म लड़ै, नफा मे भरतार
आठवी छोरी म्हारौ मगौ भाणजौ लागजू, जीजौ समदा पार
कोरस बाई अे, हिंदुस्तानी मीव पर गगा उतरण पार
बाई अे, गगा उतरण पार
बाई अे जूझण मॅग उतावळा, माथा दवण त्यार
दूजी छोरी म्हारौ माईनौ मस्तर घडै, जेठ हवाईज्हाज
सातवी छोरी म्हारौ अेक भतीजौ मिस्तरी, दूजौ तीरदाज
कोरस बाई अे जळ थळ आभै हिंद रा मगर सैर नै बाज
बाई अे मगर सैर नै बाज
बाई अे अन धन मस्तर मोकळा, इण जनना रै राज
तीजी छोरी म्हारा बाबोजी चोमूठ म, मागतर बगाल
छठी छोरी म्हारौ देवरियौ आभै उडै समद रखाळै लाल
कोरस बाई अे, कण-कण नै रखवाळना, मण मण रगत उछाळ
बाई अे मण मण रगत उछाळ
बाई अे घूसौ मुणना ढावलै, कुण माई रौ लाल
चोथी छोरी म्हारी बडी जिठाणी डाक्टर, छोटी नरस दयाल
पांचवी छोरी म्हारी नणदल नै दौ छोरिया, अैसी जातां न्याल
कोरस बाई अे परै ऊगज्या सूरमा, घर नारयां जैमाळ
बाई अे घर नारयां जैमाळ

बाई अे आ चढ आवै गाँव पर, कट जागी बगाळ
मारी म्हारौ सँग सामरौ मेत म, अन बीजै हूळ बाय
म्हारै पीयर जो पेटो चढै, कारीगर बण जाय
बाई अे, नगर हाट नै चोवटै, कणक कनक री धाय
बाई अे, अन-धन रा ढिगला किया, देसी मुलक धपाय

२

रण खेत म चीणा नै पाकिस्तानी

चीणा हटजा रे हटजा हिंदुस्तानी, चीण लिखै है नवी कहाणी
भाई किण रा, बात पुराणी पनसीळ रौ उतरघो पाणो
हेमाळै पर राज चीण रौ, आज चीण मे नवी जवानी
हटजा रे हटजा हिंदुस्तानी
पाकिस्तानी पटजा रे पटजा हिंदुस्तानी, बम दे दे कस्मीरी घाटी
असम-बंगालै नदिया पाटी, पार पकाई, चीणा लाटी
पूठ छुरी धर नै धमकावै, सकट बधता पाकिस्तानी
पटजा रे पटजा हिंदुस्तानी
घुडलो घणो अेकलो हिंदुस्तानी, सौ चीणा सौ पाकिस्तानी
कोरस सौ चीणा सौ पाकिस्तानी, घणो अेकलो हिंदुस्तानी
घुडलो रगत चाहिजै, लिरम बुझाणी, जद चीणा तरवारा ताणी
पूठ छुरी धर नै धमकावै, पास पडोसी पाकिस्तानी
सौ चीणा सौ पाकिस्तानी, घणो अेकलो हिंदुस्तानी
कोरस सौ चीणा सौ पाकिस्तानी, घणो अेकलो हिंदुस्तानी
लडाई हुवै चीणा नै मार अर पाकिस्तानिया नै भगाय घायल घुडलो प्राण देवै ।

३

भारत री वेटी हे सोरा पधारो जन रा देवता
कोरस . थें तौ मोरा पधारो घुडला वीर, धायल थारी धिन हुई
भारत री वेटी . हे जद थारो वळ-वळ आडो आवियो
कोरस औ तौ अजू ई ऊभो छै जवान, मा वैणा इणरै सागै चढी
भारत री वेटी . हे भारत मा री सगळी वेटिया
कोरस . अै तौ निसग रमै थारी छाव, पोरौ रे थारी फौज रौ
भारत री वेटी हे काकड सीवाडै पोरौ आपरौ

कोरस ओ तौ समद रुखाळै थारौ मीर, आकासा फरजन आपरा
भारत री बेटी हे आज धीवड सागै नीसरी
कोरस आ तौ सागै सागै लडैली मैदान, डरैली नही काळ सू
भारत री बेटी हे सोरा पधारौ मन रा बापजी
कोरस • थें तौ सोरा पधारौ तन रा वीर, थें तौ सोरा पधारौ घुडला वीर
जवानी थारी अमर रेवै

४

कोरस [गूजरी]

अबकी नेफा मे मनामा नै लद्दाख म रम लेसा गिणगोर
घूमरदार गवरी, हे सरगम-सार भवरी, जठै जूझै है जवान
जन री आस री
जठै सीवाडौ सभाळै, जठै हेमाळौ रुखाळै है जवान
हिम्मतदार गवरी, हे मोटियार भवरी, जठै अेक भारती गाळै
गरब पचास री
जठै चीणा चढ-चढ आवै, जठै भीड पडया धमकावै पाकिस्तान
हे तरवार गवरी, हे भारत प्यार भवरी, वानै देवै है जवान
मारग नाम री
हालौ हसती-हमती हाला, रिमझिम करती घूमर घाला सज सिणगार
जोबनदार गवरी, हे नैणकटार भवरी, जठै रणबको निसाण
हरख हुलास री
प्रीतम प्यारा नै रीझावा, देवर-जेठा सू मिळ आवा साथौसाथ
दावैदार गवरी, हे रस री खाण भवरी, जठै सांईना जूझै[1]
है उठै सासरी
हालौ वीरा नै विडदावा, राख्या बाधा, तिलक लगावा, मगळ गाय
दूधाधार गवरी, हे निरमळ प्यार भवरी, जठै फौज पडी उण काठै
पीहर पास री
हालौ छम छम करती हाला, हालौ घुडलै रा जस गाला, मनरी मौज
गगाधार गवरी, हे ब्रह्माधार भवरी, जठै छिटक च्यानणौ नेहरू रै
विसवास री

---

१ जठै रग-राजा पाटै

५

गायक धरती री गरब-गुमान
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक भारत री भुज बळवान
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक औ हियडो हिंदुस्तान रो
सिणगार जवाहरलाल रो औ हिंदी फौज जवान रो
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक औ निरभै लड़ै मैदान
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक दुसमण री गाबड नाप
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक चड वाळा जासी धाप
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक अकसाई चीण नै नागजू कस्मीर बंगाली सीव पर
दळ-बळ सूं डेरा थाप
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक जै हिंद जवानी आप
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक औ जाहर जग जहान
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक सुख जीवण री वरदान
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै
गायक भीड़ू जनता री भीड़ में, सिर पेच मुलक री पाग रो
औ हिंदी फौज जवान
कोरस घुडलो हाजर छै जी हाजर छै

धरती पुरसारथ

निरत गीत १

धरती   काग कागरै ऊभी जावू पुरसारथ री वाट रे
घर सावण रौ पथ करै जद आख्या खोलू पाट रे
आड राखिया अटक रैवैला अकल हुनर री आस रे
पथ बिना पाणी कर पूगै पार थळी रै पास रे
भीत धुडै जद भेळप पनपै नैडा रह्या निवास रे
जन रै मन म जाय वसै तौ जीवण मिळै उजास रे
धन बल्लै ।

पुरसारथ   धरती जागी भुजा करार
कोरस   पथ पाडता कितरी वार
धरती   धम धम धम जुग रा पग वाजै
अजण घुरै मसीना गाजै
कोरस   मसीना गाजै
पुरसारथ   जोड भुजा महकारा त्यार
कोरस   पथ पाडता कितरी वार
धरती   साथ मजूरी मै फळ साजै
जण मैणत दुख दाळद दाजै
कोरस   दाळद दाजै
पुरसारथ   कळ नळ अजण वधै करार
कोरस   पथ पाडता कितरी वार

निरत - गीत २

पुरसारथ साथ सभळ, पुरसारथ फळ भई
कोरस आगै हल भई, आगै हल भई
धरती जमी खोद नै बाठ उथेल
कूट काकरी डवर ठेल
कोरस डवर ठेल
धरती कळ अजण ज्यू बैठै मळ, माटी मसळ, पसीनो भेळ
कोरस पसीनो भेळ
पुरसारथ धमक मोगरा, मोड करा वळ
इतरा मिनख, इत्तो सो थळ भई
कोरस आगै हल भई, आगै हल भई
धरती जळ री हालै रेलमपैल
सुथरी सडक अगाडी रेल
कोरस अगाडी रेल
धरती दुख दाळद नै दूर धकेल
हथ मैणत सू मोड नवेल
कोरस मोड नवेल
पुरसारथ : बाध सुरग पुळ, सुथरा कर सळ
बुलडोजर सू बाठ उथल भई
कोरस आगै हल भई, आगै हल भई

निरत - गीत ३

पुरसारथ बधणा नै तोडो, जुग रा जूआरा दौडो-दौडो
धरती बधणा नै तोडो, जुग री जन-सगत्या दौडो-दौडो
धरती-लुगाया हाथ सरीखा नर नै नारी
पुरसारथ लोक कोड भुजा वळ नै काई भारी
कोरस जो रीता जन रा पग बाधै, वारी नाड मरोडो
बधणा नै तोडो
धरती-लुगाया जनवळ जागै घडी घडी मे
पुरसारथ-लोक बधै बीजळी कद गुदडी मे
कोरस धरण जागगी, हथबळ हूळस्यो, जूझै जन जाग्योडो
बधणा नै तोडो

धरती-नुगाया   धडक धडक भव री हिय धडकै
पुरसारथ-लाव   जुग-पुरसारथ रा भुज फडकै
कोरस   गेंद बणा धरती सू रमलै जीवण ज्वार चढघोडौ
  बधणा नै तोडौ
धरती लुगाया   हुकमत घर री जुग गत मायँ
पुरसारथ-लोग   कळा मोकळी धरती हाथै
कोरस   ममद रोक दै, कोड जणा री साथै चरण वध्याडौ
  बधणा नै तोडौ

जुग-जाझरको

निरत - गीत

देखाव १

गांव रै गरणव री थान आगै छोरियां नाचै।

कोरस   पुरभाग्य रो दिन ऊगो, नर नारी वगा पूगो
जन जुग जांझरको जायो, जुग जाग्यो सोर जगायो
तन साजी भरी जवानी, मद रेहगी घर में छांनी
अडधग्या मन अगमानी, तन जागी भुजा भवानी
कुण रोर करै इदकागी, पग नाचै सोर बधायो
पो फाटी आग उघाडो, पल में परमाद पछाडो
अणवण री जडा उखाडो, कर समता में सगाडो
सुध-बुध रो सूरज चमकै, दो हाथां दळद दगायो
खेतां रा टुकडा जोडै, वाडां रा बधणा तोडै
आळस री नाड मरोडै, मैं सोर बध्यो मैंजोडै
जुग-जीवण पथ सवारै, करनारै नै बदळायो
जन लड-भिड ली आजादी, जद पच पौंचग्या गादी
अणवण रै आग लगादी, तारां पर निजर जमादी
अै जुग भेळप रा वाहेला, कळ गू कळ किंयो सवायो

देखाव २

भूटको । पड़दो पलटै । ऊगतै सूरज री उजास अेक बाजू सू खिलतौ दीसै। गीत पलटै । दोनू बाजू सू छोरा नाचता आवै । दोनू मडल निरत करै ।

ोरस जुग री झणक बाजी, जद लोक भुजा राम जागै
जन री समझ साजी, जद क्रोड मिनख काम लागै
धडक धडक धूजै धरण, अन धन भडार भरण
भेळप रौ सवळौ सरण, क्रोड चरण धरण आगै
पुरसारथ अेक साथ, उलडै अणगिणत हाथ, उलडै अणगिणत हाथ
तन री तडफ ताजी, जद जीवण परमाद त्यागै
जागै जीवण जवान, मैणत रौ करै मान, मैणत रौ करै मान
काम करण राजी, जद जीवण सिणगार सागै
नदिया रा जळ बधाय, जळ म् बिजळी कढाय, जळ सू बिजळी कढाय
कळ री धमक गाजी, जद अन धन री भीड भागै
जगळ सू थळ सभाय, थळ सू कचन कमाय, थळ सू कचन कमाय
हळ री हलण जाझी, जद जन रा दुख दळद दागै

देखाव ३

भूटको । पड़दो पलटै । सूरज री आधो चक्कर फिरतो चमकतो दीसै
थू जुग रौ झालौ भाळ, माटी जन रै आगै हाल रे
थू बगल जोडी घाल गोरी, साजन सागै हाल अे
बखण नही, रात गई, आज रही बात रे
धरण नवी, नार सवी, ऊगतौ परभात अे, ऊगतौ परभात अे
धरण घणी, लोक घणी, नै करारा हाथ रे
राग सुणी, जाग वणी, क्रोड मिनख साथ अे
थू उपरली चढ डाळ माटी, मन रौ मारग ढाळ रे
थू हसती पथ उजाळ गोरी, हाथा सू हीरा उछाळ अे
आप गुणी, भीत चुणी, पथ रै साम्ही पाळ रे
टूट तणी, आड बणी, मैम बरम माळ अे
थू समद नै थाल माटी, डूगर रौ दळ गाळ रे
थू गरम-गरम ढाळ गोरी, गरम रगत लाल अे
लोर कैयी, वात हुई, काल नही आज रे
साथ रैयी, जोड केई, सार रहण साज अे

थू जुग रो मारग झाल माटी, मैणत मे मन घाल रे
थू सुख रो साथ सभाळ गोरी, जन रै मन री ढाल अे

देखाव ४

भूटको। सूरज ऊगण लागै। होलै होलै सूरज रो
चमकतो पिरतो चक्कर परगटै। दोवडो लूहर-निरत।

छोरिया *बाई अे सूरज ऊग्यो सोवणो, जाग्यो म्हारो वत*
बाई अे ओ जाग्या जग जागसी, रहसी सदा वसत
छोरा साथी, आख खुली घर-नार री, मैचन्नण समार
साथी, मोटयारी मैणत करै, पुणचै-पुणचै भार
छोरिया *बाई अे सायणिया सुध साभळी, साईना रै सग*
बाई अे अडधग्या साथै चढी, अब जीवण मे रग
छोरा साथी घर धणियाणी जागता, अळगो हुयग्यो भार
साथी मुरग कियो ससार नै, सुध साभी घर नार
छोरिया *बाई अे साजन गोरो नीसरै, लिया करारा हाथ*
बाई अे अनधन उरजै सौ गुणो, सुधरै सगळो साथ

रिमझिम

निरत - गीत

ऐक ऊंचै महल रै साम्ही ऐक झूपडी। महल सू झाझर री झणकार हुवै। झूपडी मू करमै री लुगाई आपरै घर धणी रै मार्ग बारै निकलै अर कामै रा झाझरिया लावण री बात कैवै।

लुगाई रिमझिम रिमझिम बाजै वाल्हा मेहला मे हमार रे
कासै रा ई लादै म्हारै झाझरिया भरतार
मरद रिमझिम रिमझिम बरसै गोरी, निरखा दूधाधार अे
रूपै रा ला देस्यू प्यारी निसरण दे दिन चार
लुगाई झमतिम-झमतिम मत कर मौजी, हमारू पधार रे
उधारा मिळ जासी, जबरी पाकी है जवार
मरद दिन-दिन नैडी नार म्हारै, हिवडै हदो हार रे
तिरिया हठ सू बावळी मन देवैलो धिरकार
लुगाई दिवसी थारै हाथ साजन, हालण गोरी त्यार रे
नारी रो सुभाव प्यारा जोबन रो सिणगार
मरद सोनो रूपो देस मांगै, देणो है उधार अे
जिण सू सुख रा सज घडैला जनता री सिरकार
लुगाई साचाणी हो जासी बाई बाध आपणी त्यार रे
पैरघोडा ई देयू साजन जद मांगै सिरकार
मरद पावघा मैं दे देस्या, पेरघा रैवाई हमार रे
फेर मांगवा आसी, कुण री लावाला जवार
लुगाई थोडा दिन रो काम साजन, थोडा दिन रो भार रे
मैणत फळता मैं'स मोनगो झूपा नै सिरदार

मरद दरपण मे झाकै तौ दीसै अजब फूठरी नार अे
म्हारी कचन कामणी रै फूल निरा सिणगार
लुगाई मुखडौ थारै दो नैणा मे नित देखू भरतार रे
जन कारज मे आगै म्हारौ आलीजौ मिणगार
म्हारौ अलबेलौ सिरदार

कावतरौ

निरत - नाटिका

गायक जळ भूखी धरती पर वरता, बिरखा धिरकारा री
आ नवी जोड मिनखा री चारैं, नवी जोड नारा री
सगळा थारी दाय पडै तौ बोलजौ, इमरत मे विख मत घाळजौ
सगळा री सीरौ सड जासी, लण खाड मत ओळजौ
गायक खेत पडयौ धरती रण बोल्यौ, म्हनै मती धिरकारौ
सब समझ पुरसारथ भूल्यौ, चूक मानग्या थारौ
सगळा थारी ताव पडै तौ बोलजौ, बोलौ तौ जीवण तोलजौ
इण धरती मे रतन गडया है, कळ सू ताळौ खोलजौ
गायक नवी नार परण्यै री प्यारी, नाक चढाया वाली
आ धरती असमान गुवाई, बिरखा हालै होळी
सगळा थारी समझ गमै नी बोलजौ, मत कोरा वादा छोलजौ
घर खाडया नै गाव मुलक रा, हेत हुनर धन मोलजौ
गायक बिडती छाट अगाडी बोनी, सुणो नार नखराळी
अदधग्या, अधरग्या टूपणी, जिण सू धरती काळी
सगळा थारी सरधा व्है तौ बोलजौ, घर पूछ्योडा मन डाळजौ
बामण सू करमण वण मगन्यां, भूख निरस रगदाळजौ
गायक कुणमुण करती बामण बोली, करमण राज रुळावै
अनधन सूपौ, साधन सूपा, हामन वधनी जावै
सगळा थारी पीड पडै ज्यू बोलजौ, मत कोरी वाळम घोळजौ
बिरद इमरत भंडार भरी रसना रौ रस मन गाळजौ

गायक   कामण री कावतरो सुणता वोल पड्यो चपडासी
घर री राज, रकम सूं घर री, काम किया वध जासी
सगळा   थारा हाथ हिलैं तौ वोलजो, अण नाथ्याडी मत डोलजो
पग हेटैं जुग पथ पड्यो, मन डांडी मत टटाळजो
गायक   अडधग्या करमण हुय जागी, हाळी सू हठ माडी
सेंजाडैं चढसी मोटियारी नवी करण पग डाडी
सगळा   थारी पोहच पडै तौ वालजो, पडपच मती पपाळजो
जन मारग मे अटक करै वै, भाटा वाठ उखोलजो

जाझरको

निरत - गीत

गायक जाझरकौ हुयग्यौ हाळी जाग रे
तातौ कलेवौ लिया, धण खड़ी
बेरया नीरण नै वेगौ लाग रे
हळ नै हळवाणी, रासा जो परी

आध निसरयौ सावण सूखौ रे
जळ मार धरती-कण भूखौ रे
बिरखा आया सू जागै भाग रे
मोती बिखरैला हळ रै ऊमरै

गूड किया मग्ररौ जळ लेसी रे
धान खडाई री फळ देसी रे
मंगन मतवाळी गाता राग रे
दानू परभातै पैली रण चढौ
धुन बदलै ।

मरद जांझरकौ दळ चान्दौ गायो
कुण सूतौ छै नींद मे, कुण सूतौ छै नींद मे
सुगाया ' निरट निशाणी रो घर वाळो
वो सूतौ छै नींद मे, वो सूतौ छै नींद मे

खातर तिकडम करै पण भूल-चूक सूं ई उणनै कोई अंडौ मिनख नीं मिळचौ जकौ अकल वधावण री चावना राखै। हर कोई समझवान बिचै धनवान वणण सारू ताखडा तोडै। अपारै समाज धनवती सगळै पूजवाण पण समझवान री कठै ई पूछ कोनी—औ कैडौ विवेक अर आ कैडी व्यवस्था। समझ री परख फगत धन-सपत रै परवाण। पण उस्ताद री कविता मे तौ उस्ताद रौ विवेक हौ। उस्ताद री व्यवस्था ही। ठौड-ठौड उणरी कविता मे धनवती धाडेतिया सू ई माडा अर धन री जोरावरी सवसू माडी जोरावरी। इणरौ अतकाळ अखरै। सुयरी समझ री उजास उणरै आखरा-आखरा जगमगै। माया सपत सारू तौ वौ पूरौ सतोखी हौ पण समझ रै वधापा खातर उणनै कदै ई सतोख नीं व्हियौ। उणरी तौ घडी-घडी आ इज भुळावण ही के भई सोच समझनै हालौ। जगत मे सार चीज फगत समझ है। सुध-बुध रौ सूरज ई सवसू सातरौ सूरज है।

समझ अर अकल रौ अस्टपौर ढोल घुरावणिया उस्ताद री निजर मे मिनखादेह री मैंणत अर हाथ रै हुनर रौ मोल ई कम नी हौ। मिनख रौ परसेवौ ई उणरी दीठ सार्चेला मोती हा। लिछमी नै प्यारौ फगत पुरसारथ। हाथ विना आखी दुनिया री चाळचोळ मे आवगी हडताळ ई पड जावै। मिनख री मरजाद फगत मैंणत अर मैंणत। जकौ ई दो हाथा री मजूरी खावै वौ निकमा सू नित मोटौ। दा हाथा री मजूरी ई सवसू सिरै रतन अर हेमाणी है। उस्ताद रै सवद कोस मे कामधेण रौ अरथ ई मिनख री मजूरी हौ। रत आयोडी रेत नै फगत पुरसारथ ई वाल्हो व्है—उस्ताद री फगत आ इज अमोलक सीख ही। वीरता री ठौड मैंणत नै बिडदावण वाळौ वौ नवौ चारण हौ। रगत फुहारा री ठौड पसीना रै टपका री महातम समझावणियौ वौ पैलौ गरू हौ।"